क

Title राग रागिणी समुदाय: (इर्ब)

Author

Extent ४८० पत्र Age

Subject संगीतशास्त्र

रा॰ गं॰
८

क विगाने ॥ मिडन करदि वारिवे पैयो नाघउदी

वे मियां रव करेन सिमउ थावो नैयमादे ॥ टपा

केहा जाडचा कीना वेदिलन कदवना जाने व

कदर मियां ॥ वेघननू मसलाक जीमरा इस्क

लगा मन लीना दिलनू ॥ टपा ॥ चलउठकरदी

दन यारा मियां । दीदन यारेदा अमदजोरा मियां॰

अथ राग गंधार टपा परिछेदमाह ताल ॥ ३ ॥
नींडे वेखन दिनां गमेन ॥ वछ्वेषां वारिवे रांझ
नन्न हरों वे मोहणा रवम्हनले साडी चांग ॥ टपा
आयानि सु मालवो रांझन यार किऊ याते न्हयार
हीरनि मानितुकि प्रकदा पीर दिलदि ऊईआ मा
ह ॥ टपा ॥ सयाने वेलियावे हरनया वसदे लो

रा॰गे॰ ट॰

मरवे देखो नेडा मोवरो यों मैडियाने जिंदडी दिवा
नी मैंडा जिंडरे। टपा। जाडुडाक मालको नाये ॥
इस्कल गो मैंडा जीनरमोदाके हाहाल जिवार पर
वी नावे ॥ टपा ॥ कौन गुन भई मोरी आनना मि
लै पिया मोकौं। उन बिन कलन परन पल छिन
के मैं रमा विहाय आन मिलै पिया मोकौं ॥ टपा ॥

वाग वहारे विवे वेषन चलिए क्षे मियां मैडारि
ल परदा वजार मियां ॥ टपा ॥ देखणा दिदार जा
वेदा परावले पराखाले क मियां ॥ खोटा खोसा प
य वोन षोरि मियां सोई गनि मन ईमान षोरादा
टपा ॥ कि जालमा डिवे मियां यो किसदी यारी
दाले विसडडे नाल न जाने नाम न जाने की करदे

रा॰गों॰
लो॰

3

ना विम्राज पीड़ा मरुण मावरे ढोड़े नैन ननेमें भ
रे ॥ राग गंधार ढोना माल ॥३॥ ढोना काम
न करु समझावरे काहू देसना जावरे ॥ जेत्र
मेत्र डार सावोरी रुक्के नीको पीड़ा गार लावरे
राग गंधार लोरी फूलना जुगलखंड नरा
ना सादराजन ढोना समापतम् ॥ शुभम् ॥

दल ग्रह माहा जोधा बली लीए एकते एक बल

आगिक भारी ॥ मेघ पवणी यस्यो हनवादर छ

चिडो हाथ पैरवान लीऐ [illegible] मानी । दोर वज धोर

अब नाद लंका लई सकल सेनाद जैजे पुकारी ।

जतना वदेली यकेली चलो स्याम मध मानी

देनार जा [illegible] पय भय पग आवै मेरा कछु

रा.गो.
लो

लचंद ॥ केवनको दोयम गाउंपे नगाम जउन
वडूरंगा ॥ आनंद भपे नेदजीके उआरे सेरा गेह्द
तियाई मालन ॥ हलकवरने जनम लीयो
है नंद महर घर पालना ॥ राम गंधार जवाल
छन्द तिताला ॥३॥ नेरो घटल रहीलो राज
पियारे महमद शाह पीया जम जम तिन तिन

गगा गेथार लोरी लाल॥ २ ॥ लोरी लालको देहमा
ई कदकी ठेडी ठेडी परवाऊ। ब्बन किन ब्बनका
र गाऊ वजाऊ अगर चंदनका फूला फुलाऊ ॥
लालकौ देहो मषी सम लोरीश्रो ॥ अगर चंद
नका फूला फुलाऊ रेशम दीश्रो वटो डोरीश्रो
फूलना ॥ नवल हंदोर ना माई फूलासी गोक

रा०गे०
लो

[illegible] दानी [illegible] ली याली याला लोम याला
लालाले लोम् यालाले लोम यालाली यालेदि
र लोम लोम् नलाना लोम् ना नाना ना नाना
दिर दिम तना ना दिम [illegible] नाना दानी ॥ राग
गे यार सादरा नालाः ३ ॥ बडो रघुवीर रणधीर गाड
लेकको संग लछमन बडो धनुष धारी ॥ प्रम

नाचत बैठके इन मिल काजा। गाइन गणीश्रो नन
द वहीलवा मभमघी अनमिल करनजबद सदा
रंग मिलगाऊ बजाऊ तान मिहरमदील रेमाज
राग गंधार नराना नालार ॥ दानी उदे नाना दि
रना दीम दिम् त ना ना ना ना ना ना ना ना दीम
दानी नादिर दिर तुम दिर दिर तुम दिर दिर दीम

गा॰ह्र॰
ट॰

भ माकमोदि विन वक्रयो दियो होवे फेलामें ॥
टपा ॥ जिंद मोडियागेंदे नाल लगिवे । ग्रादांवग
ने जदमें पावेगारे लगावा विन डिट्टेंग्रे मेंटपी ॥
टपा ॥ सवि ग्रांवीमेरे प्यारेन्हं रात कियेवे या
रिग्रो । ग्राप छडजादे वारी नाल मंहीं हेमफुड
यकेंदी में हारिग्रो । टपा । कीना वेकरेजा सांवदाप

३४

मार् वला कौं क्रोडि वलावे मजन्‌ इश्क गारेवा

कौं मियां। ईयाविद्‌ यद मनमेपी वाहेफिरया

दस्मे मेपीमियां। टपा। वेदुन वापद वेलावे मला

मियांवे मान्‌ वाके वाद जपावो भोरा कोईवे। श्रो

दामि वाद्‌ माडे यदवे पोरीलगि मह्वम पाक॥

टपा। हेवे कोला मनपरवोरियो। श्रोंघ लडंदि

रा॰ न्ह॰
८॰

पल ऊपकन आपदेरे । टपा । पलक दरे आऊमे
रा साई ।। जो वाहे जग राज कर वोई करम भऊद
रन उसि नाई । टपा ।। भई लीडं वांमरी विन देखे
नेकना सहाय ।। जब ते गमन कीनो विदेश वा भ
वन भावे कछु न हिंद ।। टपा ।। मम मथ मेरे म
गेरे यानि मामरे मानी । पगमें परें परें पराय

४२

रदा गम खोखा। कीपुक्के दे वारी आज य दिलवे क

गबदा रैंते यारियां दे नाल गुजारदा ॥ टपा ॥ नैरि

नयारि आंखें नारवैंगि नैनो खनन कंवरास भोगा ॥ म

तरें म रसवेंग कराई स्मकों दीनी वड्डन विरोगा ॥

टपा ॥ आज नैरन गाजैं आये पियार वा चंर मेरे ॥

प्रेग मेरा रेग लागे प्रवटड रावन गान छिन लावे

5

10

५

म यामेरे सामरे सानी ॥ सारे गामसे सखारे मगमें
याम यामपेप यानी साथ साथ पग धरे सदारंग
मोरी एकन मानी ॥ टपा ॥ पग सयरि साति प
रे सपग धरेरे ॥ री समाथ हो वैगानि साथ सा
थ सानी यापम गरे ॥ इति राग झरव टपा परि
छेदः समाप्तः ॥ शुभं ॥

रा॰ङ्क॰
ट॰

लोक विगाने। मिग्रन कबदि वाविव पैबो नापंउदी
वे मियें रव करेन मिमडे आवो मैयन्नादे॥ टपा।
केस्स जाउउ कोमा वेदिलन कदरना जाने दर
कदर् मियो॥ वेघनन्द खलाक जिमेरा रस्कल
वा मन लीमा दिलन्॥ टपा॥ चल उठ कारदी
दन याय मियो॥ दीदन योवेदा ग्रामदाजांदा मियेः

अथ राग इराषस्य टपा परिच्छेद मारु ताल ॥ ३ ॥

नेडे वेखन दिंता गामेन्त । चढ़वेषो वारिवे राज

नन्न हरौं वे मोरुणारव ह्नले साडी वाग ॥ टपा ॥

आयानिम भालवो वोंरुन यार किडू याने न्त्यार

हीरत्ति मातिन्तकि पुछ्कदा पीर दिलदि ऊई आ

सार ॥ टपा ॥ सयाने वेलियावे हरनया वसदे

रा॰ कृ॰
ट॰

मत्व वेखो नेडा सोवरी यो मैड़ि याने सिंदड़ी दिवा
नी मैंडा जिंडे । टपा । जाड़ डाक मालकी नाये ।
इस्क लगा मैंडा जीनर सोहके हासल जिगर पर
वी नावे । टपा । कौन गत भई मोरी आनना मिलै
पिया मोकों । उन बिन कलन परत पल छिन के
मैं रा विसाय आन मिलै पिया मोकों ॥ टपा ॥

बाग बहारो निवे वेषन वलिप ड्हो मियो मैंडा दिल

पवदा वजार मियो ॥ टपा ॥ देखणा दिदार जावे

दा पवाव ले पर खाले कू मियो ॥ खोटा खारा पय

वोन पोरि मियो तोई मनि मन ईमान खांदा।

टपा ॥ कि जाल माडिवे मियो योकि सदी यारी दा

ले विमडडे नालन जानें नामन जानें की करवे ॥

रा॰ हृ॰

3

बिमाज पीआ सरूप सावरे ठाडो नैननमें भरो ॥
राग हरष टोना नाला ३ ॥ टोना कामन कर स
मजावरे काहु देसना जावरे । जंत्र मंत्र उरा रखवी
री हक्के नीको पीआ गरलावरे ॥ इति राग
हरष लोरी फूलना जगलबंद तराना सादरा
जन टोना समापतम ॥

३

दल ग्रह माहे जोथा वली लीये एकने एकवल श्रा
धिक भारी । सेस्व परनी पस्यो स्हर बादर रूपिदे
हाय पेंवान लीये पवारी । दोरवज श्रौरजवमा
रलेका लई सकल संसार जैजे श्रकारी ।।जन ।।
मवेली श्रकेली वलो स्याम मथ मानी लेगार
जाये । गागार भरभरथर श्रावे मीरा कछूना

रा॰कृ॰

ल है दोर ना माई कृला मी गोकुलचंद । केवन
को दोयम गडाये नगान नडन वडूंरेया । आनंद
भये नंदजीके दुआरे मेरा गंद लियाई मालन ॥
कुमल कवरने जनम लीयो है नंद महर घर पालना
राग रूपक जवाल कुंद नाल । २ ॥ तेरो अटल रही
लो राज पियारे महमद शाह पीया जमजम नि

अथ राग हरष परिछेद माह लोरी नाल ॥ ३
लोरी लालकौ देऊ माई कवकी ठोडी ठाडी प
रवाऊ। कुन कित कुन कार गाऊ वजाऊ अ
गर चंदन का झूला झूलाऊ। लालकौ देहो
सखी सभ लोरीआं। अगर चंदन का झूला झु
लाऊ रेशम दीआं डोरीआं। झूलना। नव

गा॰ऋ॰

दिर दीमनदरदानी। यालाली याली याला लो
म याला लाला ले लोम याला ले लोम यालाली
याले दिर नोम नोम ननाना नोम नाना नानाना
नाना दिर दिम ननाना दिन नान नाना दानी ॥
गगा ऋषभ मादरा नाल। ३। वडोरङ्गवीर रवधीर
गढ़ लंकको मंगलक्रमन वडो धनुषधारी। पम्र

२

तनित नावित वैठके इन मिलकाज। गाइन ग
णीश्रो ननद वहीलवा सभमषी श्रन मिल कर
न जबवमदा रंग मिल गाऊ वजाऊ मान नेहर
महील रोमाज॥ राग हरष नराना नाला३॥दानी
उदे नाना दिरना दीम दिमन नाना नाना नाना ना
ना दीम दानी नादिर दिर नूम दिर दिर नूमदिर

रा॰ह॰
व॰

३

इति राग हरष वनरंग परिच्छेदः समाप्तः ॥

२

सप सुधाइये। सप्त सुरन तिन ग्राम एकईसमु
रछना ग्रामीजन मनमान ज्ञानपाईये। थेय थे
या थेय थेय्या या थिन लांगना थिथि ककु थेथे
थि किटि तन धतन हुं हुं मृड मृदंग मिलाईये।
परन श्रुति श्रुति पथति मन उद्घटित घडाइये। प
द नराना पराक्रम प्रेम रंगरेवट सुनाइये ॥

दरकेपथति ब्रम्हताल ॥ थथथ पप मगरी गमे मग

री मगरीसा मरिमग मरिगमगसा परमा ॥ इमे

तग। अथआभोगः ॥ अमवारी विपरीत। पेवता

ल ॥ पीमध्ये यमहेकार श्रीतज स्वरता क्रमता ॥

गीतताल ॥ डुम डुम चटा डुम डुम चटा थारी गि

र गिर चेग थारी गिर गिर चेग। थमालतारः ॥

अथ राग रुद्र प्रबंध परिछेदमाह ताल संगीत ॥

परमानंदकंदे सिरी रामरे सर विन मधुर विन्म

करंद अनंद समान सम्यक निर्मलका कलशमठ

सगारी चेतन कला नयना चला ॥ इत्यध्याये ॥

अथ सम ताल । अमवारी । श्रीमत करुणा वरस

कलोल कला । पंचमवीताल । सवला सकला

गा॰ स्तं॰
प॰

लसौं गग डंट सौं स्वर ममसौं मान मनाइये ॥ अस

स्थाये ॥ ननन ननम दिर दिर नोम् नदीम ना

दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर नोम्

ननोम उदनदृन कुननें यलल यलल लेलाइ

ये ॥ इत्यंतरा ॥ अथ आभोगः ॥ सानिधपम

गरे सासारेरे गग मम पप धध निनि ससप स

कनन कनन कन भन भेवः यतालः॥कट
केकन ऊणणीधा। दोतालः॥चपक॥स्वनिमे
धा स्नन मेधा। संगीत नाल॥ नन्सन् गुरु रामा
नंद चरण सरण उद्धार परमानंद केदे ॥ इति
नाल प्रबंधः॥ वनरंग नाल॥२॥ वनरंग गाउनग
ण गाउये गाउये रिझाउये रघुनाथकों स्वरनात ना

रा॰म॰

दास रूपकीसी माला प्रेमकीसी माला आज लो न देखी सुनि जैसी आज दीसी है । रागिनी मध माधवी कवित्त माल ।२। चंचल न ह्वै जे नाथ अंचल न खूजे हाथ मोहे नैन मारि काऊं सक नै सखायो जू । मेटकैंरी दीपडु नि चंदमाव देखि यन दोरिकै उराई आंऊं मारनै दिखायो जू ।।

रागिनी मधुमाधवी कवित्त नाल। ३। मृकना

मनिन कौ है मृक श्रौसी नाक दांन दासौं दाम

नो हसनी वनीसी है। मोहनके मेचनके अधरा

न कौसौ रेष भृकुटी सुवेष भाव भेद छवि छी

सी है। विन वनराई उजकीसी उजकेसे अरु

कच सकुचीनी नैन जेसे उजकीसी है॥ केसो

रा॰म॰ है। अब लोनो देषनिंह्री इहो कछु ज्ञनो नही अब

हेनेते देषियत उरउर नयो है। रह्यसि विनत गई

नेने जेच भारी भई कियो याने बाज्ञ भयो महाब

२ दयो है। आंषनको मेरी फाटन सी आवत है

जानत हौं री फल लागि केशो फोकि गयो है॥

रागिनी मधुमाधवी कवित्त नाल।३। सबदे

२

खगराज मराल बाल बाहिरै बिडारि देऊं भावतो
नहै केशव सु मोहू मन भायोजू । कलकेन
वास श्रैसे बचन बिलास सुनि सैरणो सुरनिहूं
ने स्याम सुवे पायोजू ॥ रागिनी मधमाधवी
कवित ताल ।३। इत उत चाहि देष्यो जब कोऊ
फिरनाहि वारवार जिय कहो हिये कहाभयो

रा॰म॰

कहौ यों रसिक नए यामैं कौन रस है ॥ रागिनी म
धुमाधवी कवित माला ३। प्रथम सकल सुचि
मज्जन अमल बास जावक सुदेस केस पास को
सुधारिबौ । अंगराग भूषण विविध मुखबास
राग कज्जल कलित लोल लोचन निहारिबौ ।
बोलनि हसनि मृदु चातुरी चलनि चारु पल पल

मत्वीन बीच दैकै सौंहैं षाय कै षवाय कछू खा
इबर कीनी बस बसै है। कोमल म्रनालिका सी
मल्लिका की मालिका सी बालिका ज्ञ डारी सौ डि
मानस कि पम्हहै। जानै को बिभान भयो केश
व म्हैनै को बान दैषो प्रानि गान भयो कियौं स्र
म्है है। बिवसी ज्ञराषी यह बिवनी बिबिवगति

रा॰म॰

यि विचारहैहै। छूटिजाति लाजजहां भूषन सदै
म केस छूटिजात हार सब मिटत सिंगारहैहै ॥
कुजि कुजि उठैं रति कुजि नति सवन घरा सोईसौ
सवनि सषि औरु विवहारहैहै ॥ रागिनी मधुमा
धवी कविन नाल ३। मान कौसो मान सव ब
ल वल वीर कौसो मान कौसो स्वावमसो मोहि

प्रति पति बन प्रति पारिबौ । केसोदास सविलास

करहु ऊपरि राधे इहि विधि सोरह सिंगारनि सिं

गारिबौ । मालिनी मधुमाधवी कवित नाल ।२।

केसोदास सविलास मंद हास जुत अवलोकनि

अलापनि कौं आनंदु अपार है । बहिरति सात अ

रु अंतरति सात प्रति रति विपरीतिनि कौं विवि

रा.म. देषी है गुपाल एक गोपिका अनूप रूप सोने तें सलो
नी वारह सें येते सवाई है । सोभाई सुभाई अवतार
लीनो घनस्याम किधौं यह दामिनी यौं कामनी
कै आई है । देवी कोई दानवीन मानवीन होय पै
सी मानवीन हाइ भाइ भारती भफाई है । केसो
दास सब सुष साधन की सिद्ध यह मेरे जाने मैन

5

५१

मन भायो है । थल सौ अचल सील अनल सेव
लचित जल से अमल तेज तेज कौ सौ गायो है ।
केसोदास बसन अकास के प्रकास जोष बराबर
घट घट छेह छवनौ छायो है । रति कौ सौ रति ना
थ रूप रति नाथ कौ सौ कह्यौ केसोराइ कूट कौन
पहिपायो है ॥ रागिनी मधुमाधवी कवित ॥ २

रा॰म॰ बना बषानी है। ऐसी बानि कौन जन मोनी मनि

मेरी रानी उनके तोतेरी बानी वेदकौसी बानी है॰

रागिनी मधुमाधवी कवित ताल ॥ २ ॥ कैधौ

गहकाज कैधौ कूल्यान सषा समाज कैधौ क

छू प्राज बनवासर विभानतें। दीनोतें नसोय

किधौ काहूसो भयो विरोध उपज्यो प्रबोध कि

6

ह्री सी मैनकाकी जाईहै । रागनी मधुमाधवी

कवित ताल । २ । बोलीको सो पान नाहि करत

सेवारिवोई दर्पन ज्यों नोही मोऊ म्हरनी ममनी

है । तेरे मनोरथ भगीरथ रथ पीछे पीछे डोलत

गुपाल मेरो गंगा कोसो पानी है । तेही निय देव

नोपे पायो पति केशोराय पनिनी बढ़ुन पति दे

रा॰म॰

वेगको। केशोदास नामैं डरी दीपको सिषासौं दो
री डुगावनि नील वास्ह इनि षेग षेगको। पौनपा
नि पंछी पसू वासमैं मवद सुनिजित नित चौकि
चाहै चोथ सेगको। नंदलाल श्याम विलोकें ऊ
ज जाल वाल लीनी गनि नहि काल पिंजर पनेग
की॥ इति रागिनी मधुमाधवी कवित समाप्तम्

45

यौ उर अवदानतैं । हावभैन देह किधौं मोहसो
कपट नेह किधौं देषि मेह अति डरे अधिरानतैं ।
किधौं मेरी प्रीतकी पतीत लेत केशौराय अजहू
न आयमन ह्यौं कौन बानतैं । रागिनी मधु ।
माधवी कवित नाल ।३। चंदन विटप बहुको
मल विमल दल ललित वलित लता लपटील

रा॰म॰
वं

दरकेंपधनि॥ अलनाल। धध पप मगरी रामेम
गरी मगरीसा सरिमग सरिगमसा परमा। इंप
नत। अथआभोगः। अमवारी विपरीत। पंचता
ल। धीमधं रसरंकार धीनज सरना क्रमता॥
गीननाल॥ डम डम घटा डमडम घटाघारी
गिर गिर वंगाघारी गिर गिर वंग॥ यमालनादः॥

म

अथ रागमध्य प्रबंध परिछेदमाह तालसंगीत ॥
परमानंद कंदे सिरी रामैर स्वरचित मधुर चिनकरे
ट अनंदमयान सम्यक निर्मलंका कलश मठ स
गरी चेतन कला नयना वला ॥ इतिप्रस्थाये ॥
अथ समताल ॥ अमवारी ॥ श्रीमन कल्ल वरस
कलोल कला ॥ पंचम खोताल ॥ सवला सकला

रा॰ म॰
वं॰

सैं गग ऊंटसैं खर ममसैं मान मनाइये ॥ इत्य
स्याये ॥ ननन ननम दिरदिर नोम नदीम ना
दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर नोम
ननोम उदनदन क्लतने यलल यलल ले लाइये
इत्येनगा ॥ अथ ग्रामोगाः ॥ सानिध पमगरे सा
सारेरे गग मम पप धध निनि सस पस ।

मा
२८

कनन कनन कन मन मेघ:॥ त्रयताल:॥ कटके
कन ऊपर्णाया॥ दोताल:॥ चपक॥ रति मेघार
न मेघा॥ संगीतताल॥ तस्मात गुरु रामानंद चर
ण मरण उद्धार परमानंद कीने॥ इति तालप्रबं
ध:॥ चतुरंगताल॥२॥ चतुरंग गाइन गुण गा
इये गाइये रिझाइये रघुनाथकौ सरतान ताल

रा.म.
वे.

इति राग मञ्जु प्रबंध वनरंग परिछेदः समा
प्तः ॥ शुभम् ॥

3

क५
म३

सप सुपाइये ॥ सत सुरत तिन ग्राम पकईसमर

छुना गुणी जन मन मान ज्ञान पाइये ॥ पेख पे

या पेख पेख्या चित लांगना पिपि ऊक ठेठे

पि किटित पुनत पूंछूं सड दंदेयमिलाइये ॥

परत प्रति प्रति पपति मत उद्दति यडपाइये ॥

पट तशाना पगा क्रम प्रेम रंग वेवट सुनाईये ॥

रा॰टी॰

देषीहै गुपाल एक गोपिका अनूप रूप सोनेते सलोनी वाम सीचेते सवाई है। सो भाई सुभाई अवतार लीनो घनस्याम किधौं यह दामिनी घोंका मनीह्वै आई है। देवी कोई दानवीन मानवीन होय ऐसी मानवीन हाइ भाई भारती भढाई है। केषोदास सब सुष साधनकी सिद्ध यह मेरे जाने मैन

क ५

मन भायो है। थलसौ अचल सील अनल सेव

लवित जलसे अमल तेज तेज कौसौ गायो है।

केसोदास वसन अकासके अकास जोग जर व

र चट चट वेक वनो छायो है। रति कीसी रति

नाथ रूपरति नाथ कौसो कहे केसोराइ रूठको

न पहि पायो है॥ रागिनी टोडी कवित तालाा३॥

रा॰टो॰ बना बषानी है। ऐसी बातें कौंन जुन मांनी स्रुति

मेरी रानी उनके तोनेरी बानी वेदकीसी बांनी है॰

रागिनी टोडी कवित नाल ।३। कैधौ रदह

काज कैधौ छूठ्योन सषा समाज कैधौ कछू

आज बनवासहर विमाननै। दीनोनैं नसोच कि

धौ काऊसो भयो विरोध उपज्यो प्रबोध कि।

6

८५

हौ मेरो मैनकाकी जाई है। रागिनी टोडी कवि

त ताल ।३। चोलीकोसो पान तोहि करत सं

वारिवोई दर्पन ज्यों तोही मांझ न्हरती समनी

है। तेरेमनोरथ भगीरथ रथ पीछे डोलत गु

पाल मेरो गंगा कोसो पानीहै। तैही तिय देव

तायै पायो पति केशोराय पतिनी वह्रत पति दे

रा॰टो॰ वंगकी। केशोदास नामै ऊरी दीपकी सिषासीदौरी

ऊरावति नील वास ऊति अंग अंगकी। पौन पानि

पंछी पशु वासमै सबद सुनिजिन तिन वौकि चाहै

चोप संगकी। नंदलाल आगम विलोकै ब्रजजा।

ल वाल लीनी गति नहि काल पिंजर पतंगकी॥

इतिरागिनी टोडी कवित समाप्तम॥॥

थौ उर अवदाननैं। हावभैन देह कियौ मोहसौं क
पट नेह कियौदेषिमेह अति इरे अधिदाननैं। कि
धौमेरी प्रीतकी प्रतीत लेत केशोराय अजहूंन
आयमन ह्यौं कौन वाननैं ॥ रागिनी टोडी
कवित नाल ।३। चंदन विटप वपुको मल
विमल दल ललित वलित लता लपटी ल।

रा॰ म॰ भ॰

मेरे नेर पङ्क गेसैयो। मेडिन पङ्क परन उञ्ज गैया। मेरे
व भून सावदायक स्वामी। पङ्क कपाल भक्त भेत्र
गामी। पङ्क वास हन्दारिक हारी। मन्मथ रमरन
पङ्क मेरारी। मीन रीन जग जानन हारे। पङ्क थेपन
थन दीन उवारे। प्रतिथी पीये पङ्क जन रंजन। पङ्क
विकट भव त्रास विभंजन। पङ्क अनन्त शक्ति संरवा

अथ राग मधु भक्तिमाल परिछेद माड़ ताल ।

दोहा। विप्र अलौकिक दीख प्रेम प्रीति रीति जेउ

गाय। चिंतवन चकृत मुकवत दृगन प्रेम जलजा

य ।२। चौपाई ॥ इनकेर कहत मनहीं हरषरना

वनमल भक्त सेन स्फुति वरना। पावन प्रेम अव

पिजग पहू। पडू हावद जन दीन सनेहू। भक्तय

ग म
म

मी। पंक आधार सकल जग स्वामी। इनहि मोर सबद
ड प्रणामा। प्रेम प्रसंसि जिय विष संदामा॥ दोहा
बोलन चाहत बदन कछु सकत बोल नहिं बैन। एक
टक ससि आनन चितै जन चकोर जगनैन। नव हि
यतें जड़ वंस वर छूटि बरन लपटाय। ऊंजपद रज
निज मंदिर लीन वढाय।।७।। चौपाई।। दगन नीर

सींस संज

या। पद्म प्रसन्न वदन पति माया। पद्म गुरु सत गंज

फन्द छुडैया। पद्म कोटि पतनतन उधरैया। पद्म

भक्त प्रह्लाद उबारन। गनिका गृद्ध द्रुपतजा ता

रन। प्रसरन मरन पद्म भगवाना। पद्म प्रनाथ

नाथ जिय जाना। पद्म देव प्रणतारन हरना। प

द्म प्रपीर पीर उधरना। पद्म निकर चंद प्रेंतरजा

ग॰म॰

भ॰

३

जैटिन परयंक मैंडारी। गोरस फेन सेज कुविहारी।
तापर श्यनसे प्रीति सन माना। बैठारे उज ह्लपा ति
याना। एक्किस विविध वदन कसलाना। परम प्रेम
नेही हृदय समाना॥ दोहा। उज सेजन नेहो मदित
मन राजे ह्लपानकेन। सौसमना श्वंवरजकक्रूनव
ल ललिन क्कु विदेन। कवित। एक श्रौरजटाजट

ग
म
र

भरि त्रिभुवन नायक। बोले बदन बचन सुखदायक
उदय भाग आये मम गेहू। प्रनायाम प्रीय मीन सने
हू। अस कहि गाय एक जेइ नाथा। रुकमणि गहि
म एक उंज हाथा। दम्पति हृदय हरषि निज आये।
मंदिर लेन भवन निज आये। सरखनि देखि सकल
मेम क्यानी। प्रीत पुनीत परस्पर जानी। मोगान

रा॰ म॰
भ

मणि ल्याई विमल उद्दिक कनक भंगार। लागी प्र
क्षालन करन चरन विप्र व्रत धार। ५५॥ चौपाई॥
दीन वेश करि दीन निवारन। लगे आप निज करन
पखारन। चरणोदिक उन नाथ सुहावा। कृपासिं
धु निज सीस चढ़ावा। अति से प्रेम रुकमणि प्रीति
करना। मरदन लगी विप्र वर चरना। उज पद वा

4

म॰ ४

इष्ट पट सीस इष्ट एक ओर कनक कलिन क्रीट भाव
तौ। एक ओर कामर समल चौथ चौर गारू एक ओ
र ओंचर लपीन छवि छावतौ। एक ओर पानन वि
पादिका कटोर एक ओर कंजकर कल कोमल स
हावतौ। एक ओर मुरली उमेड एक ओर दोउ सम
ता उमेड ऐसो प्रेम हरी मै भावतौ। दोहा। नवकक

रा॰म॰
भ॰

न कहै एकलै नह्ह जल कुमद मयंक। चितवत वद

न न होत दृग चिपत चिवय नणभंग। इनि इनि ह

दय जडाव प्रभ प्रनमे प्रेम जत प्रीति। हसन रसन

बोलन मिलन कहि न जाय कछु रीति। हकमणि

जन मति भाम इनि भाम सहचरी आन। प्रीभगा

वान सप्रीति निज मीनहिं देत सवान॥ सवैया॥

स
५८

र सीस निज धारी। सोविस वंझरि भवन वेरसारी।
वोमरु वारु झुलावन लागी। पावन प्रीति प्रेम र
स पागी। सत भामा उन केदित आये। करत सब वि
जन मोद मन छाये। हरि निज पीन वसन कर लीने
डर वर वरन पर छाए कीने। प्रेम सिंधु जन जात उ
मंगा। पुलक अंग उठ लो मन रंगा॥ दोहा। रुकमी

रा॰म॰
भ

6

प्रेम जतन इज कस वरण पखार। कविको विद आग

मति राम वरणन जहि पट पीन। वदन परीछण हे

त प्रेम सो दीन्हो निज मीत॥६॥ चौपाई॥ मंदिर व

हरि पान अचवाये। प्रेम प्रीति कछु वरनि न जाये।

धूप दीप जुत आरती कीना। विधि वत चारि प्रदच्छ

ण लीना। कीन प्रणाम दाउ स्वत परना। भई प्रेम

म ६

सामल हल्ल वट्न नन लेपन वाह पटीर उसीर मिला
ये। फूल सुगंधिन लो मद केञम दिव्य दफूलऽन
फूल सजाये। या मन मो सति भाम शुभी मन भाव
न पावन पाकर वाये। केविन भाजन भाव सनेह सों
सांजिन साजिन बोलि जिमाये। दोहा। निजकर
पान कराय प्रभु शमर नंरंग निवार। दीने सादिर

रा॰ म॰
भ॰

धन्य धन्य जड़ चेतन वर धन्य सुदेश सिनाई। धन्य अलो
किक प्रीति ग्राम धन्य धन्य प्रभुताई। नव वंदनापरप
रिगायो घोर घोर चढ़ें ज्ञान। वैदेपक प्रथेकपर मदि
नंदक भगावान॥ ९॥ चौपाई॥ षोडस सहस्र वृ
लकर रानी। देवन आई सकल विसमानी। इह
उज गाज धन्य धर माही। कारन केंजनिज त्रिभव

मु

वश दशा विवरना। सतिभामा रुकमणि मनहार ह
हूलत विजन चमर कर चारू। एक प्रयंक सुभ्र सुभि
रामा। विय विराज घन श्याम सदामा। रहे परस्पर
वदन निहारि। भरि भरि प्रेम दृगन निजवारी। दो
हा॥ कमल रूप उजवर चितैं उज मूरति घनस्याम-
रनउन चितवन दृष्टि दृग होतन ननक विराम ॥

रा॰म॰
भ॰

नैमनाई। दीनानाथ सत्य जिय जाना। जो प्रसरे

क मीत प्रीय माना। दोहा। मायो मीत सखीन प्रम

देखि चकित सब नारि। कृपानाथ विनु करन प्र

म करहत जनन हिन कारि। ८। चौपाई। कवित॥

नव कर करन पकर ग ग रवरयर माथ रे म्हडल कल

बैन बोल बोलकै। मीन सौं करहत प्रेम सियको प्रया

8

म
८

न मांही। जास चरन प्रक्षालन कीने। पादन उदिक
सीस धरि लीने। अंतसे समल नगन चिरकुट चीरा॥
भरि भरि भाजन भेट जड़ वीरा। कीनो अंतसे रंक स
नमाना। मिलन मोद किमि जाय बखाना। कृपा
सिंधु कर ऐसहि सारी। जानि न जाय रीति कछु या
री। कहा अखिल भवन प्रभु राई। कहा रंकमन कर

रा॰म॰
भ॰

१

राम मीत मेरे दिन जाम काल कामहिं न आवरी। कि
यौं प्रीतहूं की रीत बिसरावरी। गृह गेह बास कल
कानन बिलास हास श्रेहि सपि नास कियौ मीत म
न भावरी। मैनो मथुरा पधार नम किन कौन ध्यान
भयो ना भयो विवाह साजन सुनाइये। सवन सुना
को होन मान लो विभूतीजो न सोच नैन आदि खेत

रु नीर नैनन अधीर जड़ वीर फोल फोलकै। रावर
सजन आज नेक [illegible] पेम संदन लभेतरै मैं ट
गन खोल खोलकै। ज्यौं हि जीय जागाम रही सहद
सखि मोर स्यौं हि लेज श्यौं मै वदन बोल बोलकै। आ
जनैन सफल सजन नव नन नकि सराग अभिलाष
लाख मोद सर सावरो। अब लौं थाम तम विनु अभि

रा.भ.
भ.

10

न देखि स्यान इजराऊ। नवल अलौकिक प्रीतिप्रभ
ललित सुशील सुभाऊ॥ १४॥ चौपाई॥ प्रेम विवस क
छुक स्यान जाये। इकटक चितहिं नैन जल छाये॥
भयो मूकवत विप्र अधीरा। बोले नव कृपाल जदु
बीरा। करते रह्यौं मीत मोहि संगा। भाव थैन मन
मोद उमंगा। नाम रीति सेसर्ग नमारे। मीत उपज

मोसो मीन गाइये। जैसो ग्यान आवइं अभाव जीय
ग्यान मान प्यारे प्राणनासों भेद भूलि नाउ गाइये ॥
त्योंहूं मेरो तेरो काहू अनगौन बीच वयो साजनं वि
यान बोलवे को बेर लाइये। दोहा। कहूं सो तमरा से
ग मोहि जबतैं मीन पधारे। तबतैं भोगत विपति
डारव बीते दिवस हमारे। अस प्रकार मो वकिन वि

रा॰ म॰
भे॰

निज देत बडाई। मानहु मीन हृमन नमहुं सनेहा। पठ
ने रहे जेत हिं गुरु गेहा। श्रावण मास कीन नव श्राव
न। लगे मेघवर गगन सुहावन। शिषि गण बोलि य
वन हरषाये। इन्धन लेन विप्रन पठाये। हृम नम
मीन तिनहुं तजि मारे। कानन कलिन गवन जग
बारे। तहां जलधि गर्जन नभ तूलो। मूसल धार

उर ज्ञान हमारे। जगत निरक्त विगत भ्रम भयऊ। त
व प्रसाद सब बिधि सुख लयऊ। जासु क्रिपा तें संप
ति होई। ज्ञान ध्यान रत मुनि वर जोई। एक प्रसा
द जिहि देवन देवा। तरन सकल सुख सम्पति लेवा
सो प्रभु पूजहि कहत भगवाना। तव प्रसाद सो मो
सब ज्ञाना। इहनो दीननाथ प्रभुनाई। सदा जनहि

ग्राम बसे रैन विहाया। भोरहिं होत गवन निजकीना।
देषन आर सीस धरिलीना। आयभवन गुरु चरन ज
हारे। तेकृपाल अस बदन उचारे। आज कलेश जव
न वन भयऊ। मोरे हेत नाम जमलयऊ। मैअमन्त्र तो
पें सुननेहू। आसिष देऊं रुचिरवर पहू। जोतमार
विद्यामन भाई। सोव तमहिं विसरव सवराई॥

वार जनु झूलो। चपला चपल चमक घहें घोरा॥
भयो गगन भयावन रव घोरा। वीरन हृदय धीर
जन हारी। चल्यो प्रचंड प्रबल बन बारी। दोहा॥
करत न पराहिं रण देखि निज अनसे रैन अंध्यारी। हम
भले लित शिवन संग विगुन विघ्यत जी रमारि॥
१०॥ चौपाई॥ नवइक देषि सबन डुम क्काया। नसे

रा·म·
भ·

13

हरष मगन कछु उतर न भयो। जात प्रेम जल नयनन
छयो। मगन मनहिं मन मोद उमंगा। कवन धन्य
मोहि सरस उतंगा। आइयो अखिल भवन पति जा
हू। आज भाग भये भागन नाहू। नवक कहा गाय सि
धुमरइ बानी। सुनहु मौन प्रभु बदन बखानी। नव
सुशील सुंदरी अभिरामा। कहां निवास करत क

नवकुस गाहो बरन गुनगाना। सोनजाय सुखमीनव
खाना। गुरुगेह बसन कुरुष उनसाहा। योरइह मीन
नमहीं सुपिनासा। दोहा॥ मोहि समान पीय मोहि
ना तोहि समान पीय मोहि। प्रीति निरंतर परस्पर
मीत लावहिं किमि कोहि॥ २१॥ चौपाई॥ सुनि
प्रभ बचन प्रेम रस भीना। ब्रह्मा नेद विप्रजन लीना

वर मरमा। अस प्रकार सउ वचन सुहाये। कृपासि
धु निज वदन अलाये। नवइं नदीन उत्र उजराई॥
चित वत जनइं चित टकलाई। दीन नाथ प्रभु दीन
उवारे। कहत सुनइं प्रीय मीत हमारे। अनसे सुखद
गुरु ज्ञान सुहावा। सोन हमहिं विसरन मन भावा।
गुरु वर शरण जिनहिं जगलीना। प्रीय तिन जनम

ल धामा। नव समान सुंदर ब्रत धरनी। अग्रगण्य प
ति देवन नरनी। विरत विवेक ज्ञान विज्ञाना। जो
कर हृदय मीन सब भाना। जहँ लग ग्रहस्थ धरम
निज रेहा। करत अशक होत नहिं गेहा। सुखदुख
राग द्वेष संसारा। सदा एकरस जासु विचारा। श्रुति
सुशील सुचि निरत सुकरमा। संतन सिक्षा धरम

त मन गाथे। मोद मगन कछु भनत न बाचा। इकट
क चितवहिं प्रेम रस राचा। कमल बदन सुंदर छबि सो
हन। देखि देखि मुनि मानस मोहन। परमानंद जन
ऊ पद पाई। छन छन कै रहो प्रचाई। बिपुल वेरा
खिल उजराया। छबि संभार धरि धीरज काया॥ क
रत निरोध प्रेम दृग धारा॥ मन्द मन्द मृदु बचन उ

सफल जग कीना। संहति अगम वार निपभारा॥
होतसो विन्ध्याम लगा पारा। जपतपजोग नेम जम करमा। नीरथ्य दनजनन ध्रन धरमा॥ दोहा
साधन दान दयादि सुख ग्रहस धरमजगाजेन। गुरु
सेवन सम मीन मोहि एक न श्रनभव देन॥२२॥ चौपा
ई॥ श्रस प्रकार भगवान कहाये। श्रनक प्रसंगामी

रा॰म॰
भ॰

वरचारा। भवपालन जगकरन सेवारा। सोतजि भव
न गवन भगवाना। गुरु गेह पठन लेन कल्याना॥
मीन वचन सुंदर सुखदाई। सुनत लीन प्रभु हृदय ज
डाई। दोहा॥ कहि सम विप्र नव मीन नव जीवन रक्षि
मन भाई। अब सुंदर षोडस सहस्र यामन भाम दिखा
ई। कहहु मीत जल कमलना सुना पुत्र परिवार॥

16

म॰
२६

चारा। दीनानाथ मीन हित कारी। सोनो हृदय मोर स
पिसारी। शत्रुबर मदन संग नव सोहा। वाम विलास
म मन मोहा। तीन लोक नायक मन करनी। मंज मि
नाई मोद मन भरनी। इहनो जान दीन दुख हारन।
मोरे उदय भाग कर कारन। पैश्रम हृदय भरि संदे
हा। समाधान कछु होत न पहा। जाकर बानि वेद

रा॰म॰
भ॰

17

प्रतिप्रश्नर्थ करत जीय मोही। एक्छुअं मीन सकुचन
जितेही। मोरे हेत हरषि मन माहीं। भोजी भवन प
टव कछु नाहीं। परम कृपा वति मोऊ प्रवीना। ने
कछु होहिं मीन मोहि दीना। मीन करउ तब मजन
डैरया। असकहि वदन वेगावल भैया। कामरमी
न मीन अनरागे। करन कंज निज चापन लागे। कृ

कहेंा बसन किन किन भवन आनंद सरव प्रकार ॥ ३१

चौपाई ॥ नव मायो प्रभ विनय उचारी । मीन जस

ल सब कृपा तुमारी । जोके प्रभ साजन मन भाये ।

नेम सेचीचे सर्व सावदाये । सो संस्रत पूरन सब

कामा । प्रभ प्रभ भाखि वचन अभिरामा । बदन

प्रसन्न मोद मन कैंयां । साजिन गोरेंडारि मडवै यो-

रा०म०
भ

मोरी। आवत देत विपुल जिय थोरी। अस विचारि ज
व प्रेमि उरायो। कृपानकेत मरम नव पायो। बरब
स सबल कान्ह कर दीन्हो। दीनानाथ प्रेमि गहि ली
न्हो। पलो हचिर कछु भेद भजैया। तमअंग राखे कस
मीत डरैया। अस कहि दीनदयाल अनुरागे। नासहर
गन जब देखन लागे। चाह पृथक भगवन नवधा

18

म
९

पा सिंधु जिमि भोजन नीके । मङ्क बिन जान बिष

तिमि जीके ॥ दोहा ॥ सो बाउर जोय कर दिये गोवन

कौंन दवाय । प्रभुनन बिन वन गुणान श्रमशंकित

हृदय लजाय । सकल भवन नायक बिदत प्रबल

न बिभ्रमगारि । इन कर श्रृ लायक नहीं बाउर म्है ।

ठौ चारि ।२४। चौपाई ॥ श्रृ कछु अविन भेट नहिं

रा॰ म॰
भ॰

मानी। मंद मंद चापत जड़राये। प्रेम नीर नयनन कु
रि जाये। विविध प्रसंसि वदन भगवाना। भस्यो मू
हि मेंजल जव प्राना॥ नवरतकमणि करलीननिवा
र्यो। वनर चारु निज हृदय विचार्यो। दोहा। दीनाना
थ दया नधी मृदी चाउर पाय। तीन लोक दीन्हो विभू
ति उदार जड़राय। प्रस संस्तति प्रभु समनेही कर

19

ये। बारबार निज बदन सिहाये। नव बोले उज रहष त्व
श्यामा। इनतैं मरहिं कवन श्रम कामा। भानहिं दीप
दिखावन जैसे। जीये फिनाई कीन श्रम तैसे॥ दोहा॥
विष्णतोष इनतैं सकल होत कृस कह मीन। भूरि भा
गा भोजी परेखो भेटभाव स्नुत प्रीत। ५५॥ चौपाई॥ न
व भगावान मूटि भरि पानी। लीन सिउारि बदनसव

म१. २-१

रा॰म॰
मं॰

सनकुमारा पनि नीति मुरुलाबंही । जेपीय यसत्न भवत निज श्रावंही । कथ जन मदित सचिर परिवारा । पावन करि विमल सन दारा । दोहा ॥ सनिमुमसकाम्मणि व चनप्रभ मंदमंद मसकाय । बोले चितवन मीत नत मग न मोद हरषाय ॥ २७ ॥ इति रामा मय भक्तिमाल परि छेदः समापनं संपूर्णं ॥ ॥ ॥ ॥ शुभं

20

न छोहु जन काऊ। मोरेहुँ पें कोमल कलि न होत दे
न वड लाऊ ॥२६॥ चौपाई॥ अब हम कहैं कस देउ न
स्वामी। चंउर चारु भक्त अनुगामी। कर सौं कर पक
रत हरषाई। कहत सुनहु सोचत सकुचाई। मोर जि
दानि भेट पठईनी। प्रभु सीय जानि हम संग नहि दीनी
कापावन हम जोग न वैहो। जहि तें दीन न दीन सनेहो।

कै ख वा सनि वामिन मानो । ४२ । छंद । अमल कपो
लै आरसी वाहे चंपक मार । ४३ । दोहा । गति को
भार मरा वरी अंग अंग के भार । केसव नख सिख सो
भिये सो भायें सिंगार । ४४ । सवैया । वैठे जरा इजरे पलिका
परगास सिया सव के मन मोहे । जोति समूह रहे म
टिके मनि भूलरहे वपुरा नर कोहे । केसव तीनहुं

अथ राग मधु रामचंद्रिका परिछेद माह्न । ताल । ।

तोमर छंद ॥ उत उत मो मन सुंदर डोले । अथ थिर

नेकनि बोलनि बोले । हाव भाव मंडलि चितनि

मोहे । मनडु अनेक कला निय सोहे । ४१ ॥ छंद ॥

मरकट विलास प्रकासित देखे । थनउभ मनोज म

नोम प्रलेषो । चरवित हास वदकनि जानो । हावि

रा॰ म॰
मा॰

नैन। जनकसुता जनपके नैन ५७ दोहा जदपि मर्कट

रघुनाथकी कुटिल देखि घन जोत। तदपि महाप्रभुह

र नयनकी निरष सुहागनि होत ५८ दोहा। श्रवण

मकर कुंडल लसै मुख ढिग मनिवे भो पकय। ससिसमी

पमोहन मनौ श्रवणनि मकरनु छुत्य ५९। पद्धरि

काछंद। श्रुति वदन सोभ सरसी सुरंग कमलनय

म२

लोकनिके अवलोक वृथा उपमा कैविदोहै। सौ
भनि महाराज मंडल मोज मनो कमला कमलापति
सोहैं ।४५। दोहा गंगा जलकी पाग सिर सोहति श्रीव
जनाथ। सिव सिर गंगा जल किधौ चंद्र वंदकासा
थ।४६। तोमरछंद॥ कछु भ्रकुट जटिल सुवेस
अति अमिल सुमिल सुदेस। विथलिखे सोधस

रा॰म॰
रा॰

सवैयाछंद। सोभन दीरघ बाहु बिराजत। देवसिहा
न पवेव निलानत। वैरनिकौ ग्रहि राज्य वषानइ।
हैहित कारनकी भजमानइ। ५३। छंद॥ ज्यौं उर
मैं भृगुलात वषानइ श्रीकरकौ सरसी रुहु मानइ
सोहत है उरमैं मनियौं जन। जानकीकौ ग्रनुराग
रलौ मन। ५४। दोहा। सोहति पनरन रोम उर देष

म
३

न नासा नरेग। जग जवति चित विभ्रम विलास।
नई भवनभवरग्सहूप ग्राम।५०। नितपालकाछं
द॥ सोभिंदे ग्रति हवि सुभ्र उर श्रोनियें। सत्यग्रत
हूपजत भूपक वषानियें। श्रौ दसविरेषसु विसे
ष रमेहे रये। सोधिज नईसत्त भलक्षन सवेदये॥
साधुमनो वचकायकी मानो लिषी विरेष ५२॥

ग्र॰ म॰
मा॰

पाटजटी मुनि सेन महीरनि की यवली। देवनदी कै
नमोनडु सेवनि भांति भली ५७ दोहा। कौंवर
नी रघुनाथ छविके सब उठ नमाह। जिनकी सो
भा सोभियत सोभासब सेमाह। ५८॥ कवित॥
कोहै दमयंती ईडमनोरनि रातिदिंन होहिन छवी
ली छन छबिजौ सिंगारिये। केसव लजाति जल

४

म
०

तितिनकोभाग। आइगयौ ऊपर मनौ ऐनरको प्र
नुरागु।५५। सुंदरीछंद। मोतनिकी डुलरी सुदे
स। जनु देवनिके घाघर सुवेस। गज मोतिन कीमा
ला विसाल। मन मानहु मैनन के रसाल।५६। वि
सेषकछंद। स्याम डुवै पग लाल लसैं डुलियौं न
लकी। मानहु सेवनि जोनि गिराजमनाजलकी

रा॰म॰
रा॰

वडीजडमैन उठावनि कौउकै । इस मेग बधैति वाकचंद
न चंद्रका नति चंदकौ । जब गाइके उरसे वडी रडना
थ प्रानंद कंदकौ ॥६॥ छंद ॥ भाव चंदहैनन लोल
लोचन लोक लोचन कौ हरै । जब जानकी संग सो
भिरैं सभ लाज देखनि कौ थरै । नह एक फूलनके
विभूषण एक मोमनके किये । जनकीर सागर दे

5

म ५

जान नान वेदवोधं जान रूप वाउरे विरूपसे निहारि

ये। मदन निरूप निहीं रूपनौर निरूप भयो वेद व

ऊ रूप अनरूपको विचारिये। सीताजीके रूपपर

देवनाऊ रूपकोरै रूपहूके रूपकनो वारवार उआ

रिये।५८।। गीतकाछंद।। नहं सोभजे जन खेट

री सषि दामिनी वष मेडिकै। घनस्यामको जवसे

म८

रा॰म॰
रा॰

कौ दियौ। ६३। छंद। बसभौन सौविनान श्रासने वि
छावनें। अन्न शस्त्र श्रेग गेन भाजिनादिकौं गनें॥
दासि दास वासि वास पाट पाट के किये। दाइजो बि
देह राज भांत भांत के दिये। ६४॥ दोहा॥ जनक राज
पहिराइयो राजा दशरथ साथ। कछु चौर गज बाजि
दै श्रासमद छिन राथ ६५। निसपालिका छंद॥

6

बना नन कीगिकी छींटै निछीयें । ८१ । सोरठा ॥ प
हिरे वसन सुरंग । पावक से गसरवाहा भये । सहज
सुगंधित अंग । मानौ देवी मलयकी ८२ चामरछं
द । मनहुंनि राजि राजि वाजि राजि राजिकै । हेमही
र खचित चीर चारु साज साजकै । वेष वेष वाहिनी अ
सेष वस्तु सोधियौ । दाइजौ विदेहराज भांति भांति

ཀ་མ་
ཀ

7

दानि दिये राइ दसरथ सुष पाइकै। सोधि विप्र बहुवि

ध राजन्नि बुलाइकै। बोलि जाचक सकल दादुरु म

हरसे। मन जिम वर्षे गाजि बाजि पय सुरिसे।९९

इति राम मधु नामचंद्रिका परिच्छेदः समाप्तं॥

रा॰ सङ्ग
ना॰

दोहा ॥ नाहिं ईस्वर आयो नवे नवे चारवाक प्रधान
देष समीप मजार कै कीने पढ वषान ॥ चौपाई ॥
जय जय महा राजा जग कारण ॥ नम त्रिभवन के हो
प्रति पारण ॥ चारवाक पद करे प्रणाम ॥ सेवक सदा
पंडानो नाम ॥ चारवाक देष सो नम आपे ॥ वहुत
कालनते दरशन पाये ॥ मन उग जेना भये विनीत

अथराग मध भैरोय चेटनाटकपरिछेदमाह ॥

सवैया ॥ मानिन कानन माहि सुने यह वाक प्र
माण मह्रा सुषदाई । माहि निदा गमनो वरषा नि
म काननको सुष शीनल नाई । मानंदनाहि वि
लोकननैकै न्टप मोह वली दिन वान प्रलाई । आहि
ले कायन सजनमैं इन वाकनके उरमें हरषाई ॥

रा॰ म॰
ना

पमै अति अनुरागी । कलि युग मैं जंगमै वैड भागी ॥
तेव प्रसादि सम विधि कल्यान । ते जेवत जैसे भव भा
न । कौनि काज करन नहि रहे । तेव पदम्हल दर्श को
चहे । तेम मेरे वाक हसिर पर धारे । इष्टन के नितम्
ल उधारे । म्हाव प्रसादि म्दिन अति भयो । दरशन
हेदर अति हरषयो ॥ दोहा ॥ वारवाक अमित्र मम

तेमरी मोरत पापे सीन। द्वापर भैनमयी कछुसोरे·
कोटक देसवंमेंहू प्यारे। बैठो रेस्या समीप हमारे। स
माचार कछु करो उचार। समाचार हेतिये सभ देव।
प्रभको निषेल मनावे भेव। पछम देस बसे ह्वषयो
मा। सो ह्येग कलि कीन थणोमा। चोरवाक मेमक
रे वेषान। सभ विथ है कलिको कल्यान। मेमसेना

रा॰म॰
ना॰

ह्रा जन ते रति नाह कियाउ पराये। दिसे उत्तरऔ प्र
ति पक्षमसे यह वेद त्रयी ततपालनके हितहै दिज
धारी। मम ऊ दमकी नहि कौंन कथा जिनदेव स
मान भये वहनारी। अव काज सरन सिय भये ह
विवेक हकी जड मूल उधारी ॥ अगनि होत्र अनिवे
द विसाला। ओर त्रिदंड भसम अनिमाला। वलमत

3

स
३

मोको करी उचार । कौंन कौंन काज करै कलयु
ग जगत मझार ॥ राग मधु प्रबोध नाटक नाल ।
सवैया ॥ वेदन के पथ छुरन जे हुयथेह वेशद मैं ज
नपारे । आज विराग की कौंन करन कथा त्रिन लो
ह कंचन से ज्ञान लागे । नाक लिना हम कारण है
प्रभ के प्रताप भये बडभागे । जे धनवंत महातमम

रा॰ म॰
ना॰

घ बोध सेक उरगई। ग्रहसै नारि सहनके संगा।
कहा होइहन बोध प्रसंगा॥ दोहा॥ नवपदपंकज
कोलिषी कलिजुग पानी श्राप। याको श्राप बिधा
दिये राजनर विषनाय॥ चौपाई। याबिधि सब नियो
भूपनि जबही। पानी लगो बचावन तबही। बाव
ककहे सनो जगा भूप। कलिजुगपानी लिषी अनूप

हीन जीवका कारन धरे हङ्सगति कीन उचारन ।।
जीवन हित नर वेद विचारे। तांते कारन भए हमारे।
कुकृत्यादिक तीरथ माही। प्रतो पउदे स्वपनेहूं ना
ही। धारवाक कल मन प्रवीना। मम हित भजबल
धरे नवीना। तांभज दंड काज मम सरे। तीरथ वडे
वियारथ तिनकरे। अब मोको निह चिंता भई। तीर

गा दिने तन भस्म लगावै । आपकरै सम पाप और को
पर बतावै । इह भांति अनीत सबै करी नष सिषलो
अभिमान अति । उर निस वासुर दंभ उवरे कव हू
न होवै राम रति । हरिको पंथ सुहूर पंथ वडु आपव
लावै । रही फकीरी दूर माग घर पेट भ्रचावै । कहे
रकंत वनवास संग वडु दंद ववावै । सवे निरंतर रा

दोहा। नव वसकीनो निखिल जग सुर नर मुनी महान। कलिजुग पद वंदन करै महा मोह भगवान। समाचार सभ देसको सुनै जगत सिरताज॥ नव प्रताप नव दास जग रङ्गे सभ काज। चौपै छंद जगत जैन माया मोह नाम प्रतीत कहावै। घरमै लेहि ज़मीद भी भ्रुनि मागन जावै। रैन करे रसमी

गा॰ म॰

ना॰

6

मन चीन सुधारे । जग पावडु वाक श्रुगणा विनवै

टनपाइ भूपति करैं राजाधिराजा महामोह प्रभम

इसदा पछ्म सधरे । भयो उपद्रव एक सुनो नीकेम

न लाई । वडु नाम नारायण माहि अलीन सुजन को

धाई । कहूं कहूं मन लाइ महाजन प्रेम लगाई । पा

न भजे हरिनाम नैनन ते नीद मिटाई । यह हरी भग

नि दिने छनि ध्यान लगावे। छनि यन सदमसीम
लान नृष भूपमौय घर पौलपर। सथन लिपसा
आकुल सहा सरमा पनि समरहे पर। नीनन छ
नि भूपनयाइ मन उरू विचारे। निज परजा पर
देड काज मव भीनर सारे। राज धरमकी सिस्टन
भूप नरह नैन निहारे। पाना सकन निरंतर यर

प्रबल प्रतिं जगाचार वाकके वचन सुनि करो उपा
इ सुयथामति। अब कलि की मति बौरानी यो ह
मजानयो। लष नाम नारायण माघ जिन इष्ट मान
यो। इकराज सूय को वरणो याजग भानयो। अ
श्वमेध सष मौलि करयो जग हानयो। इहविलरु
ष्या मान वय पर पतिनी गुरदाररति॥ अब करेनि

न स्वबीज अभजन षोटे उरपरयरे । यह हरिभगत
अवाचन करिसके नव मल गपन कुननकरे । वा
रवाक सभ औरवात अभ मनको वषाने । महाराजन
हिरूट गये उरसन पछ्ताने । एक पापिनी नारिभ
ई मंग सजाने । यह नाम नारायण इष्ट नाहिके मे
गा मिलाने । अभ इन अपरायनने डेर महायोगिनी

प्र॰मं॰
ना॰

मोहप्रभतादि कुञ्जयोनव ८९॥ इति रागमयप्र
बोधचंद्रनाटक परिच्छेदः समाप्तः ॥

8

मः
८

उर जग माहि जनउर नाम नारायण भयो कीन ॥

छपै छंद । नाम नारायण महाउष भूपनि जनागा।

यो। प्रजा मेल इक बार लषो तिह बंध मिटायो । गनि

काते पद दासी नाम मन ते मत लायो । नाम उष्ट तिह मि

लयो सुतिह बैकुंठ पठायो । गजपति व्याकुल बा

र इक नाम नारायण लयो जब । राजाधि राजा महा

रा॰रा॰ खूबनो आखिरको कछु लेना एकन देनाहै १५

रागिनी रामकली गजल ताल   दस्मालन

जमी आतिलहै और फाजिल मला स्यानाहै ॥

कोई आमिल कामिल दाना कोई मस्त सिडा

दीवानाहै। तावीज फतीला फाल फसे और

जादु मंतर लानाहै। जब देखा खूबनो आ

८

नस उतारी है । जब देखा हिवनी आखिरको दला

ल न कोई आपणी है १२ रागिनी रामकली ता

पैरराजल । कोई फलके बैठे मसनंद पर कोई

रोवे अपनी दौलतको । कोई बोले अपना मुझसे

लो और मेरा है सो मुझको दो । कोई लड़ना है को

ई मरना है झगड़े इक और नाइकको । जबदेख

रा-रा टोपी टोप बनाता है कोई बाधा फिरा अम्मा है । को
ई साफ बरहना फिरता है ने पगडी न पाजामा है-
कम खाब गजी और गाढे का निनक जीया है है
गामा है । जब देखा खूबतो आखिर कोने पग
डी है न जामा है १८ रागिनी रामकली गजल
ताल कोई बाल बढाए फिरता है कोई सिर

खिरको सबहीला मकर बहानाहै ५६ रागिनी
रामकली ताल शेरगजल । कोई लोटे
हुवे गलियोंमे तैयार किसीका ठेगाहै । नित
कजीये झगडे रहेहै यह मेराहै यह तेराहै । ज
ब देखा हुवतो आखिरको न मेराहै न तेराहै ५७
रागिनी रामकली ताल शेरगजल । कोई

रा०रा०

लगाताहै। जबदेखा ह्लवतो आखिर सब जगाऊ

रलाजाताहै॥ ४॥ रागिनी रामकली गजल ता०

कोई बैठेभंग सराब अफयम करैहै हथ दहो की

फेरीहै। कोईपला सिरपर लाताहै कोई लादेवे

लम्बकेरीहै। कोई जगडे अपनी जागाह पर

यह मेरीहै यहतेरीहै। जबदेखा ह्लवतो आखिर

10

को गोट मडाना है । जब देखो ह्वनो आखिर

को सब छोड अकेला जाना है ९९ रागिनी रा

मकली ताल   रौरगजल । कोई रोना है

कोई हस्ता है कोई नाचे है कोई गाता है । कोई

छीने झपटेले भागे कोई धोसका डर दिखेला

ता है । कोई माल इखटा कर्ता है कोई ऊंची कुलफ

रा०रा

देखन भूली है २२ रागिनी रामकली गजल ना

कहीं बान छुटे रन टाट पगाजी कहीं दमरखे चम

राव न कला है। कहीं रोक रुपये का खिरदा कहीं

कौडी पैसा पैला है। कहीं छूटना काज पिदा

री है कहीं विकना खोट खिटोला है। जब देखा

ह्वैब तो आखिर कोने पीती खोट नचरखा है २३

कौन नेरी है न मेरी है न तेरी है ॥ रागिनी रामक
ली ताल   शेरगजल । कहीं वलीटेको घू
नी है कहीं खोसी कउवकी पलीहै । कहीं वल
नी काज पिटारी है कहिं उलझावकी डली है ।
तरकारी बैंगन सागहरा गड गाझ गाजर मूली
है । जब देखा हूवतो आखिरको सब विकरी

गा॰गा॰

ली गजल नाल। अब किस्का बेरा उत्रा कहिये
और किस्का रूप भला कहिये। एकदम की पैठ
लगी है यह अम्बोह मजा ठरवा कहिये। येसे र
नमाशे देनावे जीर अवजा कहिये रेजा कहिये॰
कछुवात नहीं वन आने को उपचाप भला है क्या क
हिये। गुलशोर बहुला आगा हवा और की चडपा

रागिनी रामकली नाल शेरराजल । कोई
शिकरा बाज उडाता है कोई हाथमे रखके तुत
ली है । शरबाज कोइले बैठा है और दौड किसी
ने डुलती है । हैतार किसी के हाथोमे और नाव
ती फिरत घतली है । जब देखा छुबतो आखिर
को है रेशम सतन सतली है २४ रागिनी रामक

रा॰रा॰

२ रोनेथे अव अपनी खोनिर रोवावा। नन ह्रवा ऊवडी पीटढूंई छोडे पर जीन थरोवावा २६ रागि नी रामकली गजल ताल जव जीनेको नम हावमतदा औरनेको महमानकरो। वैरानकरो इह्रमानकरो याप्रन्नकरो यादानकरो। ऊऋत्रत फ नहीं अवजीनेमें अव चलनेका सामान करो

13

नी महीहै । हम देखत्रुके इसतउनिग्रोंको सवयो

खेकीस टहीहै २५ रागिनी रामकली नाल

गैरगजल । वटमार अजलका आपड़ेगा टूकड़

स्को देखडरोवावा । अवशा कवहाग्रो ग्राखोंमे

ग्रेरग्राहेसर्दभरोवावा । दिलहाथउठाकरजीने

सेवेवसमनमारमरोवावा । जववापकी खोति

रा॰रा॰ ली गजल ताल यह ग्रम बहुत ह्रदा उछला

अब कोठा माबो जेर करो । अब माल इकठा क

रनेथे अब ननका अपने फेर करो । गफ हू

टा लशकर भागाड्डका अब जानमें नम शेशो

र करो । नमसाज लडाई हारवके अब भागने

में मत देर करो ॥ २९ ॥ रागिनी राम कली

१४

२७ रागिनी रामकली ताल   शैर गजल दिल

काटे अपना जीने मे अब और गाले को मन काटे -

अब चाट फनाकी टुकच वाके और राहून किसी

का मन चाटे । धन छोडे हिसे वावरे की और

भाजी अपनी नम वाटे । नाकंद वछेरे कूदबु

के अब और डुलनी मन बांटे २८ रागिनी रामक

रा॰रा॰ गजल । इस पोत बिसट कर चलने से मन रखे को हैरान करो । और पोपले मुहसे रोटी को मन मल् मल् कर हलकान करो । अब आप डूप् तम पानी मे मन पानी का नुकसान करो । कुछ लाभ नही इस जीने मे अब मरने से परहेज़ न करो

३१ इति रागिनी रामकली गजल समाप्तम् ॥

ताल   शेरवाजन । सिरकोपा वोदी वालऊ
प मुह पीला पलकैं आनऊकी । करदेफ्ता का
नऊप वऊरे और आंखें भीचुथलायगई । ख्वाव
नीद गई और भूख घटी दिल खस्तऊआ आवा
जनहीं । जोहौं नीथी सोहो गजरी अब चलनेमैं
ऊकुदर नहीं ३० रागिनी रामकली ताल ।

रा॰म॰

गोकुलचंद । केवनको दोष्यम गडाये नगान ज
डन वड्रंग । आनंद भये नंदजीके ऊधारे सेरा
गेंद लियाई मालन । कुमकवरने जनमली
योहै नंद महर घर पालन । रागिनी मधुमाध
वी जगलकंद ताल । । तेरो प्रटल रहीलो राज
पियारे पियारे मह मद शाह पीया जमजम निननिन

रागिनी मधुमाधवी लोरी ताल। ।लोरी लाल
को देऊ माई कबकी ठाढी ठाढी पराबाऊ। छन कि
न छन कार गाऊ बजाऊ अगर चंदनका झूलाऊ
लाऊ। लालकौं देहो सषी सम लोरीयो ॥ अगा
र चंदनका झूला झुलाऊ रेषाम दीयो बरो डोरी
यो। झूलना। नवल हैदोर नामाई झूलासी ६

रा॰म

टीम तदर टानी । यालाली याली याला लोम या
ला लालाले लोम यालाले लोम यालाली याले
दिर नोम नोम ननाना नोम नाना नाना ना नाना
दिर दिम ननाना दिम तान नाना टानी ॥ रागि
नी मधुमाधवी मादरा ना॰ । वडे रडुवीर रघवीर
गढ लंकको मंगलकमन वडे धनुधयारी ॥ पद्म

नवेन बैठके इन मिल काज । गाइन गुणीओ न
न्द बहीलबा समसषी अनमिल करन जबब स
दारंग मिल गाऊ बजाऊ नोन नेहूर मदीलसे सा
ज ॥ रागिनी मधुमाधवी नगाना नाल । । दोनी
उदे नाना दिम्ना दीम दिम् नना नाना नानाना ना
ना दीम दानी नादिर दिर नम दिर दिर् नम दिर दिर

रा॰म॰

विसास पीआ सहप सावरे टोनो नैननमें भरे।
रागिनी मधुमाधवी टोना ताल। ।टोना का
मन कर ससजावरे काहू देसना जावरे ॥ जेत्र
मेत्र राव सावीरी इच्छे नीको पीआ वार लावरे।
इति रागिनी मधुमाधवी लोरी झूलना जगत
केद नगाना सादरा जन टोना ससापतस थुमे

१४

७ ३

दल सुष मारो जोधा बली लीये एकते एक बल

अधिक भारी । सेम धरनी धसो म्हारवादर छीप

ठे हाथ पैकोन लीये पावारी । दोर वज्र धोर ज

व मारलेका लई सकल संसार जैजै कारी ॥

जत । नवेली अकेली चलो स्याम मथ माती ले

गर जाये । गागर भर भर धर आवै मोरा ककुना

11.11.

रा॰गं॰
क॰

सी माला प्रेमकी सी माला आजलौं न देषी सुनि
जैसी आज दीसी है ॥ राग गंधार ताल ॥ ३ ॥ क
वित ॥ चंचलन ह्वै जे नाथ अंबरा म छूजे राय सो
वै नेक मारि काऊं सकतौ सुवायो जू ॥ मंद क
रौं दीप झनि चंद मांव देषियत दोरिके उराई आ
जे हारैते दिषायो जू ॥ मराज मराल चाल बा

अथ राग गंधार ताल ॥३॥ कवित्त ॥ सुकता मतिन
कीहै मकु श्रीसी नाक दांत दालौ दामनी हस
ती वतीसी है । मोहनके मंत्रनके अहतंगनकीसी
रेष भ्रकुटी सुवेष भाव भेदछबि छबीसी है । चि
त चतुराई उरकीसी उरकेसे अरु उच सकु
चौनो नैन जैसे उरकीसी है । केशवदासरूपकी

रा॰गो॰
कं॰

तो नही अबहूं ते देषियत उरउदन योहै। रहुसि
खिलन गई तौते जेठ भारी भई कियौयाते वाऊ
भयो महावर दयोहै॥ आंषनकी मेरी फाटत
सी आवतहै जानतहौं रीठलागि केशव ठौंकि
गयोहै॥ राग गंधार ताल॥२१॥ कवित॥ सष
दै सषीन वीच दैकै सौहैं षायकै षवाय कछू

२

ढ़िरै बिझाबि दैकै भाषी नहै केशव सुमोहू मनभा
येजू ॥ कुलके निवास ऐसे बचन बिलास सुनि
सैग्रनो सुरतिहूंते स्याम सुष पायेजू ॥ राग रंगया
र नाल ॥४२॥ कवित्त ॥ इत उत चाहि देषो जब
कोऊ फिरा नाहि बार बार जिय कह्यो हिये क
हा भयोहै ॥ अब लौनो देषनिहीं इहां कबहू

रा॰ गं॰
कं॰

राग गंधार ताल ॥३॥ कवित॥ चंदकैसो भाग
भाल भ्रकुटी कमान कीसी मैन कैसे पैने सर नै
नन बिलास है॥ नासिका सरोज गंध वाहसे सु
गंध वाह दाड्योसे दसन केसो बीजरी सौ हास है
भाईकीसी ग्रीव भुज पान सो उदर और पंकज से
पाइ गति हेम कीसी जास है। देषी है गुपाल प

3

स्वाद वर कीनी बस बस है । कोमल मृनाल कासी
मलका की माल कासी बालिका जु डारी मोहि मा
नस कि पस है ॥ जानै को विमान भयो केशव
सुनै को बान देषो आनि गान जान भयो किधौं
श्रम है ॥ चित्र सी जु राषी यह चित्रनी विचित्र
गति कहै यौं रसिक नए यामे कौन रस है ॥

रा॰ गो॰
के॰

तरी वलनि चाहु पल पल प्रति पति प्रेम प्रति पा
रिबौ। केशवदास सविलास करहु कुअरि राधे इ
हि विधि सोरह सिंगारनि सिंगारिबौ॥ रागगं
यार॥३॥ कवित॥ केशवदास सविलास
मंद हास जन अवलोकनि अलापनि कौ
आनंद अपार है॥ वहिरति मान अरु अंतर

क गोपिकामै देवनामी सोनेसे सरीर सब सोंधे
कीसी वास है ॥ राग गंधार ताल ॥ ३ ॥ कवित
प्रथम सकल सुचि मजन अमल वास जाव
क सदेस केस पास को सुधारिवौ । अंग राग भू
षण विविध सुख वास राग कजल कलित लो
ल लोचन निहारिवौ । बोलनि हसनि मृदु चा

रा॰ गे॰
के॰

कौसै मान कोसै मघ मह्रो मोहि मन भायो है
थलसै अचल सील अनल सेवलचित जलसे
अमल तेज तेज कौसै गायो है ।। केशवदास
बसत प्रकासके प्रकास घोघ घरघर घट
घट घेरु घनो छायो है ।। रति कीसी रति ना
थ रूप रति नाथ कौसै कहै केसो राइ रूठ

5

५

नि सात उनि रनि विपरीति निनिकौं विविधि विचा
रहै । छूटि जानि लाज जहां भूषण हदेस केस
छूटि जात हार सब मिटत सिंगारहै ॥ छूजि छू
जि उठैं रनि छूजे नति स्वन षग सोई नौ सुरति
लषि औरु विवहारहै ॥ राग गंधार ताल ॥३॥
कवित ॥ तान कोसो गात सब वल वल वीर

रा.गं.
क.

देवता वषानी है ॥ ऐसी बानी कौंन जन मांनी स
नि मेरी गनी उनके तो तेरी बानी वेदकी सी बां
नी है ॥ राग गंधार ताल ॥३॥ कवित ॥ कैधौं
बरह काज कैधौं कूसेन सषा समाज कैधौं
कछू आज बन बासर बिमानतैं ॥ तीनोंतैं न सो
य किधौं काहूसों भयो बिरोध उपज्यो प्रकोप

6

६१

कौन पढि पायो है ॥ राग गंधार ताल ॥ ३ ॥
कवित ॥ बोली को सो पान तेहि करत संवारि
बोई दर्शन ज्यों तोही मांझ सुरती समनी है ॥ ते
रे मनोरथ भगीरथ पीछे पीछे डोलत गुपाल
तेरी गंगा कोसो पानी है । तेही नित्य देवता
पै पायो पति केशवराय पतिनी वडुन पति

रा॰गं॰
कं॰

केशवदास नासै उरी दीपकी सिषा सोहैरी उरा
वति नील वास्ह उति श्रेग श्रेगकी। पौन पानि
पंछी पशु वासैमे सवद सति जिन तिन चौंकि
चौंकि चाहै चोप संगकी। नेद लाल श्रागमम वि
लोकै कुंज जाल वाल लीनी गनि नहि काल
पिंजर पतंगकी ॥ राग गंधार ताल ॥ २ ॥

कियौ उरग्रवदाननैं। हावे मैन देह कियौं मोहू
सों कपट नेह कियौ देषिमेह प्रतिउरे अथिराननैं-
कियौ मेरी प्रीतकी प्रतीत लेन केशोराय प्रजहू
न आयमन ह्यौं कौने बाननैं ॥ राग गंधार ता
ल ॥२॥ कवित ॥ वेदन विटवप कोमल वि
मल दल ललित वलित लता लपटी लवंगकी

रा॰गो॰
कं॰

न मनायो मन ऐसी नोहि बूझि पज पीछे प
छितात है ॥ रागगंधार ताल ३ ॥ कवित ॥ श्र
वन ज्यों सूझत न कानन तें सुनियत जैसे
केशोराय नमलोगनमें गायेहैं ॥ वेमकी
विसारे मूधी काकज्यों भ्रनन फिरैजूठे सी
ठे सीत घात ईठ डीठ हायहैं ॥ हरिहारी करतहै

कवित्त ॥ वारवार वोल्यो जव वोल्यो न विहंमित
व वालक ज्यौं वोलिवे को कत विललात है । ज्यौं
ज्यौं परे पायन त्यौं पाहन ते पीन भयो हीन कहा
किये सव साधन सौं गात है । केशोदास सव छा
ई कीनो हठ हूं सौं हेत तोहू छाडि जिय जिये
विन कहा जात है ॥ ऐसे प्यारे पियहूं कौ मान्यो

रा॰गो॰
कं॰

नि फूल माल नोरि डारी बीरा बगराइकै। लैलै
दीह सास तजि विविध विलास हास केशव दा
सहै उदास चली अकुलाइकै। सेइकै संकेत सू
नो कान्हजू सों बोली ऊनो मो सो जोरे कर हूनो
हूनो उरवपाइकै॥ रागगंधारनाला॥ कवित॥
लीने रूप मोल अनबोली आईजा मो मोहू मोहि

१

दौरि दौरि गहे पांय जो नैंन कठोर ठौर जानि जि
य पायै है । काको घर घालवे को वसे कहा चंनस्या
म हूं हूं ज्यों उमन आन मेरे घर आये है ॥ रागं गंधा
र माल ॥ ३ ॥ कवित ॥ देषति उदयि जान देषि
देषि निज गात चंपक के पात कछू लिष्यो है व
नाइ कै । सकल सुगंध धारि हरि काको मोरि श

रा.गं.
क.

कवित्त। नैनन की अनराई बैनन की चतुराई गा
न की गुराई नडग्रनि डुनि चाल की ।। अपने चीर
त्रनिके चित्रन वचित्र चित्र चित्रनी ज्यौं सोहै साथ
छबि का उआल की। वेद के समान चारु चाय सोच
की फिरनि करकै निहारे मृगनैनन की पालकी
कौ जैपै पान आगा प्यारे आई है जु आई अलबेलि

घन स्याम घन माला वोलि लाई है। देष्यो है है उ
घ जसोदे ह ऊन देषी परै देवकी के से वाटके शोदास
नी दिषाई है। ऊंचे नीचे वीच कीच कंठकनि पीरे
पग माहस गयंद मनि भनि सषदाई है। भारीय
ह कारी निसि निपट अकेली नम नाही आए
नाथ साथ प्रेम जम हाई है।। राग गंधार माल।।

रा॰ गो॰
क॰

दृज्यौं ॥ तिमर वियोग भूले लोचन चकोर फूले
आई वज्र चंद चंद्रावलि चलि चंदज्यौं ॥ राग
गंधार ताल ॥ २ ॥ कवित ॥ उरजन उरग
चपत फनि चरनन देषति विविध निसिचर
दिसचारके । गन तिन लगन मंमलधार घननि
न फिल्लीगन चोष तिरचोष जलधारके ॥ जा

गवालि कालकी ॥ राग गंधार ताल ॥३॥ कवि
त ॥ चंदन चढाइ चारु अंबरके उरहार सुमन
सिंगार सोहैं आनंदके कंदज्यौं । वारो कोरि रति
नाथ वानामें बनाय गाथ स्याम मराल साथ
वानी जगवंदज्यौं । सौकि सौकि चकई सी सौति
निकी हती वली सोतें भई दीन अरविंद उनि मे

नीकेहूं को लागत हैं सीताजू को हनगीन कैसे
उर आनिये। आंखिन जो देखियत सोई सांची
केशवदास कानन की सुनी सांची कबहूं न मा
निये। गोपाल की उलटाप यौं ही उलटावति है
आज लौं नो वैसेई है काल्हि कौन जानिये ॥
इति राग गंधार कवित समाप्ते ॥ शुभं ॥

नैनिन भूषण गिरन पट फाटनन कैटक घटक
उरउरज उजारके। ऐतनकी एकहूं नारि कौनपै
नै सीषी यह जोग कौसी सार अभि सार अभिसा
रके ॥ राग गंधार ताल ॥३॥ कवित ॥ हरिमे
हि नसौं भ्रम भूलि हून कीजे मन हांनो करिहि
य हूं है हौन हित हानीयै। लोकमै प्रलोक प्राति

ग॰ भै

रूप कीसी माला प्रेमकीसी माला आज लौन दे

खी सुनि जैसी आज दीसी है ॥ रागिनी भैरवी

कविन नाल ॥ १ ॥ वेवल न हूजै नाथ अवरान

हूजै हाथ सेवे नै ऊमारि काऊं सकनो सवा

योज ॥ मंद कयौ दीपडुति वेदसाव देविय

न दौरिकै उराई आऊं हारने दिया योज ॥

रागिनी मैंथकी कवित नाल ।३। सकता मति
न कीं है मक्र थरी सी नाक देत दासौं दामनी ह्र
सनी वनी सी हैं । मोहनके मेचनके श्रवणानकी
मोरेष भ्रकुटी सवेष भाव भेद कवि छ्रोसी है ।
वित वनराई उजकीसी उजकेसे ग्रह ऊंचव स
ऊंचौनो नैन जैसे उजकीसी हैं ॥ केशवदास

रा॰मं॰ अबलौंनो देषतिही इहो कछुडुनो नही अबहूंते
देषियत उरउठ नयोहै । रहस्मि रिविलन गई नो
ने जंघभारी भई कियोयाते वाजभयो महा वर
दयोहै । आंषनकी मेरी फाटनसी आवनहै जा
ननहीं रीढ़ लागि केशो झंकि गयोहै ॥ रा
गिनी मैंथवी कवित नाल ॥२॥ सवैदै

मृग जमराल बाल बाहिरै बिहारि देषें भावो न
मैं हे केशव सुमोह मन भायो जू। छलके निवा
स ऐसे बचन बिलास सुनि मैं गणो सुरनि हेने
स्याम सुबे पायो जू॥ रागिनी मैं यबी कवि
न ताल ।३। इत उत चाहि देषो जब कोऊ छि
ग नाहि बार बार जिय कहो हिये कहा भयो हैं।

रा-मैं

यौं रसिक नए यामें कौन रस है ॥ राधिका नी मैंथ
वी कवित्त ताल ।३। प्रथम सकल सुचिमज्ज
न अमल वास जावक सुदेस केस पास को सु
धारिबौ । अंग राग भूषन विविध मुखवास
राग कज्जल कलित लोल लोचन निहारिबौ ।
बोलनि हसनि मृदु चालनी चलनि चारु पल पल

मालीन बीच दैंकै सौंहैं घायकै घवाय कछु स्वार
बर कीनी बस बसहै। कोमल म्रनाल कासी म
लकाकी मालकासी बालिका ज्जहारी मोडि मा
नस किपस्है। जानैको बिभात भयो केशव स
नै कोबान देषी आनि गात भयो कियौं भ्रमहै।
चित्रसी ज्जराषी यह चित्रनी बिचित्र गति कहैो

मैं॰रा॰

यि विवाहहै। कूटिजाति लाजजहां भूषन हदेस
केस टूटिजात हार सब मिटत सिंगारहै ॥ कू
जि कूजि उठें रति कूजि नति खवन घरा सोईनो ह
रति हाथि थ्रोक विवहाहहै ॥ रागिनी सेंधवी
कविन ताल। ३। तान कोसो गात सब बल
बल वीरकोसो मान कोसो सावमहां मोहि

4

८

अति पतिव्रत अति पारिबौ। केशवदास सविला
स करहु ऊपरि नाये इहिविधि सोवहु सिंगारनि
सिंगारिबौ॥ रागिनी मैंथवी कवित ताल ३।
केशवदास सविलास मंदहासजुत अवलोकनि
अलापनिकौं आनेउ अपारु है। वहिरनि सात अ
रु थेनरनि सातअनि रति विपरी तिनिकौं विवि

गा-सं

देषीहै गुपाल एक गोपिका अनूप रूप सोने नेस-
लोनी नाम सौंपे नेसवारीहै। सोभाई सुभाई अवतार
लीनो घनस्याम कियौं यह दामिनी यौं कामनी
कौ आईहै। देवी कोई दानवीन मानवीन होय ऐ-
सी मानवीन ह्वाइ भाइ भारती भफाईहै। केसोदा-
स सब ह्वाव भावनकी सिद्ध यह मेरे जाने मैन

5

4

मन भायो है। थलसो अचल सील अनल से बल

विन जलमे अमल तेज नेज कौसो गायो है। के

शव दास वसन अकासके अकास घोष घर घर

घट घट वेह वनो छायो है। रति कोसी रति ना

थ रूपरति नाथ कौसो कहो केशवराइ कूठ कौ

न पहि पायो है॥ रागिनी सैंधवी कवित ना१३

रा॰मं

बना बषानीहै। ऐसी बानैं कौनजुन मानी ह्वनि
मेरी गानी उनके तो तेरी बानी वेदकीसी बोनीहैं।
रागिनी मैंपवी कवितनाल।२॥ कैधौ गदह
काज कैधौ छूटोन सभा समाज कैधौ कछू आ
ज अनवाम्हर बिमानतै ॥ दीनोनैं नसोध कि
धौ काहूसो भयो विरोध उपज्यो प्रबोध कि

ह्वै मैं मैनका की जाई है । रागिनी सैंयबी कवि
न नाल ।२। बोली को सो पान तोहि करत मे
वारिबोई दर्पन ज्यों तोही मांझ न्हानी समनी है ।
तेरे मनोरथ भगीरथ रथ पीछे पीछे डोलत न
पाल मेरे गंगा को सो पानी है । तेही नियदेवता
पै पायो पति केशवराय पतिनी बडून पति दे

रा॰ मैं

वेगकी। केशवदास नाम मै झरी दीपकी सिषासी

दौरी डुगावति नील वासहु तनि ग्रेग ग्रेगकी। पौ

नपाति पंक्षी पसू वास मै सवद सुनि जित तित

बौकि बाहै चौप सेगकी। नंदलाल ध्यावम विलो

कै कुंज जाल बाल लीनी गनि नहि काल पिंजर

पंछेगकी॥ इति रागिनी मैंयवी संपूर्ण॥

7

८५

पौ उर अवदाननैं । सहावैमन देह कियौ मोह
सौ कपट नेह कियौ देषिमेह अति उरै अपिरा
ननैं । कियौमेरी पीनकी प्रतीत लेनकेशोराय
अजहूंन आयमन सुयौं कौंन वाननैं ॥ रागिनी
सैंधवी कवित नाल ३ । वेदन विटप वप्रको
मल विमल दल ललित वलित लता लपटी ल

ग॰ है

विलसता बनरे । ऊधो जे पद सेवत बीते कल्पज
ग सो कुबजा उरला बनरे । ज्यो सुख ब्रह्म लतो
कमै नाही सो कुबरी सुख पावतरे । सगरे ब्रज
को राज दीयो है हमे लखि जोग पठावतरे । रा
गिनी मैं पची हमरी नाल । ३ । हरि सुख मो
र नीर लीयो नवनै भवन नहीं भावतरे । गावै सु

गागिनी सैंयवी हुमरी नाल ।३। सोवराजी हो

हो जामो प्यारो जान । इनमानी परमानडीग्रा

या झूटो करो क्को वाखान । प्रकट प्रकार करी

क्केक जरा पीकलोक प्रयरान । इनमैं झूठ न

ही निलजीकाई रंगीला मीनमरी ग्रान । गागि

नी सैंयवी हुमरी नाल ।३। कवन ववन

रा॰ भैं॰

मन राम कृस्न राम कृस्न ध्यावरे सोई । महाजपक
रेरे वेहरि प्रसन्न होवेंगे । मनवच क्रमसौ याद क
रोरे । ज्ञान करो भव पार परोरे । प्यारेरे करुणा
सागर तिन पालो सब संसाररे । ऐसे मधुसूदन
मुरारेरे । रागिनी भैंरवी ठुमरी ताल । ३ ॥
मोरी गली पाय केरा जो हो मोरी रा॰ । रुष्यो यो

दरमै कहै याकी सोवस कवहुन आवनरे । रा
गिनी मैं थकी हुमरी नाल । ३ । तेरोगान अपरं
पार । अंत अवंत जिनरच्यो है ब्रह्मंड अदजो नि
निरंजन निराकार । जाकों कोउन पायो पाररे ।
निगम गावै पारन पावै ब्रह्मा महादेव उचरे । ध्यानध
रे जाको पंचानन श्रीपत जश अंत अभै भक्त दातार

रा॰ सं॰ सैंधवी ठुमरी ताल । ३ । कारीरे वदरीया राम

कैसी उमड आई । सावन की रित आई पीया

मिले वनयाई । अरे वहे अरवे आमन भावन वि

ना सना मंदिवाह्रो राम कैसी । रागिनी सैंधवी

ठुमरी ताल । ३ । उमगो उमगो आवे गोरीया

जीया राखमारह्रो । कहा करे कछु वमन

वफकर आप मोरे वालम लोक जाने श्रमराव
हो । रागिनी सैंधवी ठुमरी ताल । ३ । नई लगा
न हमजानीरे । जोतुम रसीयो वोली वोलै तुम
हूंने नारमयांनीहो । रागिनी सैंधवी ठुमरी ता
ल । ३ । मैंगावैं नही जईहूराम । जोगवनेको
वानवलैहै तापर टौना वलैहूराम । रागिनी

4B

ह्री मेरो तन कारो मन पीय राह मारहो ॥ कृस्ना
नेट सकत नह्री रोके मोह्री लीयो हेसह्री यराह
मारोह्रो ॥ इति रागिनी सैंधवी ठुमरी समाप
तम् ॥

रा॰सैं

वनजारा ।१॥ रागिनी सैंधवी गजल ताल ।३। गार

ईन लक्ष वीवनजारा और खेपभी नेही भारीहै । अ

य गाफिल तुजसेभी वढ़का एक और वड़ा व्योपा

रीहै । क्याशक्कर मिसरी कंद गिरी क्या सांभर मीठा

खारीहै । क्या दाख मुन्नका सोंठ मिरच क्या केस

र लौंग सुपारीहै ।२। रागिनी सैंधवी गजल ता॰३

रागिनी भैरवी गजल ताल ।३। टुक हिरस हवा को
छोड मियां मत देस विदेस फिरे मारा । कज्जाक अ
जल का लूटै है दिन रात वजा करन कारा । क्या भै
सा वधिया बैल शुतर क्या गौने पल्ला सिर भारा ।
क्या गेहूं चावल मोठ मटर क्या आग धुआं क्या अं
गारा । सब ठाट पडा रह जावेगा जब लाद चलेगा

ग॰में॰ दिसमका भोंडाहै बेहक सिपर ग्रोर खोडाहै। जब

नाइक तनका निकल गया जो मलकों मलकों

होठाहै। फिर टोडाहै मे भोंडाहैने हलवाहैने मोडा

है ४ रागिनी सैंधवी गजल ताल। ३। जबचलने

चलने रस्तेमें यह गौन नेरी छलजावेगी। एकव

पीया नेरी महीपर फिर चरने ग्रासन ग्रावेगी।

२

नेवपियाला देवैल भरेजो हरव पंक्षी म जावेगा ।
या मूद वफा कर लावेगा या घाटा वादा पावेगा ॥
वटमार ग्रजल्का रस्तेमे जव भाला मार गिरावेगा॰
धनदोलत नानी नोना क्या एक भ्रनगा पासन जावे
गा । रागिनी सैंधवी गजल नार । ३ । इस मेंजिल
मैं शव साथनेरे यह जितना डेरा डाडा है । जरदा म

गा॰सै

क्या घोड़े जीन सुनहरीं के क्या हाथी लाल अंबारी के ६ रागिनी सैंधवी गजल ताल ।३। जो खेप भरे ले जाता है यह खेप मियां मत जान अपनी । अब कोई घड़ी पल सा यतनैं यह खेप बदन की है खेप नी । क्या थाल कटोरा चांदी का क्या पीतल का फ़ कना फ़कनी । क्या बरतन सोने रूपे के क्या मही

३

यह खेप जो तूंने लादी है सब हिस्सों में बह जावेगी·
धी पूत जवाई बेटा क्या बन जारा न पासन आवेगी·
५॥ रागिनी भैरवी गजल ताल ३ । क्यों नाहक
बोझ उठाता है इन गोनों भारी भारी के । जब का
ल लुटेरा आन पड़ा फिर दूने हैं ब्योपारी के । क्या
साज जड़ाऊ जर जेवर क्या गोटे थान कीनारी के·

रा॰मै॰ कब्कु कामन आवेगा मेरे यह लाल जमर्रद सीमोज
र। सब मूजी वाटमें विखेरेगी जब आन बनेगी जो
ऊपर। क्या मसनंद न किए मलक मकां क्या वौ
की ऊरसी तावन स्वानर। क्या माल खेजाना खल
क मकां दौलत हशमत फौंज लशकर।२। यागि
नी मैं पवी गजल नाल।३। यह भ्रम घड्का साथ

की हडिया वपनी ७ रागिनी सैंधवी गजल ताल ३

मगरूर नहो तलवारों पर मत भूल भरोसे फालो के

सब पता तोड़के भागेंगे मह देख जलके भालों के।

क्या डिबे हीरे मोती के क्या फेर खजाने मालो के।

क्या डूक चेता शाम्र गजपर क्या तखेने शाल दुशा

लो के ८ रागिनी सैंधवी गजल ताल ताल १३॥

रा॰र्से

रेननका पोला। नूझेवी गाढो उठानाहै यहो गोरग

ढैने मरर खोला। कारेनी खेन्द करन्द वहोकाको

ट केग्रग ग्रम मोला। क्या उजे रहैला नोपकिला

का शीशा राहुरौर गोला ॥१॥ रागिनी सैयवी

गजल नाल।२। अब काल फिराकर गावक को

यहू बैल वदनका होके गा। कोई नाज समे टैगा

5

५

लिये क्यौं फिरता है जंगल जंगल । एक भूमगा
पासन आवेगा मौकूफ हुआ जब अन्न और जल ।
घरबार अटारी चौपाए क्या खासा नन स्हावे क्याम
ल मल । क्या चिल बनत कीथे रेशम के क्या ला
ल पलंग का रंग महल ।१०। रागिनी भैरवी गा
जल ताल ।२। क्यौं अखतम को बनवना है खेमने

ग॰ मै॰

बीज किसीकी खहीहै । कच्छ पकताहै कच्छ भन
नाहै पकवान मिठाई पहीहै । जब देखा ह्रवतो
आखिर कोनेलङ्गा भाउन भहीहै । गलयोर बहू
ला आगहवा ओरकी वडपानी महीहै । हम देख
ड्रके हैम डनियांकी सब योखे कीयसीहीहै । कोर
नाजख दीदे हैम हैम करकोर नाखनगा उखनघा

6

तेरा कोई गौन सिथि और टोकेगा। होफेर थके
ला जंगलमें तबाकल इदकी फाकेगा। उसजं
गलमें जब आहन जीर एक भनगा आनन झोंके
गा ॥ १२ ॥ रागिनी सैंधवी गजल माल। २ ॥
यहपैठ अजाबहै दुनियेंको और क्या क्या जिन
स रूकतीहै। यही मालकी सीका मीटाहै और

गा॰सै॰

न खेरीदै है औैर किसने जिनस उतारी है। जबदेखा

खबती आखिरको दलाल न कोई ब्योपारी है॥१३

रागिनी सेंधवी गजल ताल ।३। कोई फलकके बै

ठे मसनेदपर कोई रोवे अपनी दौलतको। कोई

बोले अपना मुजमेलो और मेरा है सो मुजकोदो।

कोई लडता है कोई मरता है जगडे हक और नाहक

नाहै। कोई कपडे रंगे पहरतो है कोई गुदडी ओढे जाता
है। कोई भाई बाप चाचा मामा कोई माती सनकहा
नाहै। जब देखा खूब तो आखिरको मै रिस्ता है ने ना
नाहै। गुलशोर। कोई सेठ महाजन लाखे पतीज
बजाज कोई पम मारी है। यहां बाजा किसीका ह
लका है और खेप किसीको भारी है। क्या जाने को

रा॰भैं॰

मत हीला मकर बहाना है १९ रागिनी भैरवी ग
जल ताल ।३। कोई लोटे कूबे गलियोमें तैयार
किसीका वेरा है । तिनकजीये जगाडे रहेहै यह
मेरा है यह तेरा है । जब देखा हुवतो आखिरको
न मेरा है न तेरा है ।२०। रागिनी भैरवी गजल
ताल ३ ।। कोई टोपी टोप वनाता है कोई बाबा कि

को। जबदेव खूबनो आखिरको कछु लेना एक
नदेना ।५। रागिनी मेघकी गजल ताल ।३। रसा
ल नजमीआ मिलतैहै और फाजिल खला खाना
है। कोईआ मिलको तिल दाना कोइ मस्त सि
आ दीवाना है। नावीज फतीला फाल फसे और
जादु मेनर लाना है। जब देखा खूबतो आखिरको

रा.से.

आखिरको सब छोड अकेला जाताहै ।१४। रागि
नी सैंधवी गजल ताल ।१। कोई रोताहै कोई ह
सताहै कोई नाचेहै कोई गाताहै । कोई छीने ऊ
पटैले भागे कोई योसका डर दिखेलाताहै । को
ई माल इकठा करताहै कोई केजी ऊलफ लगा
ताहै । जब देखोहुवतो आखिर सब ऊजाडारहा

9

रा ग्रम्मामाहै । कोई साफ वरहना फिरताहै है ने परा

डी नयाजामाहै । कमखाब गाजी और गाढेकानि

तक जीयाहै हंगामाहै । जब देखा साहबनो आखि

रकोने पगडी हैने जामाहै । १८ रागिनी सैंधवी

गजल नाल । २ । कोई बाल बढाए फिरताहै

कोई सिरकी चोट सहताहै । जब देखा साहबनो

ग॰मैं

मैंधवी गजल ताल ३ । कहीं वलीटेको घूमी
है कहीं खोसो कउवको झलीहै । कहीं चलती
खाज पिटारीहै कहिं बुलबुला वको झलीहै । तर
कारी बैंगन साग हरा गुड गाजर मूलीहै ।
जब देखा तब तो आखिर को सब बिकरी देख
न भूलीहै । रागिनी मैंधवी गजल समापतम

10

जानाहै ।२०। रागिनी सेथवी गजल ताल ।। ३ ।।
कोई वेचे भंग मसाव अफ यूम कहीं हथ दही
की फेरीहै । कोई पला सिर पर लानाहै कोई
लादेवे लमकेरीहै । कोई जगडे अपनी जागा ए
र यह मेरीहै यह तेरीहै । जब देखा खूबतो आखि
र कोन तेरीहै न मेरीहै न तेरीहै ।२१। रागिनी

रा॰ मैं॰ टप्पा ताल १३ सयाने वेलि याँवे हरतयां वसदलो
क विगाने। मित्रन करदि वाखिवे पैयों नापत्र
हीवे मियां रववकरेन सिमडे श्रावो नैयनादे ॥
रागिनी सैंधवी टप्पा ताल १२। केहाजाउडा
कीता वेदिलत्र कदर ना जाने दर कदरू मियां ॥
वेषनन मुश्ताक जिमेरा इस्क लगा मन लीता

रागिनी सैंधवी टपा ताल ।३। तोडे वेखेन दितो
गमेन । वढवेषां वारिवे राजनन् हयौं वेसोमार
वह्मनले साडी वेरा ॥ रागिनी सैंधवी टपा
ताल ।३। आया निस भालवो रांजनयार कि
डूयंतेनयार । हीरनि मानिनकिनकि फक्र
दाणीह दिल दिहूई आंसार । रागिनी सैंधवी

रा॰मैं

न छोडि मियां सोई गनि मन ईमान प्यारोदा ॥

रागिनी मैंथवी टपा नाल ।२। कि जालमाडि

वे मियां यो किसदी यारीदाले विसडदे नालन

जाने नामन जानेकी करदे । माव वेखोनेडा

सांवरे योमैडियाने जिंदडी दिवानी मैंडा जिंड

रे ॥ रागिनी मैंथवी टपा नाल ॥ ३ ॥ ॥

दिलनूं ॥ रागिनी भैरवी टपा ताल । ३ । चलउ
ठकर दीदन यारा मियां । दीदन यारेदा आमदा
मोटा मियां । राग वद्धारो लिवे वेषन चलिए हो
मियां मैंडा दिल परदा वजार मियां । रागिनी भैं
रवी टपा ताल । २ । देखणा दिदार जांदा पर
ले परखोयले खमियां ॥ खोटा खरा परखो

रा॰ भै

मार चला कीआं छोडि चलावे मजन्‌ इस्क गरीबां
कीआं मियां । ईयाविदा यद सनमेरी दाहे फिर
याद सो मेरी मियां ॥ रागिनी भैरवी टपा
नाल ।३। विडनदा परवे लावे भला मियां वे
सानू चाक चाक जवाबां भोरा कोई वे ॥ ओरा
नियांदा साडे चरवे शोरी लगि मरहवन पाक

जाउ शक मालकी नाये। इस्क लगा मैंडा जीनर

मोदाके हाहाल जिगर परवीनावे। रागिनी मैं

यवी टपा नाला २। कौनगानभई मोरी ग्रान

ना मिलै पियामोकों। उन बिन कलन परन

प लछिन कैसेरगा बिहाय ग्रान मिलें पिया

मोकों॥ रागिनी मैंयवी टपा नाल॥ २॥

रा॰ सैं॰

सखि आंखी मेरे प्यारेनू गान किथेवे गारिओ । आ
पखुडजावे बारिनाल मंदी हेसफूड थकें दी
मैंहारिओ ॥ रागिनी सैंधवी टपा नाल ॥ ३ ॥
कीता वेकरेजा सारदा गम खोखा ॥ कोछ
कूदेवारीआ जयदिल वेकरारदा हैंनो यारि
यांदे नाल गुजारदा ॥ रागिनी सैंधवी टपा

४

रागिनी सैंधवी टपा नाल ।२। होवे फोलाम
न परवांदियो । श्रोष लडेदिम माकमोंदि वि
न वछयो दियो होवे फोलामे । रागिनी सैंध
वी टपा नाल ।२। जिंद मोडियां रांदे नाल त
गिवे । श्रदांरंगा वे जदमैं पावांगारे लगावो विन
डिवेश्रो मैवणी । रागिनी सैंधवी टपा नाल २।

रा०सैं

थवी टपा ताल । २ । पलक टरे माञ मेरा सा
ई ॥ जो चाहे जग राज कर वोई करसम ऊदरन
ऊसि नाई । रागिनी सैंथवी टपा ताल ॥ ३ ॥
भई लीझे बांमरी विन देखे नेकना सहाय ॥
जब ते गमन कीनो विदेश वा भवन भावे क
छु नहिं वा ॥ रागिनी सैंथवी टपा ताल । ३ ॥

5

५

ताल ।३। तोरि नगरियामैं ना रहौंगि तेतो ग्र
ननकरा रस भोगा। सदारंग रस रंग कराई ह
मकौं दीनी वहुत वियोगा। रागिनी सैंधवी ट
पा ताल ।३। आज तोरन गाजै आये पियारवा
वर मेरे। अंग संग रंग लागै प्रगट डरावत गात
छिनल छिपल जपकत आपडैं। रागिनी सैं

ग·भै

साथ साथ सानी यापम गरे ॥ इति रागिनी भै-
रवी टपा समापतम् ॥

6

मग मप मेरे मगेरे पानि सामरे सानी । पगमे
परें परें पगापम पामरे सामरे सानी । सारेगा
ममे मगारे मगामें पाम पाम पेप पानी । साप
साप पगापरे मदारेग मोरी पकन मानी ॥
रागिनी भैंरवी टपा ताल । ३ ॥ पगामपरि
सानि परे मपगापरेरे । री समाप ह्मेवे गानि

गा॰ मैं

सी गोकुलचंद । कंचनको दीयम गाउंपे नगानज
उन बकुरंगा । आनंद भये नंदजीके उआरे सेवा
गंद्रद लियाई मालन । कुसम कवरने जनम ली
योहै नंदमहर घरपालन । गाविनी मैंथवीज
गालछंद नाल । । तेरो अटल रहीलो राज
पियारे महमद शाह पीया जमजम निन नित

१२१

रागिनी मैं थवी लोरी गाल। ।लोरी लालको दे

ऊ माई कबकी ठाडी ठाडी परवाऊ। छुन किन

छुनकार गाऊ बजाऊ अगर चंदनका झूला झु

लाऊ। लालको देखे सखी सब लोगीओं। अग

र चंदनका झूला झुलाऊ रेशम दीओं बंटे डो

रीओं। झूलना। नवल हंदोरना माई झूला

२

रा-मै

दीम नदर दानी । यालाली याली यालालोम या

ला लालाले लोम् यालाले लोम् यालाली याले

दिर नोम् नोम ननाना नोम् नाना नाना नाना ना

दिर दिम ननाना दिम नान नाना दानी । रागिनी

मैंथवी मादानाला । ।वडो खबीर रवयोर गाउ

लंककोमंगलक्रमन वडो यन्तुरव यारी । पम्र

२

नाखेन वैठके इन मिल काज । गाइन गणेशोन

न्द बहीलवा सभमसषी श्रन मिलकरनजबबस

हारेंग मिल गाऊ बजाऊ मोन नेहूरमदी लरो माऊ

गागिनी मैथवी नवाना नाल । । दानी उदे नाना

दिरना दीम दिम न ना ना ना ना ना ना ना ना दी

म दानी नादिर दिर नम दिर दिर नम दिर दिर

रा॰ मैं

कना बिराज पीया महल साबो होड़ै नैननमैं भ
रे। रागिनी मैंधवी टोना नाल। । टोना का
मन कर् समझा के कारू देसना जावरे ॥ जैव
मेव डार सावीरी हरके नीको पीया गर लावे र
इति रागिनी मैंधवी लोरी फूलना जगलके द
नराना सादरा जन टोना समापतम शुभं ॥

दल ग्रह माहो जोधा वली लीये एकने एक वल

अधिक भारी । मेघ घरनी घरयो महर बादर छ

पिठे हाथ पैखोन लीये पखारी । होर वज्र औार

जव मार लेका लई सकल संसार जैजै अकारी ।

जत । नवेली अकेली चलो स्याम मथ माती

लेगर जाये । गागर भर भर घर आवे मोरा क

गा-ष-

लासी गोकुलचंद। केवनको दोष्म गाइये

नगान जउत वड़रंग। आनंद भये नंदजीके ड्या

रे मैया गेंद लियाई मालन। कुलकवरने जन्म

लीयोहै नंद महर घर पालना। गाग षट् ज

गलछंद नाल। । नेगे घटल रहीलो रा

ज पियारे मह मद शाह पीया जम जम नितनित

राग षट् लोरी तिताराइ ॥ लोरी लालको
देऊ माई कवकी होडी होडी परवाऊ । छ
न किन छनकार गाऊ बजाऊ अगर चंदनका
झूला झुलाऊ । लालकों देहो सखी सभ लोरी
अं । अगर चंदनका झूला झुलाऊ रेशम डीअों
वंदे डेरीअो झूलना । नवल हेदोरना माई झू

रा.ख.

दिरदिरदीम नदरदानी। यालाली याली या

ला लोम याला लाला ले लोम यालाले लोम या

लाली याले दिर लोम नोम ननाना नोम नाना

ना नाना ना ना दिरदिम न ना ना दिम मान नाना

दानी। राग षट् मादरा ताल ३। वीरगवीरव

धीरगर्ड लेककोमंगलदमण वदोयजुषधारी पद्म

३

नवेन वैठके इन मिल काज । गाइन गुणीओ

नेद वह्नीलवा सभ सषी भुन मिल करन जवब

मदारेग मिल गाऊ बजाऊ मोन नेहर मदील

रो साज ॥ रागा षट् नरााना नाल । । दानी

उदे नाना दिरना दीम दिम् तना नानानाना

नानाना दीम दानी नादिर दिर तुम दिर दिर तुम

रा-घ-

ना विसाज पीग्रा सहप मावे रे ढोडो नैननमेंम

ये। रागघट्टोना नाल। ।टोना कामनकर

सम जावे रे काहू दे मना जावे रे। जेत्र मेवड्रा

र सावोरी इक्के नीको पीग्रा गरलावे रे ॥

इति रागघट्टोरी फूलना जगलछेद नरा

ना सादराजनटोना समापनम् ॥ शुभम्

7

दल अष्ट मांहे जो यावली लीये एकने एक वल

अधिक भारी । सेस घरनी घस्यो स्हर वादर ब्र

पिडे हाथ पैवांन लीये परवारी । दोरव ऊर्ध्व

रजब मार लेंका लई सकल संसार जैजै अका

री । जन । न वेली अकेली चलो स्याम मथमानी

लेगारजाये । गावार भर भर यर आवे मोरा कह्ल

रा.ष.
ठु.

वनरे । उधोजे पद मेवन वीते कलप जग मोक्ष

बजा उवला वनरे ॥ ज्यो स्वाव ब्रह्मलोक मैं

नाही सो ऊवरी स्वाव पावनरे ॥ सगरे ब्रजको

राज दीयो है हमे लाव जोग पठा वनरे ॥ रा

गषट् ठुमरी ताल ॥ २ ॥ हरि स्वाव मोर ती

रलीयो नवनै भवन नही भावनरे ॥ गावै ग्र

अथ राग षट् ठुमरी ताल ।३। सोवराजी होछे

जात्यो प्यारो जान । रजमानी परभातडीआया

झूठो करो क्ोवखान । प्रकट प्रकार करी छे

कजगा पी कलंक अथरान । इनमें झूठ नंही

निल जीकोई रंगीला प्रीतमरी आन ॥ राग ष

ट् ठुमरी ताल ॥२॥ कवन ववन विलना

रा॰घ॰
ठु॰

मन राम कृल राम कृल ध्यावे सोई । महाज
प करे वे हरि प्रसन्न होवैंगे । मन वच क्रम सों
याद करोरे ज्ञान करो भव पार परोरे । प्यारे रे
करुणा सागर जिन पालो सब संसार रे ऐसे म
धुसूदन मुरारे रे । राग घट् ठुमरी ताल ॥ ३ ॥
मोरी गली पाय फेरा जो हो मोरी गा॰ ॥ हथ्यांयो

दरमै कहै याकी सोवस कवहून आवतेरे ॥ राग
घटु हमरी नाल ॥ २ ॥ तेरो गान अपरंपार ॥
अत अखंड जिन रच्यो है ब्रह्मंड अदजोति निरंज
न निराकार । जाकौं कोउ न पायो पारे ॥ निग
म गावै पार न पावै ब्रह्मा म्रव उचरे । ध्यान धरे
जाको पंचानन श्रीपत जस अत अभै भक्त दातार

रा॰ष
टु॰

टुमरी ताल ॥ ३ ॥ कारीरे बदरीया राम कै
सी उमड आई । सांवनकीदिन आई पीया मि
ले वन धाई । औरे बहे अबै आमन भावन वि
ना सूना मेंदिवाहो रामकैसी । राग षट् टुम
री ताल ॥ ३ ॥ उमगौ उमगौ आवै गोरीया
जीयारा हमारहो ॥ कहा करें कछु बसन ।

3

बढ़कर आप मोरे बालम लोक जाने भ्रमरा वहो-

रागा घट ठुमरी ताल ॥ ३ ॥ नई लगान हम

जानीरे ॥ जो तुम रसीया बोली बोलौ तुमहू

ने नारमयो नीहो ॥ रागा घट ठुमरी ताल ३

मैं गावनै नहीं जईहै राम ॥ जो गावने कोवा

न चलैहै तापर टौना चलै है राम ॥ रागा घट

ही मेरो मन कारो मन पीय राह मारहो ॥ हस
नेर सकत नही रोके मोही लीयो हेमसहीय राह
मारोहो ॥ इति राग घट ठुमरी समापनम ॥

ग॰भै॰

२म

ग्रेतरा चलेगा तालकी पेहली में। ग्रबुर्द। २। डिड

२प २नि २सं २सं २नि २सं

डाडिड डाडा डाडाडा॥ ग्रबुर्द। ३। डिड डाडिड डाडा

२प २नि २प २पं २ग २म २पं २म २ग २रे

डा डा डा। ग्रबुर्द। ४। डिड डाडिड डाडा डाडा डा

२सं २नि २प २म २ग २रे २नि २सं

ग्रबुर्द। ५। डिड डा डिड डाडा डाडा डा॥ ❖॥

फिर स्थाई में जा शामिल हूई॥ इति ग्रेतरा॥

शुभमस्तु:॥ ॥ ❖ ॥ ॥ ॥ ❖ ॥ ॥

राग भैरव मारग संपूर्ण गत मसीत खानी ताल

धीमा त्रिताला उठेगी ताल की पहली सें स्थाई ग्रबु

२ग २म २पि २नि २सं २नि २प २नि

दा। १। डिड्डा। डिड। डा। ड्डा। डा। डा। ड्डा।। ग्रबुर्दा। २। डिड

२प २पि २म २पि २म २ग २म २पि २म २ग

डा। डिड। डा। ड्डा। डा। डा। ड्डा।। ग्रबुर्दा। ३। डिड। डा। डिड।

२रे २सं २नि २सं २ग २म २पि २सं २नि २प २पि

डा। ड्डा। डा। डा। ड्डा।। ग्रबुर्दा। ४। डिड। डा। डिड। डा। ड्डा। डा।

२म २पि

डा। ड्डा। इति स्थाई।।। स्थाई के दो ग्रबुर्द बजाकर।



रा॰भै॰

राग भैरव शुद्ध संपूर्ण गत फिरोजखानी बाली में

उठेगी। ताल धीमा तिताला॥ डा। डा डा। डिड़ डाड़ा।
(२नि २नि २सा २ग २रे २सा)

डा। डिड़। डा। ड्डा। डा डा। डा॥ अबुर्द॥ डा। डा। डा डा।
(२नि २सा २नि २प २नि २सा — २ग २ग २म २प)

ड्डा। डिड़। डा। डिड़। डा। ड्डा। डा ड्डा। डा॥ इत्यस्थायी।
(२धु २प २म २धु २ग २म २ग २रे २सा)

अथ अंतरा दोनो अबुर्द स्थाई के बजाकर चलेगा॥

ताल की तीसरी में। अबुर्द॥ डिड़। डा। डिड़ डाड़ा।
(२ग २म २प २नि २सा)

अथ भैरव राग की सितार की गत मसीतषानी ।

उठैगी खाली सें ताल थी मा तीन ॥ डा ड़ा डा डा

डा डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा डा ॥ इत्यस्थायी ॥

अथ अंतरा ॥ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ ।

डा ड़ा डा डा ड़ा डा ड़ा डा डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा ।

डा डा ड़ा डा डा डा डा ड़ा ॥ इति अंतरा ॥ ॥

२प २नि २सं २ग २म २ग २रे २ग २म २ग २रे २सं

रा·भै· डा डा डा डा डा ॥ ब्रबुर्द ॥ डिड्ड डा डिड्ड डा डा डा डा

२सं २ग २म २प २नि २सं २नि २प २प

डा ॥ ब्रबुर्द ॥ डिड्ड डा डिड्ड डा डा डा डा डा ॥ ब्रबुर्द ॥

२म २ग २रे २ग २म २ग २रे २सं

डिड्ड डा डिड्ड डा डा डा डा डा ॥ इति स्थाई ॥ अथ अं

२ग २म २म

तरा तालकी पहली में ॥ ब्रबुर्द ॥ १ ॥ डिड्ड डा डिड्ड ॥

२प २प २नि २सं २नि २प २नि २सं २सं

डा डा डा डा डा ॥ ब्रबुर्द ॥ २ ॥ डिड्ड डा डिड्ड डा डा ॥

२नि २प २प २नि २सं २ग २रे २सं २नि २प २प

डा डा डा ॥ ब्रबुर्द ॥ ३ ॥ डिड्ड डा डिड्ड डा डा डा डा डा

२नि २ध २पै २म २ग २रे २ग २म २ग २रे २सं

डाडाडा॥ अबुर्द॥ डिड डा डिड डा डा डाडा डा॥

२नि २सं २ग २रे २म २ग २रे २सं

अबुर्द २॥ डिड डा डिड डा डा डा डा डा॥ अबुर्द

२नि २सं २ग २रे २म २ग २रे २सं

डिड डा डिड डा डा डाडा डा॥ इति अंतरा स्थाई

के दूसरे अबुर्द में मिला॥ ॥ राग भैरव शुद्ध

गत मसीत खानी ताल धीमा त्रिताला उठी अ

२सं २सं २नि

थम ताल से अथ स्थाई अबुर्द १॥ डिड डा डिड।

ग. मे.

२ग २म २प २नि ३सं २नि २नि २प २पं २म २ग २रे २सं
डिड्डाडिड्डाडा। डाड्। डा। ड्डा। डा। डिड्ड। डा। ड्डा। डा। डाड्डा।

२ग २म २प २पं २म
प्रबुर्द। ४। डिड्ड। डा। डिड्ड। डा। ड्डा॥ पहिले। प्रबुर्दकी। डा

मैं। जा। मिला। प्रबल। खाली। मैं। ताल। सब॥ इति स्थाई॥

२ग २ग २म
अथ। अंतरा। हमरे। ताल। मैं। प्रबुर्द। १। डिड्ड। डिड्ड। डा।

२प २नि ३सं २नि २प २पं
ड्डा। डिड्डडिड्ड। डा। ड्डा। प्रबुर्द। २। डा। डा। ड्डा। डाड्डाड्ड।

२ग २म २ग २रे २सं २ग २म २ग २पं २म २ग
डा। ड्डा। डा। डा। प्रबुर्द। ३। डा। डिड्ड। डिड्ड। डा। डा। ड्ड। डा॥

3

२म २ग २रे २ग २म २ग २रे २सं

प्रबंदा॥ ४॥ डिड डा डिड डा ड्डा डा डा ड्डा॥ इत्यंतरा॥

स्थाई के पहले प्रबंद में जा मिला॥ ०॥ राग भै

रव षुद्ध गत फिरोजखानी उठेगी खाली में ताल

२प २नि २सं २ग

धीमा त्रिताला॥ प्रबंद॥ १॥ प्रथमस्थाई॥ डा ड्डा डा डा

२ग २म २ग २रे २सं २नि २सं २सं नि २ग

ड्डा डिड डा डिड डा ड्डा डा ड्डा डा॥ प्रबंद॥ २॥ डा ड्डा

२म २प २प २प २म २प २ग २म २ग २रे २सं

डा डिड डा ड्डा डा डिड डा ड्डा डा डा ड्डा॥ प्रबंद॥ २

लो

गा. भै.

२सं २ग २ग २म २म २ग २रे २सं २ग २म

डिड्डा। डिड्ड। डा। ड्डा। डा। डा। ड्डा।। ग्रबुर्दा। ३। डिड्ड। डा।।

२प २प २प २म २प २ग २म २ग २रे २ग

डिड्ड। डाडा। डा। डा। ड्डा।। ग्रबुर्दा। ४। डिड्ड। डाडिड्ड। डा।

२म २ग २रे २सं

ड्डा। डा। डा। ड्डा।। ग्रबुर्दा। इतिस्थाई।। ग्रथ ग्रंतरा स्था

२ग २म २प

ई बजा कर चला तालकी पहिली में।। डिड्ड। डा। डिड्ड।

२नि ३सं २नि २प २नि ३सं २नि

डाड्डा। डा। डा। डा।। ग्रबुर्दा। १। डिड्ड। डा। डिड्ड। डा। ड्डा। डा। डा।

२प २नि ३सं ३ग ३रे ३सं २नि २प २प

ड्डा।। ग्रबुर्दा। ३।। डिड्ड। डा। डिड्ड। डाड्डा। डा। डा। ड्डा।। ग्रबुर्दा ५

२म २ग २रे २ग २म २ग २रे २सं

डिड्ड। डा। डिड्ड। डा। ड्डा। डा। डा। डा।। स्थाई में फिर जा मिला।।०।।

4

२ग २म २म २प २ग २रे २सं

अबुर्द॥ धा॥ डा। डिड्ड। डिड्ड। डिड्ड। डाड्ड। डाड्ड। डा॥ अबुर्द॥ ५

२म २प २नि २सं २सं

डा। डा। डा। डाड्ड। डा॥ इति अंतरा स्थाई के पहिले। अ

बुर्द की डा में जा मिला। सब। तालों। की। खाली में॥ ः॥

राग। भैरो। बहार। संपूर्ण। गत। मसीत। खानी। ताल

धीमा। त्रिताला। उठेगी। ताल की। पैहली में। अथ स्था

२सं २नि २सं २सं २नि २प २नि

ई॥ अबुर्द॥ ॥ डिड्ड। डा। डिड्ड। डाड्डा। डा। डा। ड्डा॥ अबुर्द॥ २

रा.त्रि.
लो.

द॥ कंचनको दोयमन गड़ाये नगन जड़त वज़्रंग
आनंद भये नंदजीके डुआरे सेरा मंद लियाई माल
न। कंस कवरने जनम लीयो है नंद महर वधर पाल
न॥ रागिनी रामकली तोरी जगल छंद॥
ताल॥३॥ तेरी अटल रहीलो राज पियारे
महरू मद आह पीया जम जम तिन तिन

लो

अथ रागिनी गणकली लोरी परिछेदमाह नाल २

लोरी लालको देहु माई कबकी ठाडी ठाडी परचाऊ।

छुन किन छुन कारगाऊ बजाऊ अगार चंदनका झू

ला झुलाऊ। लालकौ देहो सखी सभ लोरीओ। अग

र चंदनका झूला झुलाऊ रेशम दीओ बटे डोरीओ

झूलना। नवल हेंडोर ना माई झूलासी गोकलचे

रा॰ग॰
लो॰

ली याली याला लोम याला लाला ले लोम् या

ला ले लोम् याला ली याले दिर् तोम् तोम त ना ना

तोम् ता ना ना ना ना ना ना दिर् दिम् त ना ना

दिम् ना न ना ना दानी ॥ रागिनी गुणकली

लोरी सादरा ताल ।२॥ बडो रघुवीर रणधीर्

गढ लंकको भंगलछमन बडो धनुषधारी ।पम

लो २

नखेन बैठके इन मिलकाज। गाइन गुणीआनन

दवही लवा सभमावी अन मिल करन जवव मदा

देंग मिलगाव वजाऊ मोन नेबूर मदीलरो साज॥

नराना॥ दानी उदे नाना दिरना दीम् दिम् त ना

ना ना ना ना ना ना ना दीम् दानी ना दिर दिरत

म दिर दिरतम दिर दिर दीम् तदर दानी॥ याला

रा॰ग्र॰
लो॰

रूप माधवे टोटे नैन नमें भरो। टोना। टोना काम
न करसम जावे काहू देखना जावे। जेव मंत्र
डाव सखीरी रुक्मनीको पीआगर लावे ॥ इति
रागिनी गुणकली लोरी फूलनाजगाल छंद
नगाना मादरा जन टोना परिच्छेदः समाप्तः ॥

3

२६३

दल ग्रहमांहो जोषा वली लीपे पकने पकवल आ
धिक भारी । सेस पतनी पखो सूर वादर छपिउे
ङाथ पैचंान लीपे पनवारी ॥ दोरवरू और जवमा
र लेका लई सकल संसार जैजै सकारी । जन । नवे
ली अकेली चलो स्याम मथ मानी लेगर जाये । ना
गर भर भर पर आवे मोरा कछू ना विसाज पीआ स

रा.ग्र.
प्र.

के पधनि । ब्रह्मताल । धध पप मगरी गमे मगरी
सगरीसा सरिगम सरिगम गमा पस्मा ।। इत्यंत
रा ।। अथ आभोगः ।। ध्रुपवारी । विपरीत । चेव ।
ताल ।। धीमधु रसतंकार श्रीतज सरता कमता ।।
गीतताल ।। डमडम घटा डमडम घटा यारी गिर
गिर वेगा यारी गिर गिर वेगा ।। धमाल ताल ।।

ग्र

अथ रागिनी गुणकली प्रवेयपरिछेद मारू ताल

परमानंद कंदे सिरी रामे रचित मधुर चिन्मकरं

द अनंद समान सम्यक निर्मलेका कलश मदम

गरी चेतन कला नयनाचला ॥ इत्यस्यार्थ ॥ अ

थ समताल ॥ असवारी ॥ श्रीमन करुणा वरस क

लोलकला ॥ पंचमवीनाल ॥ सवला सकलादर

रा॰गु॰
ध॰

ऊंटसौं स्वर समसौं मान मनाइये ॥ इत्यस्थाये। त
नन ननम् दिर दिर तोम नदीम् ना दिर दिर दिर
दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर तोम ततोम्
उद तद्दन् झतने यलल यलल लेलाइये ॥ २
त्यंतरा ॥ अथआभोगः ॥ सानिध पम गरेसा
सारेरे गग मम पप धध निनि सस पस ॥

कनन कनन कनमन मेघः । त्रयनाल । कटकेक
न ऊपणीया । देनाल । चपक म्हनि मेया म्हनमे
या ॥ संगीननाल ॥ नमन् गरु रामानंद चरणा
म्हरणा उद्धार परमानंद कंदे ॥ इतिनालप्रबंधः
चतुरंगनाल २ ॥ चतुरंग म्हइन गणा गाइये गा
इये निजा इये रघुनाथकों स्वरमान नालसौं राग

रा.गु.
प्र.

ती गुणकली प्रबंध चतुरंग परिच्छेदः समाप्
तः ॥

6

७

सप सुथाइये ॥ सत सुरन तिन गाम एक ईस सुर

छुना गुणी जन मन मान ज्ञान पाईये। थेय थेय्या

थेय थेय्या था थित लांगता थि थि झझ झें झें थि कि

टित थुनन थें थें नड नदंग मिलाइये ॥ परन प्र

ति धति पपति मन उद्धति यड गाइये ॥ पदनग

ना पराक्रम प्रेमरंग देवट सुनाईये ॥ इति रागि

रा॰म॰

न विलना वनेरे। ऊधोजे पद सेवत वीते कल्पज
गमो ऊवजा उरलावनेरे। ज्यो साख ब्रह्मलोक
मैं नाही मोऊवरी साखपावनेरे। सगरे व्रजको
राज दीयोहै हमे लखि जोग पठावनेरे॥ रागि
नी मधुमाधवी ठुमरी ताल।३। हरि साख मो
रनी रलीयो नवतै भवन नही भावनेरे। गावै उ

रागिनी मधुमाधवी ठुमरी ताल ।३। सांवराजी
हो सैंया जागो प्यारे जान । बनमाली परभातडीआ
या झूठो करो छोवबोन । प्रकट प्रकार करी
छेक जरा पीक लोक अधरान । इनमें झूठ नहीं
तिल जी काई रंगीला भीनमरी आन ॥ रागि
नी मधुमाधवी ठुमरी ताल ।३। कवन वच

रा.म.

मनरामकृष्ण रामकृष्ण ध्यावरे सोई। महाराजपक
रे वे हरि प्रसन्न होवेंगे। मनवचक्रमसों याद
करोरे ज्ञान करो भव पार परोरे। प्यारे रे करुणा
सागर तिन पालो सब संसार रे ऐसे मधुसूदन
मुरारे रे। रागिनी मधुमाधवी ठुमरी ताल ३
मोरी गली पाय फेराजो हो मोरी गा.। ह्यांयां

दरसै करे याकी सोवस कबहुं न आवन रे। रागि
नी मधुमाधवी ठुमरी ताल ।३। तेरी गति अपरंपा
र। अजअवेइ जिन रच्यो है ब्रह्मंड अदजोति निरंज
न निराकार। जाकों कोउ न पायो पार रे। निगा
म गावै पार न पावै ब्रह्मा मार्ख उचरे। ध्यान धरे जा
को पंचानन श्रीपत जश अनत अभै भक्त दातार।

रा॰म॰

मधुमाधवी ठुमरी ताल।३। कारीरे बदरीया
रामकैसी उमड आई। सावन की रित आई पीया
मिले बन थाई। औरे बहे पुरवै आमन भावन बिना
सुना मेंदिवा रहे रामकैसी। रागिनी मधुमाधवी
ठुमरी ताल।३। उमगौ उमगौ आवे गोरीया
जीया राहमा रहो॥ कहा कहूं कछु बसन

चढकर आप मोरे बालम लोक जाने अमरावती
रागिनी मधुमाधवी ठुमरी ताल ।२। नई लगा
न हम जानीरे । जोतम रसीयां बोली बोलो तुम
हूं ते नारसयांनीहो । रागिनी मधुमाधवी ठुमरी
ताल ।२। मैं गावैं नहीं जई हूं राम । जो गावे
की बात चलै है नागर दौना चलै हूं राम । रागिनी

हेरी मेरो नन कारो मन पीय राह मारहो ॥ कु
स्मानंद रुकत नंही रोके मोही लीयो हेसहीय
राह मारोहो ॥ इति रागिनी मधुमाधवी दु
मरी समाप्ते ॥

रा॰टो॰ दास रूपकीसी माला प्रेमकीसी माला आजलौ
न देखी सुनि जैसी आज दीसीहै। रागिनी टोडी
कवित्त ताल ३। चंचलनहूजे नाथ अंचरा
नछुजैहाथ मोपे नैऊमारिकाऊं सकतो सवा
योजू। मंदकरी दीपदुति चंदमाव दीखिये।
न दौरिकै दुराई आऊं हारते दिषायोजू॥

क्र

अथरागिनी टोडी कवित परिछेदमाह ताल।३।

मुकता मनिन कीहै मक्त पुरीसी नाक दांत दा

र्यों दामनी हसती वनीसीहै।मोहनके मंत्रनके अ

थरानकीसारेष भ्रकुटी हवेष भाव भेद छवि

छीसीहै।चित चतराई उफकीसी उफकेसे अत

ऊच मऊ चौतों नैन जैसे उफकीसीहै ॥ केसो

रा०टो०

है। अबलौं तो देषतिहौं इन्हें कछू इतो नहीं
अब हूं ते देषियत उरउर नयो है। रहसि खिल
न गई तांते जंघभारी भई कियोयाने वाजभ
यो महावर दयो है। आंषनकी मेरी फाटन सी आ
वत है जानत हौं रीझलागि केशो कोंकि गयो।
है॥ रागिनी टोडी कवित ताल ।३। सवदै

क२

मृगज मराल वाल वाहिरै विडारि दैऊं भावो

तुम्है केशव समोह मन भायोजू। छलकेनि

वास ऐसे वचन विलास सुनि मैगुणो सरनिहू

ते स्याम साव पायोजू ॥रागिनी टोडी कवित

ताल। ३। इत उत चाहि देख्यो जव कोऊकि

गनाहि वारवार जिय कहो हिये कहाभयो

रा॰टो॰ कहौ यौं रसिक नप यामै कौन रसहै ॥ रागि

नी टोडी कवित ताल ।३। प्रथम सकल सु

चि मज्जन अमलवास जावक सुदेस केस पा

सको सुधारिवौ । अंगराग भूषण विविध सुख

वास राग कज्जल कलित लोल लोचन निहारिवौ

बोलनि हसनि म्रदु चातुरी चलनि चारु पल पल

3

क ३

नवीन वीन देकैं सौहैं घाय कैं घवाय कछू
स्वाडंवर कीनी वस वसहैं । कोमल म्रनाल
कासी महलकाकी मालकासी वालिका ज्यु डारी
मीडि मानस किपसहैं। जानैंको विमान भयो के
शव हनैं कोवात देषी प्रानि गात भयो कियौं अ
सहैं। चित्रसी ज्वाषी यह चित्रनी विचित्रगति

रा॰टो॰

थि विचारहैं। छूटि जाति लाज जहां भूषन ख
टैस केस टूटिजात हार सब मिटत सिंगारहैं।
क्रजि क्रजि उठैं रति क्रजि तनि स्वन घग सोई
तौ स्वरति सषि औरु विवहारहैं॥ रागिनी टो
डी कवित ताल।३। तान कोसो गान सब वल
वल वीर कोसो मान कोसो स्ववमहां मोहि

क ४

प्रति पति व्रतप्रति पारिबौ। केशोदास सविला

स करङ्ग कप्रति राधे इहिविधि सोरह सिंगार

नि सिंगारिबौ। रागिनीटोडी कवित। ताल ।३।

केशोदास सविलास मंद हास जुत अवलोकनि

अलापनि कौं आनंदु अपारहै। वहिरति सात अ

रु अंतररति सात पुनि रति विपरी तिनिकौं विवि

ग़॰गा॰ ठाट पड़ारहजावेगा जब लाद चलेगा वनजारा १

रागिनी रामकली ताल ३ शेरगजल । गरहै

तुलककीवनजारा और खेपभी तेरी भारीहै ।

अय गाफिल तुझसेभी चढ़ता एक और वड़ा वैो

पारीहै । क्याशक्कर मिसरी कंद गिरी क्या सांभर मी

ठा खारीहै । क्यादाख मनका सोंठ मिरचक्या के

रागिनी रामकली ताल ।३। अबषोर गजलक
हिते है । टेक हिंसेहू वाको छोड मियां मनदेस वि
देस फिरे मारा । कज्जाक अजलका लुटे है दिन
रात वजा करन कारा । क्या भैसा वधिया वेल
षुतर क्या गावे पल्ला सिर भारा । क्या वेहूं चाव
ल मोठ मटर क्या आगा अंग्रो क्या छेगारा । सब

रा॰रा॰ कली ताल पैरगाजल। इस में जिल मैं अवस्था

थ तेरे यह जितना डेरा डंडा है। जगदाम दिरमका

भांडा है वे हक सिपर और खांडा है। जब नायक

तनका निकल गया जो सबको सब को छोडा है

फिर टांडा है न भांडा है ने हलवा है ने मांडा है। ७।

रागिनी रामकली ताल पैरगाज॰ जब बलते

सर लोग सुपारीहै २ रागिनी रामकली ता

ल शेरराजल । तुर्वाचियाला देवै लमरेजो

सराव पहुमजावेगा । या सुदवफा कर लावेगा

याद्याटावाफा पावेगा । वटमार अजलका रस्ते मे

जर भाला मार गिरावेगा । धन दौलत नानी नोना

का एक भनगा पासन जावेगा ३ रागिनी राम

रा॰रा॰ भारीके । जवकाल लुटेरा आनपड़ा फिर हूनहैं
औ यारीके । क्या साज जड़ाऊं जर जेवर क्या गोटे
थ्यान कीनारीके । क्या घोड़े जीन सुनहरीके क्या
हाथी लाला अंबारीके ६ रागिनी रामकली गज
ल ताल । जो खेप भरे तूजाताहै यह खेप
मियां मन जान अपनी । अब कोई घड़ी प ३

चलने रस्तेमें यह गौन तेरी फलजावेगी। एक
वर्षीया तेरी महीपर फिर चरने आसन आवेगी-
यह वेण जोतने लोंदीहै सवहि रस्तोमें वटजावेगी-
येहून जवाई वेटा का वनजारा न पासन आवे
गी ५ रागिनी रामकली ताल । शेरगजल
क्यों नाहक बोझ उठाताहै इन गौनों भारी

गा॰ग। मह देख जलके भालेके। क्याडिबे हीरे मोतीके

क्याफेर खेजोने मालेके। क्यावक चेता शाम श

ज्यर क्या नवेने शाल दुशालेके। ८। रागिनी

रामकली गजल ताल । कुकुकामन

आवेगा तेरे यह लाल जमर्रद सीमोजर। सब

सूजी वाटमें विखरेंगी जब आन बनेगी जोऊ

ल मायनमें यह खिप बदनकी है खपनी। काया
ल कटोरा चांदीका क्या पीतलका फकना फक
नी। क्या बरतन मौंने रूपेके क्या मटीकी हंडि
या चपनी।७। रागिनी रामकली ताल ॥
शैरवाजल। मगाहर नहो तन वारोंपर मन भू
ल भरोमे फालोंके। सब पता तोडके भागेंगे

रा॰ गा॰ व अन्न और जल। बरबार अटारी चौपाये क्या
खासा नन सखाव मलमल। क्या चिल वननकी
थे रेशमके क्या लाल पलंग का रंग महल ९
रागिनी रामकली गजल नाल । कौंग
खेत मकां बनवाता है हैरव भनेरे ननकापोला॰
ने ऊंची गाफी उठाता है यहां गोफ गाढने मह

पर। का ममनंद नकिप मलक मको का चौ
की ऊरमी नावेन कनर। का माल खेजाना म
लक मको दौलत हशमत फौज लशकर ॥ ४।
रागिनी रामकलीताल । शेरगजल। यह प
म यड़का साथ लिये कौं फिरता है जंगल जंगल
। एक म्रमगा पामन थावेगा मोकूफ ऊआ ज

गा॰गा॰ अकेला जंगलमै तबाक कलइद कीफाकेगा।
उस जंगलमे जब आइन जीर एक भनगा आन
न झोंकेगा ए रागिनी रामकली गजल ता
ल यह पैंट अजाईबहै दुनियांकी और क्या
क्या जिनस इकट्ठीहै। इहा मालकी मीका मीठा
है और चीज किसिकी खहीहै। ऊंख पकताहै

6 5

खोला । क्यारेनी खेद करेद बंदाका कोट कांग्ग्र

श्रम मोला । क्या बुजे रैंहला नेप किला काशी

शादा फरैर गोला ११ रागिनी रामकली ना-

रैरगजल । अब काल फिरा कर बावकको

यह्र वैल वदन काहांकेगा । कोई नाज समेटे

गा नेरा कोई गोन सिये श्रोर दांकेगा । होफेर

रा-रा

गुदड़ी ओढ़ जाता है । कोई भाई बाप चाचा मामा
कोई साली पूत कहता है । जब देखा देखतो आ
खिर को मरि जाता है ने नाता है । गुलशोर । कोई से
ठ महाजन लाखपती जब जाज कोई पनसारी है
यहां बाजा किसी का हलका है और खेप किसी
की भारी है । क्या जाने कौन खरीदे है और किसने जि

ऊछ बनताहै पकवान मिठाई पडीहै । जबदेषा
हुवतो आखिरको नेलहरा भाउन भहीहै । गल
शोर बहला आगाहवा औरकी चउपानी महीहै-
हम देखतके ईस दुनियांको सबथोखेकीय
मोहीहै । कोई ताजखदीदे हंस हंसकर कोई तख
नता उबन षानाहै । कोई कपडे रंगे पहरागोहै कोई

रा॰रा॰ रामकली टपा ताल ।३। मयाने वेलियावे हर
नया वमटे लोक विगाने । मित्रन कर दिवारि
वे पैयांना पउदीवे मियां रबकरे नसिमडे था
वोनेपनादे । रागिनी रामकली टपा ताल ।३
केहा जाउ डाकीना वेदिलन कदरना जाने दर
कदर मियां । वेषनन्नु मस्ताक जिमेरा रखक

रागिनी रामकली टपा ताल ३ । तोड़े वेव
न दिलां गमेन्नु । वच्छबेषां वारि वेराजनन्नू ह
रें वे सोणा र व सनले साडी वांगा । रागिनी रा
मकली टपा ताल ३ । आया निस भाल वो
रोजन यार । किड़ुयों नेन्नू यार । हीरनि मानि
व कि पक्कदा पीह दिल दिड़ई आमार । रागिनी

रा. रा.

मियां । खोटा खोटा पयबोन शोरिमियो मोईगा
नि मन ईमान ष्यांदा । रागिनी रामकली ८
पानाल । ३ । किजाल माडि वे मियो यो किसदी
यारी दाले विसडेडे नालन जान्दे नामन जान्दे
की करवे । मुवेवे बोंनेडा मोवरो यो मैंडियाने
जिंदडी दिवानी मैंडा जिंडेरे । रागिनी रामक

लगा मन लीना दिलन्।। रागिनी रामकली ट
पा ताल ।३। चल उठ कर दीदन यारा मियां दी
दन यारेदा आमदा जोंदा मियां । वारा वहारे
निवे वेषन वलिय हो मियां मैंडा दिल वरदाव
जाय मियां । रागिनी रामकली टपा ताल ।३।
देखणा दिदार जांदा पर खिले पर खायले

रा॰रा

ताल।२। मारचला कौं छोडि चलावै मजनूं इस्क
गरीबो कौं मियां। ईया खुदाय दरसन मेरी दाहे
फिर याद सो मेरी मियां। रागिनी रामकली ट
पा ताल।३। खेडनदा परवे लावे भला मियां
वे सान्‌ चाक चाक जवाबो भोंदा कोईवे। श्री
दानि यांदा साडे चरवे शोरी लगि महरवन पाक

3

ती टपा ताल ।३। जाडु डाक मालकी नावे ।
इस्क लगा मैं डाजीन रमोदा के हाहाल जिगर
परकी नावे । रागिनी रामकली टपा ताल ।३।
कौन गत भई मोरी आन ना मिले पिया मोकौं ।
उन बिन कल न परत प लछिन कैसे गम बिहाय
आन मिले पिया मोकौं । रागिनी रामकली टपा

ताल । ३ । सवि आखेंवी मेडे प्यारे न्दरान किथें वे
गारिआ । आपकूड जोंदे वारी नाल मंहीदे मेढ़
ड थकेंदी मैंह्ना विआ । रागिनी रामकली टपा
ताल । ३ । कीनावे करेजा मारदा पावदा राम
वोवो । कीप्रकूदे वारीआ जय दिल वेकरा
र दाहैंनो यारियां देना गुजारदा । रागिनी रा

4

रागिनी रामकली टपा ताल । ३ । ह्रोवे फोला
मन पर चोटियें । ओघल ओदि भमा कमोदि
विन वढ्यो दिया ह्रोवे फोलामैं । रागिनीरा
मकली टपा ताल । ३ । जिंद मोडिया रोटे ना
त लगिवे । अदारंगनें जदमैं पावां गरे लगावे
विन डिठे ओमै दमी । रागिनी रामकली टपा

रा०रा०

रागिनी रामकली टपा ताल ।३। पलक देरेख्रा

ऊ मेरा साई । जो चाहे जग राज कर वोई करम

भ ऊदरत उसि नाई । रागिनी रामकली टपा

ताल ।३। भई लीऊं वांमरी विन देखे नेक ना

सहाय । जबने गमन कीनो विदेशवा भवन भा

वे कछुन हिंवा । रागिनी रामकली टपा ता०।३

मकली टपा ताल ।३। तोरी नगारिश्रामें नारहीं

गि तेतो धनन करारस भोग । सदारंग रसरंग

कराई हमकों दीनी बड़त विरोग । रागिनी रा

मकली टपा ताल ।३। आज तोरन गाजें आये

पियार बावर मेरे । अंग मेरा रंग लागें अचट ड

गवन गात छिन ले पल ऊपकन आपड़े हैं ॥

रा·रा·

नि साथ साथ सानीया पम गरे ॥ इति रागि
नी रामकली टपा समाप्तम ॥

21

6

मगा मध मेरे मगारे धानि सा मेरे सानी । पगमें

धरें धरें पगा धम धा मेरे सा मेरे सानी । सारे गा

ममे मगारे मगामें धाम धाम पेप धानी । साध

साध पगा धरे मदारंग मोरी पकन सानी ॥

रागिनी राम कली टपा ताल ।३। पगा मध

रि सानि पेरम पगा धरेरे । रीमसा ध होवेगा

रा. रू.
के

सी माला प्रेमकी सी माला आज लौ न देखी सुनि
जैसी आज दीसी है ।। राग हरष ताल ।। ३ ।। कवि
त ।। चंचल न ह्वैजे नाथ अंचर न खैंचे हाथ सो
वै नेकु सारिकाऊ सुकतौ सुवायो जू । मंद करौं
दीपदुति चंदमुख देखियत दौरिकै दुराई आ
ऊं द्वारतें दिखायो जू । मृगज मराल बाल बा

अथ राग हरष नाल ।२। कवित्त ॥ मकना मनिन
कीऐ है मक धरी सी नाक दांन दासौं हामनी हसनी
वनी सी है । मोहन के मेहन के अधरांन की सी रे
ष भटकटी सुवेष भाव भेद छवि छबी सी है । वि
न वन राई उजकी सी उजके से अरु जव मकचौ
मे नैन जैसे उजकी सी है । केशव दास रूप की

2

रा॰ र॰
क॰

छूतो नहीं अबहूं तें दषियत उर उठन यों है । रहसि
षिलन गई तातें जंघ भारी भई कियों यातें बाज
भयो महावर दयो है । आंषन की भरी फाटन सी
आवन है जान न हों रीट लागि के ऐसो झोंकि ग
यो है ॥ राग हरष नाल ॥ ३ ॥ कवित ॥ स
षदे सषीन बीच टेके बैठी है पायके षवाय कछू

हिये बिचारि दैकै भाषो नन्द केशव हमोहू मन
भायोजू । छलके निवास ऐसे वचन विलास
हति मैगनो हरनिहू ने स्याम रूप पायोजू ॥
राग रूप नाल कवित ॥ इत उत वाहि देषो
जब कोऊ फिरनाहि बारबार जिय कहो हि
ये कहा भयो है । अब लौं तो देषति ही इहां कछु

रा॰ह॰
क॰

राग हरषमाल ।३।। कवित्त ।। वेदकैसो भाग
भाल भृकुटी कमान कीसी मैनकैसे पैने सर
नैनन विलासहै । नासिका सरोज गंध वाहसे
सुगंध वाहू दारयोसे दसन केसो बीजरी सोहास
है । भाईकीसी ग्रीव भुज पानसो उदर और पंकज
सेपाइ गति हंसकीसी जामहै । देषीहै गुपाल प

3

ह्वाउ वरकोनी वस वसै है । कोमल मृनालका
सी मलकाकी मालकासी वालिका जुडारी सी
ठि मानस किए सै है । जानै को विभाव भयो के
शव सनै को वाम देषो आमि गानजान भयो
कियौं शुसै है । चित्रसी जगाषी यह चित्रनी वि
चित्र गति कहै थौं रसिक नए यामै कौन रसै है

रा॰ ह॰
क॰

त्री चलनि चारु पल पल भनि पनि अंन प्रतिपा
रिवै। केशोदास सविलास करउं अथ री गाथे
इहि विधि सोरह सिंगारनि सिंगारिवो ॥ १०॥
हरष नाल ।३। कवित ॥ केशोदास सवि-
लास मंद हास जुत अवलोकनि अलापनि
कैं आनंद अपार है। बदिरनि मान अरु औनर

4

कगोपिकामैं देवतासी सोनेसें सरीरसब सोंथे

कीसीवासहै ॥ रागलुरबनाल ॥ ३ ॥ कवित्त ॥

प्रथम सकल सुचि मजन अमल वास जाव

कसुदेस केस पांसको सुधारिवौं । अंगराग

भूषण विविध सुष वास राग कजल कलित

लोल लोचन निहारिवो । बोलनि हसनि मदुचा

रा॰ रू॰ क॰

वीरकोसो मानकोसो मेघ मंडो मोहि मन भायो
है। थलसो अचल सील अनल सबल चित जलसे
अमल तेज तेज कोसो गायो है ॥ केशव दास
बसत अकासके अकास घोष घर घर घट घट
छेक छवी छायो है ॥ रति कीसी रति नाथ
रूप रति नाथ कोसो कैधो केशव राइ हूठ

5

ति मात पुनि रुनि विपरीत तिनिकौं विविधि विचा

रु है। छूटि जाति लाज जैसें भूषन सदेस केस टूटि

जात हार सब मिटत सिंगारु है॥ छूजि छूजि

उठै रुनि कूजि नित सवु छवा सोई नै सरति

सखि सौक विवहारु है॥ गाथा हरष नाल

२॥ कवित॥ नात कोमो गात सव वलवल

रा॰ह
क॰

देवता वषानीहै। ऐसी बातें कौंन जनमांनी
हतिमेरी रानी उनकेतो तेरी बानी वेदकीसी
बोनीहै॥ राग हरष ताल॥२॥ कवित्त॥ कै
थौ गरह काजकैथौ कुटोन सषा समाज कैथौ
कह्रू आजबन बासर विभानतै। दीनोनैंनसो
यविथौ काऊसो भयो विरोध उपज्यो प्रबोध

6

कौन पहि पायो है ॥ राग हृयष ताल ॥ ३ ॥ क
वित ॥ वोली कोसो पान तोहि करत सेवारि वो
इ दरपन ज्यौं तोही मांऊ मूरती समनी है । तेरे
मनोरथ भगीरथ रथ पीछे पीछे डोलत गुपा
ल मेरो गंगा कोसो पानी है । तेरी तिय देवता
पै पायो पति केशोराय पतिनी वहुत पति

रा॰ इं॰
क॰

केशवदास नौमे इसी दीपको सिषासी देरी उ
गवति नीलवास उति श्रेग श्रेगकी । पौन पानि
पंछी पशु वासमै सबद होनि जित तित चौंकि
चौंकि चाहै चोप संगकी । नंद लाल आगम वि
लोकै कुंज जाल बाल सौनी गति नहिका
ल पिंजर पतंगकी ॥ रागहरषनाल ॥ ३ ॥

किधौं उर अंबर दामिनि है। हाव भैन देह किधौं मोह
मो कपट नेह किधौं देखि मेह अनिउरे अधिरानि है·
किधौं मेरी प्रीति की प्रतीति लैन केशोराय अजहू
न आय मन ह्यौं कौ नै बानि है ।। राग हरषना
ल ।। ३ ।। कवित्त ।। चंदन विट व कोमल विम
ल दल ललित वलित लता लपटी लवंग की·

रा॰ह॰
क॰

मौन मनायो मन ऐसी तोहि बूझिए जु पीछें प
छितानहै ॥ राग हमध ताल ॥३॥ कवित ॥
श्राम्रन ज्यौं सुजनन का मनन तो सुनि यत जै
से केशवराय नम लोगन मै गायेहै ॥ वेस
की विसारे सुधी काकज्यौं ज्ञनन फिरै जूठे सी
है सीत धान ईट डीठ ठायहै। हरि हरि करनसौ

8

कवित ।। बारबार बोल्यो जब बोल्यो न विहसि न

व बालक ज्यौं बोलिबे को मन बिललान है । ज्यौं

ज्यौं परे पायन मैं त्यौं पाहन ते पीन भयो होत कहा

किये अब सौंहन सौं मान है । केशौदास सब का

हू कीनी हठहूं सों हेत ताहू छांडि जिय जिये

बिन कहा जानि है । ऐसे प्यारे पियहूं कौं मा

रा॰ कु॰
क॰

पुनि फूल माल तोरि डारी बीरा बगराइकै । लैलैरी

हु सास नजि विविध विलास हास केसोदास दैउरा

स बली अकुलाइकै । सेइकै संकेत न हनो कान्ह

जु सौं बोली जनो मोसो जो है कर हुतो हुतो उध

पाइकै ॥ राग हरष ताल ॥ ३ ॥ कवित ॥ ली

ने हम मोल अब बोली आई जाको मोहु मोहि

दौरि दौरि गहै पांय जो नैन कठोर दौर जाति

जिय पायै है । काको घर बालवे को बसै कहा

घनश्याम वृंद ज्यो तुमतन आन मेरे घर आये है ।

राम रूप नाल १६ । कवित्त ॥ देषति उदपि जात

देषि देषि निज गात चंपक के पात कछु लिष्यो है ·

बनाइ कै । सकल सुगंध छाडि हरि काको मारि

रा॰ हृ॰
कं॰

कवित्त । नैननकी अन्नराई वैननकी वन्नराई ग्या
नकी गुराई नइ रानि इति चालकी । अपने चरित्रनि
के चित्रन वचित्र चित्र चित्रनी ज्यों सोहे साथ शचिका
गुआलकी । चंदके समान चारु चाप सो वफ्नी फि
रनि करकै विहारे मग नैनन की पालकी ॥ की
जैपे पान आम प्यारे आई है जु आई अलबेलि ।

10

घन स्याम घन माला वीलि लाई है । देषो दै है उ
खिमस्ते देह ऊन देषी कैसे वाट केस्यो दामनी दि
षाई है । ऊ वे नीचे वीच कीच कंटक नि पीरे पग
मारग गयंद मति श्रमि स्वषदाई है । भारी ध
र कारी निसि निपट अकेली तम नाही प्राण
नाथ साथ प्रेम जस हाई है ॥ राग हरष माला ३

रा॰ ह्र॰
क॰

मेंटज्यौं। मिलत वियोग भूले लोचन चकोर फूले
आई वज्र वंद वेहबलि मलि षेंटज्यौं ॥ रागह्रर
षनाल ॥ २ ॥ कवित्त ॥ उवरजन उरग चयन
फनि वरनन देषनि विविध निसिवर दिस
चारके। गन तिन लगन ममसलधार सनतिन
झिल्लीगन घोष निरघोष जलधारके ॥ जा

गवालि कालकी ।। राग हंसधमाल ।। ३ ।। कवि

त ।। बेदन बखाउ बारह अंबर के उरहार समन

सिंचार मोहैं आनंद के कंद ज्यौं । गोरी कोरि ब

नि नाथ वा नामे बजाय गाय मराज मराल

माथ वानी ज्या वंद ज्यौं । वौ कि वौ कि बकई सी

मो जिनि की हनी बली मौने भई हीन श्रीबिंदइति

रा॰ह॰
क॰

क आनि नीके हूको लागत नहैं सीताजू को हन
गीनकैसे उर आनियै। आंषिन जो देषियत सो
ई सांची केशोदास काननकी सुनी सांची कवहूं
न मानियै। गीगलकी कलदाप यौहूं ही उलटाव।
निहै आजलौंतो वैसेईहैं कालि कीन जानियै॰
इति हरष राग कवित समापनम् ॥ शुभं ॥

१२

नैनिनै भूषण गिरन पट फाटनन कंटक थट
कउर उरजउजार केः पैनन की एछैं नारि कैा
न पैनै सीषो यहू जोग को सो मार अभि मारअ
भि मारकै ॥ राग हरष नाल ॥ ३ ॥ कवित ॥
हरि सेहि नह सौं भ्रम भूलि हून कीजै मन हांनो
करि हिय हूनै होत हित हानीथे । लोकमे भलो

गा॰ ह्रं॰
ठु॰

जे पद सेवत बीत कल्प जग सो ऊ ब्रजा वतरे । ज्यो

स्याव ब्रह्मलोक में नाही सो ऊ वरी स्याव पावतरे ।

सगरे ब्रज को राज दीयो है इसे लखि जो आपदा

वतरे । ठुमरी ॥ हरि स्याव मोर तीर लीयो तबतें

भवन नही आवतरे । गावै गंदर सै कहे याकी

सो वसकवङ्न आवतरे ॥ ठुमरी ॥ तेरी गात ब्र

अथ राग इराष ठुमरी परिछेदमाह नाह ॥३॥ सोव
गजी होहैंगे जान्यो यारो जान । दूतमानी परभातडी
आया झूठो करो छोवखान । प्रकट प्रकार करीके
क जरा पीकलाक अप रान । इनमें झूठ नहीं ति
ल जीकाई रंगीला पीजमरी आन ॥ राग इराष
ठुमरी ताल ॥२॥ कवन वचन विलना वनो । उयो

रा॰ ह॰
दु॰

ज्ञान करी भवपारपरोरे । प्यारे रे करुणा सागर

तिन पाली सब संसारे रे ऐसे मधुसूदन मुरारे रे ॥

हमरी ॥ मोरी गली पाय फेराजो मोरी ग॰ ॥ हथ्यां

ये चढ़कर आप मोरे बालम लोक जाने अमराव

हो ॥ हमरी ॥ नई लगन हम जानी रे । जो तुम स

मीयां बोली बोलो तुम हं ने नारस यानी हो ॥ हम

परे पार । अत अखंड जिन रच्यौ है अलेष अद जोति नि
रंजन निराकार ॥ जाकौ कोउ न पायो पावरे । निरा
मयावे पार न पावै ब्रह्मा महेश उचरे । ध्यान धरे जा
को पंचानन श्रीपत जप अत अभै भक्त दातार । म
न राम कृष्ण राम कृष्ण ध्यावे सोई ॥ महा जप करे
रे हरि प्रसन्न होवैगो । मन वच क्रम सौ याद करो रे·

रा॰ह॰
ठु॰

पीया जीया गरहमारहो ॥ कहा कहूं कछु बसन
ह्री मेरो तन कारो मन पीय गरहमारहो ॥ ह्नख्य
नेद रुकत नही रोके मोसो लीयो हंससीयगरह
मारोहो ॥ इति राग ख्याल ठुमरी परिच्छेदमा
ह समापनम् ॥ शुभंभूयात् ॥

३

री ॥ मैं गावनैं नहीं जईहूं राम । जोगावनेकी बात
चलैहै तापर टौंना चलैहूं राम ॥ ठुमरी ॥ कारी
रे वदरीया रामकैसी उमड आई । सावनकी रित
आई पीया मिले वन याई । अरे वहे अरवे आमन
भावन विना सना मंदिवाडो रामकैसी ॥ रागा ह
रष ठुमरी ताल ॥ ३ ॥ उमगी उमगी आवैगो

गा॰ह॰
गा॰

उतरह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा ॥५॥ राग
हरख नाल ॥२॥ पेवगाजल ॥ गारहै बलकाबी
बन जारा और वेपभी तेरी भारी है । अय गाफि
ल तुजमेभी वडना एक और वडा बोपारी है ॥
क्या शक्कर मिसरी कंद गिरी क्या सांभर मीठा
खारी है । क्या दाख मनका सोंठ मिरच क्या के

अथ रागइरख शेरगजल नाल ॥ ३ ॥ टुकहिर
सह वाको छोड मियां मतदेस विदेस फिरे मा
रा ॥ कजाक अजलका लूटेहै दिन रात वजा क
रणाक्कारा ॥ क्या भैसा वधिया वैल शुतरक्या
गोने पल्ला सिरभारा ॥ क्या गेहूं चांवल मोठ
मटर क्या आगधुआं क्या अंगारा । सवठाट प

गा॰ ह॰
गा॰

ताल ॥ ३ ॥ शेरगाजल ॥ हर मंजिलमें अब साथ
तेरे यह जितना डेरा डांडा है । जर दाम दिरम का भां
डा है वेहक खिपर श्रौर खांडा है ॥ जब नायक तन
का निकल गया जो मलकों मलकों डांडा हैं ॥
फिर टांडा है न भांडा है न हलवा है न मांडा हैं ॥ ४
गारा हरष ताल ॥ ३ ॥ शेरगाजल ॥ जब चलते

२

मर लोंग सुपारी है ।२॥ राग हरष नाल ॥३॥
शैरगजल ॥ नव पियाला देवें लभ रेजो छ्रव
पछम जावेगा ॥ या मदद बफा करतावेगा ॥ या
गोटा बाफा पावेगा ॥ बटमार ब्रजलका रस्ते मैंन
दभाला मार गिरावेगा ॥ यव दैलन नानी नोना
का एक मनगा पासन जावेगा ।३॥ राग हरष

रा॰ ह॰
गा॰

भारीके। जबकाल लूटेगा प्रान पकड़ फिर हरनेहै

कै पासीके। क्या साज जड़ाऊं जर जेवर क्या गोटे

थान कीनारीके। क्या घोड़े जीन सदन हवेलीके क्या

हाथी लाला अंबारीके॥६॥ राग हरष ताल

॥२॥ धीरगजल॥ जो देखभये नेजानाहै य

हदेख मिये मन मान अपनी। अबकोई बड़ी प

3

३.

वलते रस्तेमें यह गौंन मेरी फल जावेगी। एक
वधीया मेरी महीपर फिर वरने वासन आवेगी।
यह खेपजो मने लादीहै सवहि सस्तोमें वटजाव
गी। येहतन जवाई वेटा का वनजारा न पासन आ
वेगी॥५॥ राग हरष नाल॥६॥ शेरगजल
कौं नाहक वोझ उठाताहै इन गौंनों भारी

गा॰ हू॰
गा॰

महू देखे जलके भालोके। क्याडेवे हीरे मोतीके
क्या देवे जेने मालोके। क्याडक्केना शाम मा
जदर क्या नदेवेने घाल उशालोके।८॥ शाघा हू
रष माल॥३॥ शेर गजल॥ ककु काम न आ
वेगा नेरे यह लाल जमरद सीमोजर॥ सब
पूजी वाटमें विदवेगी नवग्रान वनेगी जोऊ

४।

समायनमें यह खिण वस्नकी है खिपनी ॥ क्या
थाल कटोरा चांदीका क्या पीतलका फकना
फकनी। क्या बरतन सोंने रूपेके क्या मटी।
की हठिया खपनी ॥८॥ रागा हरष नाल ॥३॥
शेरगजल ॥ मगरूरनहोतलवारोंपरमतभू
ल भरोसे ढालौंके। सब पत्ता तोडके भागेंगे

रा॰ ह॰
ता॰

व ग्रम्न श्रौर जल। ज्वार चटारी चौपाये क्या खो
सा तन सुख क्या मल मल। क्या बिलवन मकी
दे दे शनके का लाल पलंग का रंग महल ॥
१०॥ राग हस्वच ताल ॥ ३ ॥ शेवराज ल ॥ कौं ३
खेन मकान बनना है है खेभने रे तनका पोला-
हे ऊंची गद्दी उठाना है यहो मोह गफले मद्द

5

पर। क्या मसनेद नकिए मुल्क मकां क्या चौकी
क्रसी मावेन खनर। क्या माल खजाना मुल्क
मकां दौलत हशमत फौज लशकर॥ १॥ राग
ह[illegible] ताल [illegible]॥ शेर गजल॥ यह धूमधड़
का साथ लिये क्यों फिरता है जंगल जंगल
एक भभगा पासन आवेगा मौकूफ अश्राज

रा॰ कृ॰ ग॰

फेर अकेला जंगलमे तबाक कलहदकी फाके

गा। उस जंगलमे जब आहन जीरएक भनगा

आन नफोकेगा ॥१२॥ राग श्रधनाल ३॥ शे

रगजल ॥ यह पेठ अजाईबहै दुनियांकी और

क्याक्या जिनस इकठी है। इहामालकी सीकामीठा

है और वीज किसिकी वेही है। कच्च पकनाहै

6

बोला । क्याथैनी खेद करेद वडोंका कोटकोग

रा॑ भ्रम मोली । क्याउजैं रहला नोप किला का

शी शाद हसैं रगोला ॥ ॥ ॥ राधा हरष नाल

इ [illegible] गजल ॥ श्रंबकाल फिराकर चाव

ककी यह बैल बदन कांहे केगा । कोई नाज

समेटैगा नेरा कोई गौन लिये और टोकेगा । झो

दा॰ह॰
गा॰

गुदड़ी ओढ़े जाता है। कोई माई बाप चाचा मामा को
ई मानी हम कहता है। जब देखा है वमे आखिर
को मे पिला है ने जाता है॥ गुलशोर॥ कोई सेठ म
हाजन लाखपती जब गाज कोई पम मारी है॥ य
हां बाजा किसी का हलका है और खेप किसी को
भारी है। क्या जाने कौन खरीदे है और किसने जि

7

८

ऊछ्ल बनताहै पकवान मिठाई पडीहै। जबदेषा
छेवतो आखिर कोनेलहा भाउन भडीहै। ग्रल
शोर वहुला आगरवा औरकी वड पानी महीहै
हम देख चुके ईस दुनियांको सबथो हेकी यसी
हीहै। कोइ नाज खदी देहेंस हेंसकर कोइ नाखन
गाज़ावण षानाहै। कोईकपडे रंग पहरोहै कोई

गं॰ ह॰
गं॰

हुवमो आखिरको कच्चुलेना एकन देनादो ॥ १५

राग इचस लाना ॥ ३ ॥ फेरवाजल ॥ रमाल नज

मी आतिलहै और फाजिल मला ख्यानाहै । को

ई आमिल कामिल दाता कोई मस्त सिरा दीवा

नाहै । नावीज फतीला फाल फरहे और जा

उ मेनर लानाहै ॥ जव देखा हुवमो आ

8

८।

नम उतारी है । जब देखा ह्वबनो आखिरको दला

लनको ई ओपारी है । १५ ।। रागहरष तालप । ३ ।।

शेरगजल ।। कोई फलके वैटे मसनंदपर कोई

रोवे अपनी दोलतको । कोई वोले अपना मजसे

ले और मरा है सो मजकोदो । कोई लडता है को

ई मरता है जगडे हक औपना हकको । जब देख

ग॰ हु॰
ग॰

रोप बनामाहै कोई बाघा फिरा अम्मामाहै। कोई
साफ बरहमा फिरनाहै ने पगरी न पाजामाहै॥
कम खोब गजी और गाढेका तिनक जीयाहै हूं
गामाहै। सब दाबो रहवनो आखिरकोने पगडी
है नजामाहै॥१८॥ राग हरष नाल॥ ३॥ शेमरा
जल॥ कोई बाल बढाए फिरनाहै कोई शिर

खिरको सबहीला मकर बहानाहै ॥१६॥ रागरु
रष नाल ॥३॥ पोसराजल ॥ कोई लोटेकूवे
ग लिये मैं ने थार किसीका वेराहै। तिनकजी
ये जगतै रहे रहे यह मेरा है यह मेरा है। जबदेखा
छूबमे आखिर कोन मेराहै न मेराहै ॥१७॥
रागरूरष नाल ॥३॥ पोसराजल ॥ कोई टोपी

बा॰ ह॰
गा॰

सातांहै। जब देखा खूबको आखिर सब जगाउ ब
लाजातांहै ॥१०॥ दाग हरख नाल। ३। कोर मजल ॥
कोई वेवे अंगा सराव अफपम कंधी हय दही की
फेरीहै। कोई पलाग्निर पर लातांहै कोई लाइवे
लम्बकेरीहै। कोई जवारे अपनी जागाह पर पह
मेरीहै यरहेनेरीहै। जब देखा खूबको आखिर

10

को चोट मडामाहै । जब देखा खूबनो आखिरको
सब छोड अकेला जानाहै ॥ ५ ॥ राग हरषला
ल ॥ ३ ॥ शेर गजल ॥ कोई रोताहै कोई ह
सताहै कोई मवैहै कोई गाताहै ॥ कोने छीने
ऊपरैले भागे कोई पीसका डर दिखलानाहै ॥
कोई माल इकटाकरताहै कोई ऊंजी ऊलफ ल

रा॰ ह्र॰
ग॰

खेतभलीहै ।२२। राग हरखना ।१। श्रीवराजल ॥
कहीं बान छटे रन टांट पराजी कहीं दमराव च
मराव नकलाहै । कहींगोक रुपयेका खुरदा
कहीं कौडीपैसा पैलाहै । कहीं छुटना छाजा
टारीहै कहीं बिकना खोट खटोलाहै । जबदेखा
हुबनो आखिर कोने पीठी खोट नकाखोहै ।२३

कोन नेरी है मनेमरी है मेनेरी है ।१९१। राग रूपष ना

ला ।३॥ शेरमजल ॥ कही वलीटेको छनी

है कही हलसी करवकी घली है ॥ कंही चल

नी [illegible] है कहीं झलसा चकी झली है ·

ककारी वैं गानसा गाहरा गुरु गाटा गाजरमली

है । जव देखा छवने आसिकको सव दिकरी दे

गा॰ह॰
गा॰

माला ३। शेरगजल। अबकिस्का वेरा तुरा कहि
ये औरकिस्का रूप भला कहिये। एकदमकी पैठ
लगी है पर अम्बोहमजावरचा कहिये। ऐसे रन
मा धंदेन खेजी ? अवजा कहियेरेमा कहिये। क
कुवान नेही वन आने की छपचाप भला है काक
हिये। गुलशोर बहुला आगाहवा औरकी चड़पा

रागहरष मालाउ॥ शेरगजल ॥ कोई शिकारी
बाज उडाता है कोई हाथमे रख के चलती है॥
शष बाज कोइले बैठा है और दोड किसीने डल
दीहै॥ हैनार किसीके हाथोमें और नाचती फि
रत फिरती है॥ सब देखा हेवतो आखिरको
नेदेशाम सतन सनती है॥२४॥ रागहरषपद

रा॰ह्र॰
रा॰

र रोतेथे अव अपनी खोनिर गेवावा। नन म्हखोक्ष
वडी पीटकुई घोड़ेपर जीन धरो वावा।२८। रागाहर
ष नाला ३। अव जीनेको त्रम हकमत दो और
नेको मह मान करो ॥ हैरान करो इह मान
करो या प्रत्न करो या दाम करो ॥ कछु लत
फ नहीं अब जीनेमे अब चलनेका मामान करो

13

नी सही है। हम देख चुके इस दुनिआं को सब थो
ड़े की सट ही है।।४५।। राग रेखता ताल।।४।। शे
र गजल।। बटमार अजल का आ पहुंचा टुक उ
सको देख डरो बाबा। अब अश्क बहाओ आंखों से
और आहें सर्द भरो बाबा। दिल हाथ उठा कर जी
ने से बस मन मार मरो बाबा। जब बाप की खाति

रा॰ह॰
गा॰

नाला ॥२३॥ शेरगजल॥ यह श्रम बडन कूदा
डकला अब कोउ मारो जेर करो ॥ अब माल
इकठा करनेथे अबनन का अपने फेर करो। ग
फ्र इंटा लशकर भागका अव ज्ञानमें नम शे
शेर करो। नम माऊ लडाई हार उके अब भा
गनेमें मन देर करो ॥२४॥ राग हरबस ॥

15

राग हरष ताल ॥ ३ ॥ घौरव रामसल ॥ दिल काटे
अपना जीने से अब और गले को मन काटे । अ
ब बाट फूना कीटक बवालो और हून किसी
का मन काटे । अन क्रोउ हिले वाविरे को और
भाजी अपनी तुम कांटे । नाकेद वक्रेरे कूद इके
अब और उलनी मन क्रोटे ॥ २८ ॥ राग हरष ॥

रा० ह्र०
रा०

शेरगजल॥ इस पांव विमटकर चलनेसे मनर
स्तेको हैरान करो। और पांपले मुहसे रोटीकोम
न मल मलकर हलकान करो। अब आप इपन
म पानीसे मत पानीका नुकसान करो। जहला
भ नंही इस जीनेमें अब मरनेसे पहचान करो। ३१

इति राग ह्वरक शेरगजल समाप्तम् ॥ ॥

30

15

१५८

ताल ॥३॥ शेरगजल ॥ सिरकोपाचोटीवाल
ऊप मह पीला पलकैं आनकुको । कद देषा
कोनऊप वऊरे औरओकेंभीत्रपलायगाई । ह
षेनीदवाई औरभावेवटीदिल हलऊयाघावा
जनहीं । जोहींनीयीमोहेगजवीअववलनेमें
कछु देरनहीं ॥३॥ राग रूपघ ताल ॥३॥

ए॰टो॰

लाद चले गावन जारा २ गहैं तुलक खीवन जारा
और विषमी तेडी भारी है। अय गाफिल तुझसे भी व
ढता एक और बडा ब्योपारी है। क्या शक्कर मिसरी कं
द गिरी क्या साल्लर मीठा खारी है क्या दाख मुनक्का सोंठ
मिर्च क्या केसर लौंग सुपारी २ तुव पियाला देवें लभरे
जो पूरब पछिम जावेगा। या सद वढा कर लावे

शे॰ २

रागिनी टोडी तालतिताला ॥ ३ ॥ औरंगजल

टुकहिरसहवाको छोडमिया मत देस विदेस

फिरेमारा। कजाक अजलका लूटे है दिनरात वजा

करनकारा। क्याभैसा मेथिया वेल सूतर क्यागाने

पल्लासिर भारा। क्यागेहूं चावल मोट मटरक्या आ

गपुआक्या अंगारा। सव ठाट पडारहजावेगा जव

रा॰टो॰ फिर टांडाहै में भंडाहैने फलवाहैने मांडाहै ४ ज

व चलते चलते दमसें यह गोन तेरी ढल जावेगी

एक वधीया तेरी मट्टीपर फिर चरने वासन आ

वेगी ॥ यह खिपजो तूने लादीहै सवहि ससो

में वट जावेगी ॥ धीहून जवाई वेटा क्या वनजा

रा पासन आवेगी ॥५॥ कौं नाहक वोफउ।

पै २

गाया खाटा बाथा पावेगा। वट मार अजलका वस्तेमे

जव भाला मार गिरावेगा। धनदौलत नाती तोना

क्या एक भुनगा पासन जावेगा।३। हर मंजिलमे अ

वसाथ तेरे यह जितना डेरा डाडाहै। जरदाम दिर

मका भांडा है वंदक सिपर और खांडाहै। जवना

इक तनका निकल गयाजो खलको डाडाहै

गा॰टी॰

खिपनी क्याथाल कटोरा चांदीका क्या पीतल्ल का।
ढकना ढकनी। क्या बरतन सोंने रुपेके क्या मही
को हडिया चपनी ७ मगाहरन होनल्ल वारोंपरमन
मूलभरोसे ढालोंके। सब पता तोडके भागेंगे सुहदे
खजलके मालोंके। क्याउवी हीरे मोतीके क्या ढेर।
खजाने मालोंके। क्या तुके नाथा मुशा ज्यर क्या।

टा नाहैं हून गोनो भारी भारीके। जब काल लूटे
गा आन पड़ा फिर हूनहैं ब्योपारीके। क्या साज ज
डाऊ जर जेवर क्या गोटे थानकी नारीके। क्या
घोड़े जीन सुन हरोंके क्या हाथी लाला अमारी
को१८ जोखिपभरे तमाशाहै यह खिपमिया मत जानअ
पनी। अबकोई घड़ी पल साचतमे यह खिप वदनकोहै

ता॰टी॰ फिरता है जंगल जंगल। एक भुसगा यासन श्रा
वेगा मौकूफ हुश्रा जब अन्न और जल। बर वा
व अटारी चौपाये क्या खासा ततसुख क्या मल
मल। क्या चिल बनन कीये रेशमके क्या लाल
पलंग का रंग महल ९ क्या सुखन मकान व
नता है है खंभ तेरे तनका पोला॥ तू ऊंची

शे ८

नाहके माल दुष्मा लौंके ए अक्ल कामन आवेगा

तेरी यह लाल जमुर्रद मोती जवाहर। सब पूंजी बाटमें

पिरंगी जब आन बनेगी जोरा। क्या मसनद तकिए

मुल्क मकान क्या चौकी कुर्सी तखत छत्तरक्या

माल खजाना मुलक मकान दौलत हशमत फौ

ज लश्कर ॥ यह धूम धड़का साथ लिये क्यों

रा॰टो॰ ते वाक कलहदकी फाकेगा। उस जंगलमें जब

आह्न जीर एक भुनगा आनन फांकेगा २ यह

आ पेंट अजावहै दुनियांकी और क्या क्या जिनस

इकटीहै। यहां मालकी सीका मीठाहै और चीज

किसिकी खहीहै। कुछ पकताहै कुछ बनताहै

पकवान मिठाई यहीहै। जब देखा खबनो आप

पे ५

गढ्ढी उठाना है यहां गोरखाढेने मुंह बोला। कचारे
नी खंद करन्द बडांका कोट कंगुरा भ्रम मोला। का
बुर्जें हला तोप किला काशी शादाह शेर गोला
।। अब काल फिरा कर बावकको यह वैल वदन
काह्लां केगा। कोई नाज समेटेगा तेरा कोई गौन
सिंचे औैर टोकेटा। छोडिर अकेला जंगलमें ।

गा॰टी॰

जब देखो खबनो आखिर कोमे रिस्ता हैने नाता है
१३। गुलशोर ॥ कोई सेठ महाजन लाखपती जे
वजाज कोई पम सारी है। यहा वाजा किसीका
हलका है और खेप किसीकी भारी है। क्या जाने को
न खरीदे है और किसने जिनस उतारी है। जब देखो
खबनो आखिरको दलालन कोई व्योपारी है १४

6

पे॰ ८

र्को नेलहा भाउन महीहै। गुल श्रोर बहला श्रा
गहवा श्रीर कीचड पानी महीहै। हम देख चुके
ईस दुनियांको सब धोखेकीघ सीहीहै। कोईतान
ख दीदे हंस कर कोई तखेनए डाबन घाताहै को
ई कपडे रंगे पहलोहै कोई गुदडी श्रोढे जाताहै को
ई भाई बाप चाचा मामा कोई माली इन कहाताहै

रा·टो·

मिलका मिलदाना कोई मस्त सिड्डा दीवाना है। तावी
ज फतीला फालुफस है और जाडु मंतर लाना है·
जब दावा ह्वबतो आखिरको सब हीला मकर ब
हाना है। कोई लोठे कचे गलियोंमे तैयार किसी
का बेरा है। नित कजीये झगडे रहते है यह मेरा है य
ह तेरा है। जब दावा ह्वबतो आखिर कोन मेरा है ९

प्रे

कोई फुलके बैठे मस नंद परकोई रोवै अपनी दौ
लतको। कोई बोले अपना मुजमे लो औरमेराहै
सा मुजकोदो। कोई लडताहै कोई मरताहै जगा
डे हक औरनाहकको। जब देख खूबतो आखि
रको कबूलेना एकन देनादो १५ अमल नजूमी
आ मिलहै औरफाजिल मुलास्यानाहो। कोईआ

रा·टी·

ला जाता है १९ कोई रोता है कोई हसता है कोई नाचे
है कोई गाता है। कोई छीने झपटे ले भागे कोई योस
डर दिखलाता है। कोई माल इकटा करता है कोई
ऊंजी जलफ लगाता है। जब देखा छबतो आखिर
सब झगड़ा रहा जाता है। कोई बेचे भंग शराब अफ
सम कही हय दही की फेरी है। कोई पला सिर पर

8

श्री ८

कोई टोपी टोप बनाता है कोई बांधा फिरा अम्मा

माहै कोई साफ बंधता फिरता है ने पगडीन पाना

माहै कमखाब गजी और गाढेका निन कनीयाहै।

जब देखा छिब तो आखिर कोने पगडी है ने जामा है १८

कोई बाल बढाए फिरता है कोई सिरको घोट मडा

ताहै। जब देखा छिब तो आखिरको सब छोड अके

जब देखा छबतो आखिरको सब बिकरी देखत
भलीहै २२ कहीं बान अटेरन टाट पगाजी कहीं
दमराव चमरखन कलाहै। कही रोक रुपयेका
खुरदा कहीं कौडी पैसा धेलाहै। कहीं छटना छा
ज पिटारीहै कहीं बिकना खाट खटोलाहै। जब दे
खा छबतो आखिर कोने पीढी खाट बराबाहै। २३।

9

लाताहै कोई लादेवै लमकैरीहै। कोईऊगडे ग्र

पनी जागहृ परयहृ मेरीहै यहृ नेरीहै। जब देखाहृ

वतो आखिर कोन नेरीहै नमेरीहै ननेरीहै ॥ कहींव

ली टेकी हनीहै कहीखाशीकउवकी झुलीहै। कहीं

वलनी छाज पिटारीहै कहिंखुलहा वक्की खुलीहै

नरकारी वैगन साग हरा गुडगाडा गाजर मूलीहै॰

ग॰टी॰ यह अस्त्रोहम ना चरचा कहिये। येसैरत माशादेन
खेजीर अवजा कहिये रेजा कहिये। कछुवात न
हीवन आनेकी चुप चाप भला है का कहिये। गुल
शोर बहुला ना॰ २। आग हवा औरकी वड पानी मही
है। हम देखेंके इस दुनियांको सब धोखेकी मही है॰
बटमार अजल्का आपडे चाहुक इसको देखेड री बाबा

| ० |

कोई शिकरा बाज उडाता है कोई हाथमे रखके न

तली है। बारबाज कोई ले बैठा है और दौड किसीने

उतनी है। हैनार किसीके हाथोंमें और नाचती फि

रत फुतली है। जब देषा तब तो आखिर कोन रे आम

सतन रतनली है ४४ अब किसका रंग बुरा कहिये औ

र किसका रूप भला कहिये। एक दमकी पैठ लगी है

रा॰टो॰

न्वकरी या दानकरो। याउरी लड़ वटवा ओघा खा
सा हत्तवा नानकरो। कुछ तनफ नहीं अव जीने
में अव चलनेका सामान करो।२३। मनसूपा।दि
ल काटो अपना जीनेसे अव और गलेको मतका
टो॥ अव चाट फ़नाकी टुक चवावो और खन
किसीका मत चाटो॥ पुन छोडो हिस्से वा।

शै

अब शाक बहा श्रो आखों से और आहें सरद भरो बाबा
दिल हाथ उठाकर जीने से बे बसमन मार मरो बाबा
जब बापकी खातिर रोते थे अब अपनी खातिर रो बाबा
बा। तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़े पर जीन धरो
बाबा २८ जब जीने को हम आबसनदो और मरने को
महमान करो। बैरान करो इस इमान करो या ३।

ए॰ टे॰

मत देव करो। २४। सिव कांपा चांदी वालङ्ग पसूह
पीला पलकै आन झुकी। कद टेढा कान झप वर
है और ओरवें भीत्र धलाय गई। खाव नींद गई और
भाव चटी दिल सलङ्गवा आवाज नही। जोहोनी
थी सोहो गुजरी अब चलनेमें कछु देर नहीं ३॰ इस
पाव बिसटकार चलनेसे मन रखेको हैरान करो

१२

पे॰
१२

रवैरेकी औरभाजी अपनी तमवंटो। नाकंद वछेरे
कूद चुके अव और उलनी मत छंटो २८ यह असव
ऊन कूदा उछला अव छोड़ा मारो जेरकरो। अवमा
ल इकठा करते थे अवतनका अपने ढेरकरो।गाढ
टूटा लशकर भाग चुका अवज्ञानमें तम शम शोव
करो। तम सांज लडाई हार चुके अव भागनेमें ।

रा·टो·

लगी वहनारी। अनंदवन मेरी सदा निसवा स्वर नरक स्वर्ग भाग गये इकवारी। कहत कवीर सनो भाई साधो गुरुकीनो प्रीतमोहि स्वहसें प्यारी ३२॥ कवित॥ ताल॥ झलफाक॥ पहरे आई नव सन अवरन अतही सुंदर त्यया वहोत सियानी। गोरे वदन पर अलकां छुटीमानो चंदन लेप टानी।

१३

और पीपले मुहमेरोटीको मन मल मल कर हलका
नकरो। अब आपहूप हम पानीसे मन पानीकान
कसानकरो। कछु लाभनहीं इस जीनेमों अवमर
नेसे पहवान करो ३। जपमाल। ज्ञान मथमाते
मोनरकै पे जिनको रहतहैं निस दिन खुमारा॥
ज्ञान मथ पीवत भेहै खुमारी खसन अंतर खिले

रा॰टो॰ रंझेटे आखोऐंगाम्रि आलोंदी आंमालिआ ॥ हथ खुडि

मोडे कारी कमरीया वाप अस्राडे देया पालिआ ।३४।

ख्याल ताल ।३। मीयां राझावे सोणा नित साडे आडे

दा। माउद्दी गल मनदा नहि आपना आपजनामदा।

कोई समझाडेक्यों पेक्ष्प माव्ह दिखलामदा ३८

इति रागिनी टोडी ख्याल ताल ।३। संपूर्णा समाप्त

पो॰ १४

14

14

मृगासे नैना कोकिल बैना कटके हर गज चाल म्र

हानी। मुगाहे वहादुर येह्मव निरखत इंद्रलोककी

अपसर विसरामी ३ ख्याल ताल ३ छडगत बांह पा

रे भोरभै अंडना। दीप बाकी जोत रही चंदऊ कावों

दना मोतनके हार मीतल छुटि आयो अंजना।३४।

ख्याल तिक्षारा।३। साडे ताल चोतीवे आमीवे।

रा॰गे॰ रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा ॥ १ ॥ राग

शे॰ गंधार ताल ॥ ३ ॥ शेरगजल ॥ गरहै नलक

रवीबनजारा और रवेपभी तेरी भारीहै ॥ अयगा

फिल तजमेभी चफना एक और बडा कोप्यारी

है । क्या शक्कर मिसरी कंद गिरी का सालर मीठा

खारीहै ॥ क्यादारव मनका मोंठ मिरच का के

अथ शैर गजल राग गंधार ताल॥ ३॥ हेकरि
मेरू वाको छोड मियां मन देस विदेस फिरे मा
रा॥ कजाक अजल का लूटै है दिन रात वजा
करन कारा॥ क्या भैसा वधिया बैल सुतर का
गाने पला सिर भारा॥ क्या गेहूं चांवल मोठ
मटर का आग धुआं क्या अंगारा। सब ठाट पडा

ग़.गो.
शे.

नाल।३।शेरगजल। हर मंजिलमें अवसाथ ते
रे यह जितना डेरा डोडा है। जरदाम दिरमका
भोंडा है वेष्क सिपर औरखोडा है। जवनायक
तनका निकल गया जो मुल्कों मल्कों होडा है
फिर टोडा है न भोंडा है ने हलवाई है ने मोडा है।४।
रागा गंधार नाल।३।।शेरगजल।।जव वलते

सर लोंग ह्मणारीहै ॥२॥ राग गंधार ताल ॥३॥

शेअरगजल ॥ नेवधियाला देवें लभ्भे जो रुरव

पक्कम जावेगा ॥ या स्हद वफा करलावेगा याबा

टा बाफा पावेगा ॥ वटमार श्रजल्का रस्तेमे जब

भाला मार गिरावेगा । धन दौलत नानी तोता

का पक्क भनगा पामन जावेगा ॥३॥ राग गंधार

ग्रं॰गं॰
शे॰

भारीके। जबकाल लुटेरा ग्रानपडा फिर हूनहै
श्रौणारीहै। क्याम्राज जशऊं जरजेवरका गोटे
थान कीनारीके। क्याघोडे जीन म्हनहरीकेक्या
हाथी लाला श्रेवारीके॥६॥ राग गंधार ताल
।३॥ शेरबाजल ॥ जोबिपभरे नहूंजानाहै यह
बिप मियांमनजानअपनी। अबकोई घडी प

3

चलने रस्तेमें यह गौंन तेरी फल जावेगी ॥ एक

बर्यीया तेरी महीपर फिर चरने आसन आवेगी

यह देवपजो नने लांदीहै सबहि समोमें बटजावे

गी। येहन जवाई बेटा दया बनजारा न पासन

आवेगी।५। राग गंधार ताल ॥३॥ शेरराज

ल ॥ कौंा नाइक बोझ उठाताहै इन गौंनों भारी

गा॰ गो॰
शो॰

र देख जलके मालोंके। क्या डिबे हीरे मोतीके क्या
फिर खजाने मालोके। क्या ऊक चेना शाम शाज्य
र क्या नखेने शाल दुशालोके ॥८॥ रागगंधा
र ताल॥३॥ शेरगजल॥ कब्बु कामन आवेगा
तेरे घर लाल जमुर्रद सीमोजर ॥ सब झूजी
बाटमें बिखेरेगी जब आन बनेगी जोऊ

४६

ल सायनमें यह खेप बदनकी है खेपनी ॥ क्या
थाल कटोरा चांदीका क्या पीतलका फकना फ
कनी । क्या बस्तन सोने रुपेके क्या मटीकी ह्मा
डिया खपनी ॥ ७ ॥ राग गंधार ताल ॥ ३ ॥ श्री
रगाजल ॥ मगरूर न हो तल वारें पर मन मू
ल भरोसे फालोंके । सब पता तोड के भागेंगे म

रा॰गे॰
शे॰

अन्न और जल। घरबार अटारी चौपाये क्या खो
मा नन खाव क्या मल मल। क्या चिलवनन।
कीये रेशमके क्या लाल पलंगका रंग महल॥
॥१॥ रागगेयार ताल॥२॥ शेरगजल॥ कौं
शवन मकों वन वनाहै है तुंभ तेरे ननका पोला
ने ऊंची गाढी उठाना है यहां गोरू गाढे ने मुह

पर। क्यामसनंद नकिप मुल्कमकान क्या चौ
की करसी नखत छत्तर ॥ क्या माल खजाना
मुलक मकान दौलत हशमत फौज लशकर ॥४॥
याग गेयार नाल ॥३॥ शैर गजल ॥ यह धूम
धड़का साथ लिये क्यौं फिरता है जंगल जंगल
एक धूम मगा पासत आवेगा मौकूफ हुआ जब

रा॰ गं॰
शे

अकेला जंगलमें नवाक कलहंद कोफाकेगा।
उस जंगलमें जब आइनजीर एक भनगा आन
न जांकेगा॥१२॥ राग गंधार माल॥३॥ शेरग
जल॥ यह पेट अजाईबहै इनियोंकी और कयाका
जिनस इकठीहै। इहामालकी मीका मीठाहै
और बीज किसिकी खहीहै। कछ पकनाहै

6

खोला। क्या रेनी खेद करेंद बन्दोंका कोट कोरा
रा श्रम मोला। क्या बुर्जै इला नोप किला का
शी शादा होरगोला॥ १॥ राग गेयार ताल २
शेरगजल॥ अब काल फिराकर चाबकको
यह बैल बदन काहोंकेगा॥ कोई नाज सभमें है
गा नेराकोई गौन सिये श्रौरदोकेगा॥ होफेर

ग॰गं॰ शे॰

ग्रदी ओढे जातौहै। कोई भाई वाप चाचा मामा
कोई मानी रूत करतौहै। जब देखा खूबतो थापि
यकोमे मिल्यौहैने नातौहै। गलशोर। कोई सेठम
हाजन लाखपती जब जाज कोई पमसारीहै। य
हो वाजा किसीका हलकाहै और खेप किसीकी
भारीहै। काजाने कौन खरीदैहै और किसने जि

1

ऊख बनना है पकवान मिठाई पड़ी है। जब दे

खा रहु बनो आगिर को नेल हा भाउन भरी है ॥

गुल और बहूला आगर बा और की चउ पानी मही

है हम देख चुके ईस दुनियां को सब थोथे वे कीय

मीही है। कोर नाज खेदी देह है सरहेस कर कोर नब

नगा उबन खाना है। कोई कपड़े रंगे पहरणे है कोई

गा॰गो॰
शे॰

ह्वनो आखिरको कछु लेना एक न देना दो। ५

गया गेयार् नाल। ३॥ शेरग़ज़ल॥ रम्मल न

ज़मी आतिल है और् फाजिल मल्ला स्याना है।

कोई आमिल कामिल दाना कोई मस्त सिडा

दीवाना है॥ तावीज फतीला फाल फसें है औ

र जाडु मंतर लाना है। जब देखा ह्वनो आ

8

नम उतारी है। जब देखा ख्वबनो आखिर कोदला
लनको ई ओणारी है॥१३॥ राग गंधार ताल ३।
शैर गजल॥ कोई फलके बैठे मसनंद पर कोई
रोवे अपनी दौलतको। कोई बोले अपना मजसे
लो और मेरा है सो मफको दो। कोई लडता है को
ई मरता है जगडे हक और नाहकको। जब देखा

रा॰ गं॰
शे॰

बनाताहै कोई बाबा फिरा अम्मामाहै । कोई साफ
बरहना फिरताहै ने पगड़ी न पाजामाहै ॥ क
म खाब राजी और गाढ़ेका तिलक जीयाहै हे
गामाहै । जब देखा खूबतो आखिर कोने पगड़ी
है नजामाहै ॥ ८॥ रागगंधार ताल ३ शेर
गजल ॥ कोई बाल बफाए फिरताहै कोई शिर

9

गिरको सवहीला मकर वहानाहै ॥६॥ राग

गंधार ताल ॥३॥ शेर गजल ॥ कोई लोटे कू

वे गलियोंमे नेयार किसीका वेरा है। जिनक

जीये झगडे वलेहे यह मेराहे यह तेराहे। जवदे

खा रवतको आखिरकोन मेराहे न तेराहे ॥ ९

रागगंधार ताल ॥३॥ शेरगजल। कोई टोपी टोप

रा॰गं॰
शे॰

गाता है। जब देखा है तो आखिर सब जग डर
ला जाता है। २। राग गंधार ताल॥ शेर गजल॥
कोई बैठे मंग मराब अफसम कहीं हथ दर्री की
फेरी है। कोई पल्ला सिर पर लाता है कोई लादे बै
लस केरी है। कोई झगड़े अपनी जागह पर यह
मेरी है यह तेरी है। जब देखा है तो आखिर

10

को चोट मइतानाहै । जब देखा हुवनो आखिर

को सब छोड अकेला जानाहै ॥ ११ ॥ राग ये

याव ताल ॥ ३ ॥ शेयगजल ॥ कोई रोनाहै कोई

हस्ताहै कोई नाचेहै कोई गानाहै । कोई छीने

झपटेले भागे कोई थोसकाउर दिखलानाहै ।

कोई माल उकठा करतनाहै कोई झेजी झलफ ल

रा.गं.
शे.

देखत भूली है ।२२। राग गंधार ताल ।। शेरराज
ल ।। कहीं बात घटेरन टाट पगाजी कहीं दमराव
चमराव नकलाई है ।। कहीं रोक रुपये का खुद
दा कहीं कौडी पैसा ये लाई है । कहीं खूटना खाज
पिटाई है कहीं विकना खोट खेटोलाई है । जबदेखा
हवतो आखिरको ने पीटी खोटन चराखो है २३

कोन तेरी है न मेरी है न तेरी है ।२१।। राग वंथाव
नाल ।।२।। घोरगजल । कही वलीटकी धू
नी है कही खोसी कडवकी छली है । कही वल
नी क्काज पिटारी है कहिं छुलहावकी छली है
तरकारी वैंगन सागहरा गुड गाडा गाजर म
ली है । जवदेखा ह्वबतो आखिरको सब विकरी

गा॰गे
शे॰

शैरगजल ॥ अबकिस्कारंग उरा कहिये औार
किस्का रूपभला कहिये । एक दमकी पैटल
गीहै यह अम्बोहम जावरवा कहिये ॥ येभैरन
मा शंदेनारव जीर अबजा कहियेरेजा कहिये ॥ क
कुवान नंही वन आनेकी उपवाप भलाहै क्याकहि
ये । गलशोर वहला आग हवा औरकी चडया

१२

राग गंधार ताल ३ ॥ शेर गजल ॥ कोई शिक
रा बाज उडाता है कोई हाथमे रखके नचती है·
शरबाज कोइले बैठा है और दौड किसीने उलती
है ॥ हैनार किसीके हाथोमें और नाचती फि
रत घुनती है ॥ जब देखा हवतो आखिर कोने रे
शाम मतन मनली है ॥२७॥ राग गंधार ताल।

रा॰ गे॰
श॰

रोनेसे अब अपनी खातिर रो बाबा। नन सहखोऊ
बड़ी पीटहूई घोड़ेपर जीन धरो बाबा।२६। राग
गंधार नाल॥३॥ शेर गजल॥ जब जीनेको ब
मकाब सनदो औरनेको महमान करो। बिरानके
रो इहमान करो यासुन्न करो यादान करो। ऊकबूल
नफ नहीं अब जीनेमें अब चलनेका सामान करो

13

२३

नी मह्नी है। हम देखे के इस डनिओं को सब
यो देवकी सटही है ॥२५॥ राग गेयार नाला इ
मैरगजल ॥ वटमारउजलकाआपड़ेवाड
कइस्को देख डरोवावा। अवशाकव ह्राश्रोआंखें
मे और आईमर्दभरोवावा। दिल ह्राथउठाकरजी
नेमेवेवसमन मारमरोवावा। जववापकी खाति

रा॰गं॰
शे

शेरगजल ॥ यह अमवजन कूदा उछला अब
कोडा मारे जेर करे ॥ अब माल इकट्टा करने
को अवननका अपने ढेर करे ॥ बाघ हटा ल
शकर भागाजूका अब ज्ञानमें तम शेशेर करे
तम माऊ लडाई हार छके अब भागनमें
मत देर करे ॥ २९ ॥ ॥ राग गंधार ॥

॥ राग गंधार ताल ॥ ३ ॥ और गजल ॥ दिल का
टो अपना जीने से अब और गले को मन काटो । अ
ब बाद इनाकी टुकचबबाओ और खून किसी का
मन चाटो । अन छोडो हिस्से बबरेकी और भाजी
अपनी तुम बांटो । नाकेद बछेरे छूट तुके अब
और उलनी मन छांटो ॥ २८ ॥ राग गंधार ताल

रा·गे·
शे

उस गांव सिमट कर चलने से मन रस्ते को हैरान
करो ॥ और पीपले मुहमे रोटी को मत मल मल
कर हलकान करो ॥ अब आप इप् तुम पानी से
मत पानी का नुकसान करो । कञ्चला भनहीं
इस जीने में अब मरने से पहचान करो ॥ ३८ ॥
इति राग गे थाय नाल ॥ शैर गजल समापतम् ॥

15

ताल।३॥ शेरगजल॥ खिरकोपाचोदोवालङ्ग
ए मुहु पीला पलकें आनझुकी। कद देफाकान
ऊप वड़े और आंखें मीच पलायगई। स्त्रवेनी
दगाई और भूखेचटी दिल सुस्तहुआ आवाजन
हीं। जोह्रोंतीथी सोह्रो गजरी अब चलनेमें ऊकछु
देर नहीं।३॥ राग गंधार ताल।३। शेरगजल॥

म॰ ना

लाद चलेगा बनजारा । गर है तू लक्खी बनजारा औ
र खेप भी तेरी भारी है । अय गाफिल तुझसे भी चढ़
ता एक और बड़ा ब्योपारी है । क्या शक्कर मिसरी कंद
गिरी क्या सांभर मीठा खारी है क्या दाख मुनक्का सोंठ
मिर्च क्या केसर लौंग सुपारी २ तू बधिया ला देवे लभ रे
जो पूरब पच्छिम जावेगा । या सूद बढ़ा कर लावे

गमिती मयमाथवी नालनिनारा ३ शैरगजल
टुकडिरमहवाको छोडमिया मन देस बिदेसकि
रेमारा । कजाक भ्रजल्का लटेहै दिनरात बजाकर
नक्कारा । कामैमा बयिया बेल शुनरकागाने प
लासिर भारा । कागेह्रू चावल मोट मटरका श्रा
गथ श्राकया शंगारा । सब ठाट पडारहू जावेगाजब

म॰ग॰ फिर टोडाहे मैं भंडाहैने हल्लवाहैने मांगाहे ४ जव

वलते वलते रस्तेमे यह गीत तेरी फल जावेगी ॥

एक वधीया तेरी महीपर फिर चरने वासन आवे

गी ॥ यह खेपजो तने लादीहे मवहि ममोमें व

ट जावेगी ॥ धीदूत जवाई वेटा क्या वनजारा

पासन आवेगी ॥ ५ ॥ कौंं नाहक वोझ उ

गाया खाटा वाथा पावेगा । बदमार अजल्कारसेभै
जब भाला मार गिरावेगा । धनदौलत नाती गोता
कया एक छनमा पासन जावेगा ३ हर मंजिलमे ध
व साथ तेरे यह जितना डेरा डाडाहै । जरदाम दि
मका भोंडाहै वेहक सिपर श्रोर खोंडाहै । जब
नाइक तनका निकल गयाजो मलकों हाडाहै

म॰ रा॰ खपनी काथाल कटोरा चांदीका का पीतल का

ढकना ढकनी। का बरतन सोने रुपेके कामही

की हडिया चपनी ✓ मगहरन होनल वारोंपरमन

भूलभरोसे डालोंके। सब पना नोडके भागोंगे सह

देव जलके मालोंके। काउवी हीरे मोनीके का ढे

र खजाने मालोंके। का उक्के नाश मशाज्पर का

ढोनाहै इन गौनो भारी भारीके। जब काल लुटेरा
धान पड़ा फिर हूनहै औपारीके। क्या साज ज
ड़ाऊ जर जेवर क्या गोटे थानकी नारीके। क्या घो
ड़े जीन सन हरीके क्या हाथी लाला अमारीके
६ जो खेपभरे लेजानाहै यह खेप मिया मनजान गुमा
नी। अबकोई घड़ी पल साथनमे यह खेप बदनकीहै

म-रा- फिरताहै जंगल जंगल । एक भूमगा पामन था
वेगा मौकूफ हुआ जब अन्न औरजल । बरबा
र अटारी चौपाटे क्या खोसा तनमहाव क्या मल
मल । क्या चिल वनन कीये रेशमके क्या लाल
पलंग का रंग महल ९- क्या अवन मकान वन
नाहै है खेम मेरे तनका पोला ॥ ते ऊंची

नखेने शाल दुशालोंके ८ कब्ज कामन आवेगा
नेरे यह लाल जमर्रद मीमोजर । सब हजी वाटमें
विरंगी जब आन बनेगी जोऊर । क्यामसनेद नकि
प मुल्क मकान क्या चौकी करसी नखेन खजानर
क्या माल खजाना मुलक मकान दौलत हशमत
फौज लशकर ५ यह हम घडका साथ लिये कौ

म-रा

ते वाक कल हदकी फाकेगा । उस जेगलमें ज
व आद्दन जीर पक भनगा आनन फांकेगा १२ य
ह पेंड घजावहै इनियोंकी औरकया कया जिनस
इकटीहै । यहो मालकी सीका मीठाहै औरवीज
किसिकी खेहीहै । कछु पकनाहै कछु वनताहै
पकवान मिठाई पहीहै । जव देखो हुवतो आवि

5

गाफी उठाता है यही गोरखा छेने मुह खोला । क्यो रे
नी खेद करन्द वहांका कोट झेगरा भ्रम भोला । का
अजैरें हला नोप किला काशी शादाह रोर भोला
॥ अब काल फिरा कर बालकको यह वेल वदन
काहां केगा । कोई नाज समेटैगा नेरा कोई गौ
न सिये ओर टोकेटा । छोढेर अकेला जंगल में

म॰ग॰ जब देखा तबतो आखिर कोमे बिल्लाहैने नानाहै

१३ गुलशोर ॥ कोई सेठ महाजन लाखपती जेब

जाज कोई पम मारीहै । यहां बाका किसीका हल

काहै और खेप किसीकी भारीहै । क्या जानेकौन

खरीदैहै और किसने जिनस उतारीहै । जब देखा

तबतो आखिरको दलालन कोई ब्योपारीहै १४

6

६

रको नेलइश भाउन महीं है । गुल और बबूला आ
गडवा और कीचड पानी महीं है । हम देखबके
ईस दुनियांको सब धोखेकीय सीहीं है । कोईना
जख दीटे हैंस कर कोई नखेनग डाबन घाना है
कोई कपडे रंगे परगो है कोई गदडी ओढे जाना है
कोई भाई वाप वावा मामा कोई मानी पत कहाना है

म॰ग॰ मिलका मिलदाना कोई मल्ल सिंहा दीवाना है । ना

वीज फनीला फालफस्ते और जाऊ मंतर लाना है॰

जव देखा ह्वनो आखिर को सव होला मकर व

हाना है । कोई लोटे कुचे गलियों में नेयार किसी

का वेरा है । निन कजीये झगड़े रले हैं यह मेरा है यह

नेरा है । जव देखा ह्वनो आखिर कोन मेरा है ८

७

कोई फलके बैठे मस्त नेंद परकोई रोवे अपनी दौ
लतको। कोई बोले अपना मुजसे लो औरमेराहै
सो मुजकोदो। कोई लडताहै कोई मरताहै जगा
डे हक औरनाहकको। जब देखे छबलो आखि
रको कछुलेना एकन देनाहो ५ कमाल नजमी
आ मिलहै औरफाजिल मुलाम्यानाहो। कोई आ

म॰गा॰

ला जाता है १५ कोई रोता है कोई हसता है कोई नाचे
है कोई गाता है। कोई छीने झपटे ले भागे कोई पी
स डर दिखलाता है। कोई माल इकटा करता है को
ई ऊंजी ऊलफ लगाता है। जब देखा ख्वनो आ
खिर सब झगडा रला जाता है। कोई बेबे भंग शराब
अफयम कही हय दही की फेरी है। कोई पला सिरपर

8

कोई टोपी टोप बनाता है कोई बांधा फिरता अम्मामा है.
कोई साफ बरहना फिरता है ने पगड़ी न पाजामा है.
कमखाब गजी और गाढ़े का निन कजीया है । जब
देखा खूबतो आखिरको ने पगड़ी है ने जामा है १८
कोई बाल बढ़ाए फिरता है कोई सिरको घोट मुडा
ता है । जब देखा खूबतो आखिरको सब ख़ोर अके

म॰ग

जव देखा खुवनो आखिरको सव विकरी देखन
भूलीहै २२ कहीं वान छुटेखन टाट पराजी कहीं
दमराव वमरखन कलाहै । कहीं एक रुपयेका
खुरदा कहीं कौडी पैसा धेलाहै । कहीं छुटना ब्याज
पिटारीहै कहीं विकता खोट खदोलाहै । जव देखा
खुवनो आखिरकोने पीटी खोट वरखोहै ॥ २३ ॥

म·गा

यह अम्बोहम जा चवका कहिये । येसैरन माशदेन
खजीर अवजा कहिये रेजा कहिये । कछुवान न
हीवन आनेकी ऊप गप भलाहै कयाकहिये । गल

ना. ३

घोर वहला, आगाहवा औरकी वड पानी महीहै ।
हमदेखके इस डनियांको सवयोविकी महीहै-
वटमार अजल्का आपडूंवाटक इस्को देखड़ो वावा

10

कोई शिकरा बाज उडाता है कोई हाथमें रखके तान
लीहै । शरबाज कोई लै बैठा है और दौड किसीने उ
लती है । हैतार किसीके हाथोंमें और नाचती फिर
न घुनली है । जब देषा ह्वबतो आखिरकोतरे शामस
तन सुनली है २४ अब किस्कारंग बुरा कहिये और
किस्का रूप भला कहिये । एक दमकी पैठ लगी है

म·रा

न्न करो या दान करो । या शरीर लड़ बटवा श्रोया खो
सा हलवा नानकरो । ऊछ लवनफ नहीं अवजीने
मैं अब चलने का सामान करो २० । ननक्षपा । दि
ल काटो अपना जीनेसे अब और गले को मनका
टो ॥ अब बाट फनाकी टुक चबाबो और खून
किसीका मत चाटो ॥ अन कोई हिस्से व

अब शाकवहा श्रो आवैमे श्रीर आई सवदभरो वावा·
दिल हाथ उठाकर जीने मेदे वसमन मारमरो वावा·
जब वापकी खातिर रोनेथे अब आपनी खातिर रो
वावा। नेन म्हारवा ऊबड़ी पीट हुई छोडे परजीन य
रोवावा २६ जब जीनेको नम हलवमनदो औरमरने
को मह्मानकरो। हैरान करो इह्मानकरो याश

म० रा

मत देर करो । २४ । सिर कांपा चोटी बालहु पखह
पीला पलकें आन झुकी । कद टेढा कान हुए बह
रे और आंखें भीड़ पलाय गई । ख्वाब नींद गई और
भूख घटी दिल सुस्त हुवा आवाज़ नहीं । जो होंनी
थी सो हो गुजरी अब चलनेमें कछु देर नहीं है । इस
पाव खिसट कर चलने से मत रस्ते को हैरान करो

खेरेकी औरभाजी अपनी नमकोंटो । नाकेद वछेरे
कूद चुके अब और उलनी मन छोटो २८ यह अमव
ऊन कूदा उछला अब छोड़ा मारो जेरकरो । अबमा
ल इकठा करनेथे अबतनका अपने फेरकरो । या
फहूटा लशकर भाग चुका अबजानमें नमशाम
शेरकरो । नम सांझ लडाई हार चुके अबभागनेमें

म॰रा॰ लगी रहनारी। अनंदघन मेरी सदा निसवा सर न

रक स्वरी भाग गये इकवारी। कहत कबीर सनो

भाई साधो गरुकीनो छीनमोर्‍हे हरिहूंसे प्यारी ३२

कवित ॥ ताल ॥ झलफाक ॥ पहरे आई नव

सत अवरन अनहीं संदर त्र्या वहोत सियानी।

गोरे वदन पर अलकां छुटीमानो चंदन लेप टानी

13

ओर पोपले मह्मेरोटीको मन मल मलकर हलका

नकरो। अब आपहूप्‌ नम पानीमे मन पानीकान

कसानकरो। कछु लाभनहीं इस जीनेमें अवसर

नेसे पहचान करो ३१। ऊपनाल। ज्ञान मथमाने

सोतरेके ये जिनको रहतहैं निस दिन खुमारा ॥

ज्ञान मय पीवन भैहै खुमारी स्वरन अंतर खिले

म॰ गा॰

देऊँदे आखिपैगासि आलांदी अगालिआ ॥ ह

थ हेठि सोडे कारी कमरीआ बाप असाडे देआ

पालिआ ३५ । स्याल नाल ३ । भीयो राजा वे

सोणा निन साडे आउंदा । माउद्दी गल मनदा

नहि आपना आपजनामदा । कोई सजण ऊकों

पेखप सावह दिखलामदा ३८ । स्याल नाल ३ ।

14

14

मृगासे नैना कोकिल बैना कटके हरगज चाल मस्ता
नी। शाहे बहादुर येछब निरखत ईंद्रलोककी श्रप
सर विसरानी २ ह्यालनाल २ बडउगल बांह प्यारे भो
रभे छेड्ना। दीप वाकी जोत घटी चंदर्ड़ का चांदना
मोतनके हार सीतल ढुरि आयो छेजना ॥ २५
ह्याल लिताग २॥ साडे नाल बोलीवे आमीवे

रा॰दे॰ क॰

माला प्रेमकीसी माला आजलौंनदेखी सुनि जै
सी आज दीसीहै ॥ राग देवशाख कवित नाल
चंचलनहूजैनाथ अंचरान छूजै हाथ सोवै नै
कु मारिकाऊ सकसो सवायोजू ॥ मंद करौं
दीपदुति चंदमाख देखियत दौरिके डराईआ
के हारने दिखायोजू ॥ दृगजम हाल वाल वा

कृष्ण राग देवगान्धिस्य कवित परिछेद माह नाल

मुकता मनिन कीहै मुक्त धरीसी नाक दोन दासौं

दामनी हसनी वनीसीहै । मोहनके मंजनके अधरान

कीसी रेष मुकरी सवेष भाव भेद छबि छीसीहै वि

न चनराई उजकीसी उजकेसे अह जब मकचौनो

बैन जैसे उजकीसीहै । केशव दास रूपकीसी

रा॰ दे॰
का॰

झलो नही अबइहै ते देखियत अरु उठनयो है। वहसि

ढिलन गई लोते जंघभारी भई कियो याते वाजम

यो महा वर दयो है ॥ भोवनकी मेरी फाटनसी

आवनहै जानतहो भीट लागि के शो झोकि गयो

है ॥ मम देवशाव कवित नाल ॥ ॥ सावटै

सवीन बीच टेके सीहें धाइके सवाय कहू ।

२८

हिये बिडारि देकै भाषो नेह केशव समोह मन भा

योज। कुलके निवास ऐसे वचन विलास सुनि

नि मैगनो सव निहू नेस्याम सखि पायोज॥ ताग

देवसाखि कवित नाल। । इत उत चाहि देखो

जब कोऊ ढिगनाहि बारबार जिय करो हिये

करा भयो है ॥ प्रवलोनो देषतिहि इन्हें कछु

गा॰दे॰
क॰

ेवशाख कवित्त नाल । ॥ चंदकैसो भाग भाल
भृकुटी कमान कीसी मैन कैसे पैने सर नैननवि
लासहै । नासिका सरोज गंध वाहसे सुगंध वा
ह दारयो है दसन कैसो वीजुरी सौ हासहै ॥ भाई
कीसी ग्रीव भुज पानसो उदर और पंकजसे पा
इ चालि हंस कीसी जासहै । देषीहै गुपाल प

3

स्वाइ बर कीनो बस बसतै है । कोमल मृनाल का

सी मल्लका की मालती सी बालिका जडारी सी

ढि मानस किपसहै । जानैको बिमान भयो केश

व सबैने को बान देषौ ध्यानि मान जात भयो कियौं

घसहै । चिरमी जरायी यह चित्रनी विचित्र गा

ति कहौं यौं रसिक नृप याते कौन रसहै ॥ ११ ॥

रौ चलनि चारु पल पल प्रति पति प्रत प्रति पारि
वै ॥ केशोदास सविलास कबहूं जग्यसिवाये हरि
विधि सोरह सिंगारनि सिंगारिवौ ॥ राग देव
गावरूय कवित्त ताल। ॥ केशोदास सविला
स मंदहास ज्ञन अवलोकनि अलापनि कौं
आनंद अपारहै ॥ बहिरनि सान प्रक अंतर

कां दे०
क०

4

क गोपिकामै देवनासी सोनेमे सरीर सब सोंधे की
सी बास है ॥ राग देवसाख कवित्त ताल ॥ ॥
प्रथम सकल सचि मजन अमल बास जावक सु
देस केस पास को सधारिवो । अंगराग भूषण
विविध मुख बास राग कजल कलित लोल
लोचन निहारिवो ॥ बोलनि हसनि मृदु चाल

रा॰दे॰
क॰

लवन वीरकौसौ मान कोसौ नवे मद्दो मोहि मन आयोहै। यलसौ अवल सील अनल सेवल विन जलसे अमल तेज तेजकौसौ गायोहै। केसो दास वसन अकासके प्रकासत्योंघ चर चर चट चट चेक चैनौ छायोहै। रतिकौसी रतिनाथ रूप रतिनाथकौसौ कहै केसो राइ ५८।

निस्यान धुनि रति विपरीतिनिकौ विविधि विचारु
है ॥ छूटि जाति लाज जहाँ भूषण स्वदेस केस
टूटि जात हार सब मिटत सिंगारु है ॥ कूजि
कूजि उठै रति कूजि नति स्वन घन सोई तो स्व
रति सुखि थोरु विवहारु है ॥ राग देवशा
ख्य कवित ताल। ॥ तान कोसो गान सब व

रा·दे·
क·

वना वषानीहै ॥ ऐसी वातैं कौंन जन मानी स
नि मेरी रानी उनके जो नेरी बानी वेदकीसी वा
नीहै ॥ राग देवगांधार कवित्त ताल ३ ॥
कैधौ गरह काज कैधौ कूसोन सघा समाज कैधौ
कछू प्राज अत वासर विभातनें । दीनोनैं नसो
य किधौ काहूसो भयो विरोध उपज्यो प्रबोध

6

कौन पहि पायोहै ॥ राग देवशाखस्य कवित ना
ल। ।बोली कोसो पान नोहि करन सवारि वो
ई दधिन ज्यौं नोही मोऊ मूरनी समानीहै ॥ तेरे
मनो रथ भगीरथ रथ पीछे डोलत गपाल मेरो
गंगा कोसो पानीहै ॥ तैही तिय देवनापै
पायो पति केशोराय पतिनी वडून पति दे

रा दे
क

लवंगकी ॥ केशोदास नासै इगी दीपकी शिखासी है
री दुरावति नील वास इनि देह अंगकी । पौन पा
नि पंछी पशु वासमै सबद सुनि जिन जिन चौंकि
चौंकि चाहै चोप संगकी । नंदलाल आगम बि
लोकैकै कुंजजाल बाल लीनी गति नहि काल पिंज
र पतंगकी ॥ गाल देवगनाव कविन माला ॥

किधौ उर अब दाननैं । सबै मैन देह किधौ मो
हमों कपट नेह किधौ देषि मेह अनि डेरे अथिरा
ननैं । किधौ मेरी प्रीतकी प्रतीत लेन केशोरा
य अजहूं न आय मन राधौं कौने बाननैं ॥ २१॥
देवशाखेमाकवित नाल ।   । वेदन विटवष्ठ
कोमल विमल दललसित वलित लता लपटी

रा॰दे॰
क॰

न मनायो मन ऐसी लोहि ह्रजि पज पीछे पछि
जानै है ॥ राग देवगांधार कवित ताल । ॥ आ
घनज्यौं ह्रजनन काननतैं हनि गन जैसे केशो
राय तुम लोगननै गायेहै ॥ वेसकी बिसा
रे ह्यी काकज्यौं ब्रनन फिरै लटे सोटे सीन
खान ईट डीट लायहै । हरिहरि करनहैं

8

कवित्त ॥ बार बार बोल्यो जब बोल्यो न बिहसि
तब बालक ज्यौं बोलि बेको कन बिललात है।
ज्यौं ज्यौं परे पायन त्यौं पाइन तें पीन भयो होत
कहा किये सब साधन सों गात है। केशोदास सब
काहू कीनो रुद्र हू सों हेत नेह छाड़ि जिय जिये
बिन कहा जात है। ऐसे प्यारे पियरहे कौ मान्यो

रा॰ दे॰
कं

फूल माल तोरि डारी बीरा बगराइ कै। लै लै दीह सा
स तजि विविध विलास हास केसोदास है उदासब
ली अकुलाइ कै ॥ सेइ कै संकेत न सूनो कान्ह जू
सों बोली ऊनो मोसो जोर कर हूनो हूनो डाव पा
इ कै ॥ राग देवशाख कवित माल ॥ ॥ लीने
हम मोल अन बोली आई जासों मोहू मोहि

१

दौरि दौरि गहो पांय जो नैन कठोर ठौर जानि जि
य पाये हो। काको घर घालिवे को वसे कहां घत
स्याम हूं हे ज्यौ उमन प्रान मेरे घर आये हो ॥ रा
गदेवगांधार कवित नाला। । देखनि उदयिजा
न देखि देखि निजगान चंपक के पान कछू लिखो
है वनाइ कै। सकल सुगंध दारिका को मारिदनि

गा॰ टे॰
क॰

बिन नाल। ।नैननकी अतराई बैननकी चतराईगा
नकी गराई न डरति डनि चालकी। अपने चरित्रनिके
चित्रन चरित्र चित्र चित्रनी ज्यौं सोहैं साथ अलिका अ
आलकी। चंदके समान चारु चाय सो चलनी फिरति
करकै निहारे स्टग नैनन की पालकी ॥ की
जै पै पान आन प्यारे आईहैजु आई अल बेलि

१०

घन स्याम माला बोलि ल्याई है । देषो है है उरबज
हो देह ऊन देषी पैरे देषी कैसे बाट केशो दामनी
दिषाई है । ऊंचे नीचे बीच कीच कंट कनि पीरे प
वा साहस गयेद मति अति सरदाई है । भारीय
हु कारी निसि निपट अकेली तुम नाही याण
नाथ साथ प्रेम जन सहाई है ॥ राग देवशाखक

रा॰ दे॰
क॰

मेटज्यौं। निमर वियोग भले लोचन चकोर फले
आई वज्र चेद चंद्रावलि वलि वेदज्यौं॥ राग देव
गाव कवित ताल।   ॥ उरझत उरगन पतफ
नि चरनन देषनि विविध निसिचर दिस वारके।
वान जिन लगन मसल धार मन जिन फि
लीगण वोध निरलोभ जल धारके   ॥   जा

१२

ग्वालि कालकी ॥ राम देवशावि कविन ना· ।
वेदन बढ़ाइ बाक शेबरके उरहार समन सि
वार सोहे आनंदके कंदज्यों ॥ वारो कोरि रति
नाथवा नामे वजाय गाथ मराज मराल साथ
वानी जग वंदज्यों ॥ चौकि चौकि चकई सी सो
तिनिकी हली चली सोते भई दीन अर्विंद इति

रा॰दे॰
क॰

लागत हैं सीत आजको हत गौन कैसे उर आनियै । आ
गिवन जो दीखियत सोई सांची केशोदास कानन
की सुनी सांची कबहूं न मानियै । गोगल की
उलटाप यौंही उलटा वनि है आज लौंना वैसे ई
हैं कालि कौन जानियै ॥ इति राग देव शाव
स्य कवित परिछेदः समाप्तम् ॥ शुभं ॥

१८

१२

मनिन भूषण गिरत न पट फाटत न कंटक अटक

उर उरज उजार के। भ्रेतन की एकै नारि कौ न पैनै

सीखौ यह जोग कोसौ सार अभि सार अभिसार के

गाया देव गाव कवित नाल। ।हरि सेहि नहैं

भ्रम भूलि हून कीजै मन हंतो करि रिय हूं तै होत

छिन हानीयै। लोक मैं अलोक आनि नीके हूं को

गा॰ दै॰
पो॰

रह जावेगा जबलाद चलेगा बनजारा ॥५॥ गाग

देव ख्याल शेर गजल लाला ३॥ गरहै लखक षीव

न जारा और खेपभी तेरी भारीहै ॥ ऐय गाफिल

तुझसेभी चढता एक और बडा ब्योपारीहै । क्या

शक्कर मिसरी कंदगिरि क्या सांभर मीठा खा-

रीहै ॥ क्या दाख मनका सोंठ मिरच क्या के

अथ राग देवशाखिस शेर गजल परिछेद माह नाल-

श॥ टेक हरिसिंह वाको छोड मियां मत देस विदेसफि

रे मारा॥ कज्जाक अजलका लटेहै दिन रात व

जा करन कारा॥ क्या भैंसा वधिया वेल सुतर

क्या गाने पला सिर भारा॥ क्या गेहूं चांवल मो

ठ मटर क्या आग भुओ क्या अंगारा। सब ठाट प

ग्रा॰ दे॰
शो॰

रवि पोरमाजल नाला ३॥ इस मे जितु में सुख साथते
है यह जिनना डेरा ठंडा है । जर दास हिंदू का
ओडा है वे एक सिपर और खोडा है ॥ जब ना
यक नन का निकल गया अे खल्कों खल्कों होता है
फिर ठंडा है न ओडा है वे हस्त वाहेने थोडा है ॥
४॥ राग देवगांधार नाला ३ छोर ॥ जब चलने

२

सब लौंग सुपारी है ॥१॥ राग देवगांधार गजल ॥ ना

ल ॥२॥ नव षियाला देवैं लभरे जो सूरव पक्कम

जावेगा ॥ या सह वफा कर लावेगा या गटा वा

छा जावेगा ॥ बदमार मजलका रस्ते में जब भा

ला मार गिरावेगा ॥ धन दौलत नानी नोना

सा एक भनगा पामन जावेगा ॥३॥ राग देवगा

रा॰दे॰
शे॰

के ॥ जब काल लेदेगा आन गला फिर हूनवैहै औपा

रीके ॥ क्या साज जडाऊ जर जेवर क्या गोटे था

न कीनारीके । क्या घोडे जीन सुन॰ रूपेके॰ क्या

हाथी लाल अंबारीके ॥ ८ ॥ राग देवगांधार

घोर ताल ॥ ३ ॥ जो विष भरे हें जाना है यह वि

ष मियां मन जान अपनी ॥ अब कोई घडी प ॥

3

वतने रहलेमें यहरोने तेरी टल जावेगी ॥ एकवर्षी
या तेरी महीपर फिर वतने बासन आवेगी यह रेव
पजो तने लादीहै सवहिमसोमें वट जावेगी ॥ थी
हूनजवाई बेटाका वन जावा न बासन आवेगी
॥५॥ राग देवगाविन्द येफ्व गजल ताल ॥३॥
क्यों नाहक बोझ उठाताहै इन गौवों भारी भारी

गा॰ दे॰
शो॰

जैलके मालोंके ॥ क्या डिबे हीरे मोतीके क्या फेर वे
जोने मालोंके ॥ क्या उक बेला शाम प्रभाजवर क्या नाव
ने ग्वाल उग्गालोंके ॥८॥ गणादेवशाकेसज्ञाव
गजल नुत्तन ॥ २ ॥ कुछ कामन आवेगा तेरे
यह माल जमर्बद सीसो जर ॥ सब ठुजी
बाटमें विखरेगी जब आन बने सो जोऊ ४

4

ल साखनमें यक्ष खेण वदन कींसे खेपनी ॥ कायाा

ल कवृत चोरीका क्या पीतलुका फुकना फुक

दी ॥ कथ यतन मैंने ल्पेके क्या मटीकी हवि

या चपनी ॥ ७ ॥ रागा देव शावे घोर गजल नाल

३॥ मगाहर नसे नल वासेंपर मन मूल भयेोसे

फालैंके ॥ सव पना तोरके भागेरी सह देख

रा॰ दे॰
शो॰

न मैंदु जल ॥ यदबार प्रतापी बोपाये क्या खासा

नन रवके क्या मल मल ॥ क्या किल वन नकीदे

देशामके क्या लाल पलंगका देरा महल ॥ १० ॥

[illegible] देवस्थानेसा शोभानल नाल ॥ १२ ॥ कौंशव

न मको वनलाहै हंस नेरे ननका पोला ॥ नेके

की माली उठा नाहै यहा गोल गढेने मह १

5

पर ॥ क्या मसनेद तकिए मुल्क मकान क्या चौ

की कुरसी तखत छतर ॥ क्या माल खजाना महल

के मकान दौलत हशमत फौज लशकर ॥ १ ॥

बाग देव आतेश शेवराजल माल ॥ २ ॥ यह ख्र

म थड्का साथ लिये कों फिरता है जंगल जंगाल

एक भसमगापास आवेगा मौकूफ हुआ जब स्र

रा॰ दे॰
शे॰

अकेला जंगल में रहबाक कलहट की फाके
मा । उस जंगल में जब आइ नजीर एक मनख्या
आनन ऊंकेगा । रामदेवशाखबोध माला ३ ।
यह पेट अजाई वैहे उनियों की और क्याक्या
जिनस रकती है । इस माल की सीका भीटा है
और चीज किसिकी खेही है । जब पकता है

6

६३

खोला ॥ कारि मीरे खेंद कांरद वडोका कोट को
गया भ्रम भोला ॥ काउजी रैहला मोए किला
काषी थाटाह बीर भोला ॥ ११ ॥ वाबा देवशाव
वाजन लाला ॥ २ ॥ अब काल फिरा कर वावक
को गड़ देल वदन कांहाकेया ॥ कोई नाज सभे
देगा लेग कोई पीन पिये और लाकेया ॥ होफेर

रा॰ टे॰
शे॰

कोई गदही घोड़े जाता है। कोई भाई बाप चाचा
मामा कोई सासी पुत्र कहता है। जब देखा खुवतो
आखिर कोसे रिसाईरने जाता है। कोई मेहतमहा
जन लाखपती सब कोई दमसारी है। यहांकोजा
किसी का हलका है औ राधिप किसी को भारी है
क्या जाने कौन खरीदै है और किसने जि।

उद्ध बनताहै पकवान मिठाई घटीहै। जब देखो
खूबतो आखिर कोने लस्स भाउन भहीहै॥ गुल्ल
मोर बंहला आगाहवा औरकी घट पानी मही
है॥ हम देख चुके इस दुनियाको सब योखे
कोयमोहीहै॥ कोइ राजावदी देहे सहस करकोई
नखेतणा डावन घालाहै। कोई कपडे रंग पहरताहै।

नादे·
शो·

गिर्द लिबेसे फकु लेना एक न देना दो १५ गाग
देवस्याव वेगसाज [illegible] नाल ॥ २ ॥ कमाल न जुमी
आमिलहै और फाजिल नबात्थानाहै ॥ कोई
आमिल कामिल हल्न कोई मस्त सिद्धा दीवा
नाहै ॥ जादीज फनीला फाल फसे और जा
उ मंतर लानाहै ॥ जब देखा लूबतो आ

8

नसे उतारी हैं। जब देखा छिबनी आखिर को दलाल
न कोई आपा रहै ।१८। राग देवगांधार शेर गजल ॥
तालभर ॥ कोई फलके वैठे मसनद पर कोई रोवे
अपनी दौलत को। कोई बोले अपना अफसे लो
और मेरा है सो कज कोदे। कोई लड़ता है कोई मर
ता है जगाडे हक और नाहक को ॥ जब देखा आ

रा॰ टे॰
शे॰

वनानाहै कोइ वाधा फिरा अम्मामाहै ॥ कोइमा
फ वरहना फिरनाहैने पगाडी न पाजामाहै ॥
कम खांवे गजी ग्रोर गाफेका निमक जीयाहै
हेगामाहै ॥ जवदेखा छवनो आविरकोने पया
डीहैनजामाहै ८८ रागदेवगालिशेरगजल ता
ला३॥ कोइ वालवफाय फिरनाहै कोई शिर

9

लिवको सवहीला सकरवस्तानाहै ॥ ६ ॥ नाना दे
वपाष्ठ पैरगजल : नाल ॥ २ ॥ कोई लोटै कूचेग
लियोंमें मैरपाय किसीका बेसाहै ॥ निनकजीय
जाने वलेहै यह मेराहै यह मेराहै ॥ जव दे
खा हेवतो भाषिर जान मेराहै न मेराहै ॥ ७ ॥
नाना देवपा वस्रोशेर नाल ॥ ३ ॥ कोयी टोपी टोप

रा॰दे॰
शे॰

जब देखा खेबतो आखिर सब जगडा रहा जा।
ताहै २०॥ राग देवशाख शेर॰तालाइ॥ कोई
वेवे अंग शराब अफ़सम कहीं हूथ दही की फे
रीहै। कोई पला सिर पर लाता है कोई लादेवे ल
मके रीहै॥ कोई जगाडे अपनी जागह पर यह मे
रीहै यह तेरीहै॥ जब देखा खेबतो आखिर

10

को चोट मअसना है । जब देखा हुवतो आखिरको म
व छोड अकेला जाना है ॥ १९ ॥ याया देखगा खिस
शेर गजल नाल ॥ २ ॥ कोई रोता है कोई हसता है
कोई नाचे है कोई गाता है ॥ कोई छीने झपटे ले
भागे कोई योसका डर दिखलाता है ॥ कोई मा
ल इकटा करता है कोई केजी अलफ लगाता है

सीहै ॥२२॥ राग देवगांधे शेर-ताल ॥३॥ कहीं

वान भटेरन राट पराजी कहीं दम राव चमर रवे

मकसाहै ॥ कहीं रोक रुपयेका खिरदा कहीं

कौडी पैसा थैलाहै ॥ कहीं कटना काज पिरा

रीहै कहीं बिकता खोट खटोलाहै ॥ जब देखो

खुबतो आखिर कोने पीदी खोट न चरखोहै २३॥

कोन नेरीहै नमेरीहै ननेरीहै ॥२॥ राग देवशाख
घोर गजल ताल ।३॥ कहीं बली टेकी घूनीहै
कही खोसी कउवकी घलीहै ॥ कहीं चलनी छा
ज पिटारीहै कहि बुल्हा चक्की चुलीहै तरकारी
बैंगन साग हरा गड गाडा गाजर मूलीहै ॥ जब
देखा हयवनो आखिर को सब विकरी देखत भ

गा॰ दे॰
शे॰

नाल ॥ ३ ॥ अब किस्कों ऐसा बुरा कहिये और
किस्का रूप भला कहिये ॥ एक दमकी पैठ ल
गीहै यह अच्छा हम जानरखा कहिये ॥ ये सेर
न माश देना वजीर अवजा कहिये रेजा कहिये ॥ क
कुबात नहीं वक्त आनेकी चुप चाप भला है क्या
कहिये । गलशोर व हल्ला आगाह वा औरकी चउपा

रागा देवशाखस्य शेरगजल नाल ॥३॥ कोई शिकरा

वाज उडातांहै कोई हाथमे रावके लतल्लीहै ॥ और

वाज कोइले बैठाहै और दौड किसीने डलनीहै ॥

हैलार किसीके हाथोमें और नाचनी फिरत अन

लीहै ॥ जब देखा खुबनो आखिर कोने रेशाम

मतन सनल्लीहै ॥२७॥ रागा देवशाखस्य शेर-

बा-दें
शे

अपनी खातिर रोबाबा। तन सूखा कुबडी पीठ
हुई चोटे पर जीन धरो बाबा ॥ २६ ॥ सूया देवशा
खिस घोर माला ३ ।। जब जीनेको तम कस्त
दो औरनेको मह मान करो। वैरान करो इह मान
करो या पुन्न करो या दान करो ॥ कछ लेन फ
नसी अब जीनेमे अब चलनेका सामान करो

नी महीं है ।। हम देखे तुके इसड निश्रो को सब थोखे

कीस टहीं है ।। २५ ।। राग देव शाखेस शेरभाजन ला

ल ।। ३ ।। वटमार अजलका आपड़ंचा टक इस्को देख

उतोवाल ।। अवशाकवराग्रे आवोंसे औैर आहैस

दे भरो वावा ।। दिल हाथ उठाकर जीनेसे वे वसम

न मार मेरो वावा ।। जब बापकी खातिर रोतेथे अथ

गा॰ हे॰ शे

घोर गजल नाल ॥३॥ घर अम बढ़त कदा उच्छ
ला अब कोठा मारो जेर करो ॥ अब माल इकटा
करनेको अबनन का अपने ढेर करो । गाफ़ टूटा
लश कर भागाउका अबसान मैं तुम शेर करो
तुम माफ लड़ाई हार उके अब भागने मैं
मत देर करो ॥२४॥ राग देवसाखस्य

14

२७ ॥ राग देवशाखस शेरगजल ॥ ताल ॥ ३ ॥ दि
ल काटे अपना जीनेसे अब ओर गलेको मत काटे
अब चाट रूनाकी टक चबाके ओर खूत किसीका
मत चाटे ॥ धन कोठे हिस्से बवेरकी ओर भाजी
अपनी नमक बांटे ॥ नाकंद बछेरे कूद त्रके अब
ओर उलनी मत कांटे ॥ २८ ॥ राग देवशाखस

रा॰ दे॰
षे॰

षोपले म्हहमे रोटीको मन मलमल कर ह्लका
न करो ॥ अब आप ऊप नम पानीसे मन पानी
का नुकसान करो ॥ अक्ल लाभनहीं इस जीने
मैं अब मरनेसे परहचोन करो ॥२९॥ ॥ ॥

इति राग देवशाखिस्य षेर गजल समापते

सिर कोपा बोदी वालऊप मरह पीला पलकैं आन
ऊंको ॥ कद टेफा कानऊप वडे और आंखे भी
खुथलायगाई । ख्वावनींद गई और भूख चटी दिल
खलऊथा आवाजनहीं ॥ जोहैं नीथी सोहो गज
री अब वलनेमें ऊकु देर नहीं ॥ ३ ॥ इसपांव
चिमटकर वलनेसे मनरक्ते कोहैरान करो ॥ और

ग॰ दे॰
लो॰

दंद ॥ कंचनको द्वैथंभ गाड़ोपे नगीन जटन बड़वेदा

आनंद भये नंदजीके द्वारे मैया गेंद लियाई मा

लन ॥ हल ऊबरे मनम लीयोहै नंद मह

र घर पालन ॥ राम देवशा[illegible]लागी जुगल

छंद ॥ चाल ॥ ३ ॥ मेरी अटल रहीली राजपि

यारे मह मद शाह पीया जम जम नित नित

अथ रागदेवशाख लोरी परिछेदमाह ताला ३॥ लो
री लालको देउमाई कवकी ढोसी ढोडी परवाऊ। झूल
किन झूल कारगाऊ वजाऊ सगार वेंदनका फूला
झूलाऊ। लालकों देखो सखी सभ लोरीसे। सगार
वेंदनका फूला झूलाऊ रेशम डोरी वटो ओरीसा॥
फूलना॥ नवल हिंडोरना माई झूलासी गोकल

रा॰दे॰
लो॰

यालाली याली याला लोम याला लालाले लोम्
यालाले लोम् यालाली याले दिर लोम लोम न
ना ना लोम ना ना ना ना ना ना ना दिर दिम न
ना ना दिम ना न ना ना तानी ॥ राग देवगान्धार
लोरी साद्रा ताल ॥२॥ पकडे खबीर खबीरगाड
लेककी संपालकमन वडो थनथ थारी ॥ ॥ पम

नविन बैठके रत मिल काजो गाइन गुणीयों ननद

बरी लवो सभसखी सुन मिल करत जबब सदारंग

मिल गाऊं बजाऊं मीत नेहरमा मील रो साज ॥

तराना ॥ दानी उदे नाना दिरना दीम् दिम तं ना

ना ना ना ना ना नां ना दीम् दानीं नां दिर दिर त

न दिर दिर तुम दिर दिर दीमं तदर दानी ॥

ग्रा॰ दे॰
लो

प मावेरे दोरो नैननमें भरो ॥ टोना ॥ टोना काम
न कर समझावेरे कारू देमना जावेरे ॥ जेत्र मेत्र
उार सावीरी इस्के नीको पीछा गर लावेरे ॥ इति
ग्राम देवता विरस्य लोरी झुलना जुगल छंद त
थाना साहवा जत टोना समापतम् ॥ शुभं ॥

३

३

दल सुषमा से जोया वली लीपे एकते एकवल ग्रा

थिक भारी । सेस यरनी यस्यो सुरवारदव छपिडो

ज्ञात्र पेलेत लीपे पातारी । देव दक श्रोभ जब नार

लेको लई सकल संसार तैजे पकारी ॥ जत ॥ नवे

ली अकेली वलो स्याम मय भाजी लेगर जाये । माय

र भव भर धर श्रौवे मेसा कलूभा विमाज पीसा सक

वा° ८
८

लोक विगाने ॥ मिअत करदि वारिवे पैयो नापतु दीवे मियां खकरेन सिमडे अग्वो नैयनादे ॥ ८ ५ ॥ केहा जाउअ कीमा वेदिलन कदरना जाने दरद कदर मियां ॥ वेपरन ख्लाक जिमेरा रखक लगा मन लीना दिलन ॥ ८६ ॥ चलउ करदी हन यारा मियां ॥ दीदन यारेदा आमदाजादा मियां-

अथ रागदेवशाखस्य टपा परिछेद माह ताल ३।

मेडे वेखन दितां गामेनु ॥ चफदे वेषे वारिवे राझन

नू हर्षो वेसों णार वसनले माडी चोरा ॥ टपा ॥

आयानिस भालवा राझन यार किझ घाजे नयार

हीरवनि मानितु कि मक्दा पीर दिलदि ऊईआ

मार ॥ टपा ॥ मयाने वेलियावे हरनया वसदे

गा० ३०
ट०

मनव वैरी नेडा मोवरी पीमेडियाने जिंदडी दिवानी मैंडा जिंडे ॥ टपा ॥ जाड्डाक माल की माये ॥ उस्कल गामेंडा जीनरमोदाके हाराल जिमर पर वीनावे ॥ टपा ॥ कौनगत भई मोरी आनना मिलें पिया मोकों । उन बिन कलन परत पल छिन के मैरणा बिहाय आन मिलें पिया मोकों ॥ टपा ॥

२

वाग वह्मरो निवे वेषन वलिष होमियां मैंडा दिल

घरदा वजार मियां ॥ टप्पा ॥ दावणम दिदार जारो

दा घर खेले परखाले कु मियां ॥ खोटा खारा पय

वेन भोरि मियां सोई गनि मनई भाप्तन प्यारादा ॥

टप्पा ॥ कि आलमाडिवे मियां पोकि सदी यारीदा

ले विसडडे नालन जान्दे नामन जान्दे की करवे ॥

रा॰ हे॰
ट॰

भ माक मोदि विन वढ्यां दियो होवे फोलामें ॥
टपा ॥ जिंद मोडिया रांदे नाल लगिवे ॥ आदा रंग
ने जदमें पावांगरे लगावो विन उठिहें मैडगी ॥
टपा ॥ सवि आंदी मेरे प्यारे न राज किथेवे गारि
श्रो ॥ आप कड जादे वारी नाल मही देमढ्रे य
कैंदीमें हारिश्रो ॥ टपा ॥ कीना वेकरेजा सारदा पा

3

३८

मार बला कैां छोडि बलावे मजलूं इस्क गरीबां कीां

मियां ॥ ईयार्वद घट लन मेरी दाहे फिरयां दसो मे

री मियां ॥ ९॥ देखन दाण वेला वे भला मियां

वे सान्न् चाक चाक नवाबां भोंदा कोई वे ॥ ओदा

नियां दा साडे घर वे चोरी लगि मरूवन पाकु ॥ ८

ण ॥ होवे ढोला मनपर चोदियां ॥ ओष लडारि

रा॰दे॰
ट॰

पल जपकत आपडेरे ॥ टपा ॥ पलक दरे आऊमे
रा साई ॥ जो चाहे जगराज कर वोई कर सम ऊद
रन उसि नाई ॥ टपा ॥ भई लीझे वामरी विनदेखे
नेकना सहाय ॥ जबते गमन कीनो विदेश को भव
न भावे कछु नहिंवा ॥ टपा ॥ मगा मग मेरे म
गेरे यानि सामरे मानी ॥ पगमें थरें थरें पगाथ

4

रदा गम खोवो ॥ कीश्नदेवारीआ जय दिलवे क

गावदा हैंनो यारियादे नाल रजास्दा ॥ राग टपा ॥

तोरि नगरि आमैं नारसैंगि नेनो अनन करत सभोग-

सदारंग रसरंग कराई हमकों दीनी बड़त विरोग-

टपा ॥ आज तोरन गाजैं आये पियार वाचर मेरे ॥

अंग संग रंग लागें प्रघट उरावन गान छिनल दे

बादे
ट

33

5 ५

म धामरे सामरे सानी ॥ साधे गामभे मगारे मग
मे धाम धाम पध धानी साध साध पधा धरे मगारे
गा मोरी पकन मानी ॥ टपा ॥ पधा मधरि सानि
पधे मपगा धरेरे ॥ री म्माध रो वे गानि साधसा
ध सानी धापम गारे ॥ इति राग देवशाखस्य
टपा परिच्छेदः समाप्तः ॥ शुभंभूयात् ॥

गा॰ म॰ सकला सबला दरकेप धनि। अथ च्वलनतालः

धध पप सगरी गसे सगरी ससारीसा सरिग

स सरिगस गसा पसा। सवारी विपरीत पे

च ताल। पी सधरस हेकार श्री तज स्वरता

क्रमता। अथ गीत तालः। ड्डम ड्डम घटा ड्ड

म ड्डम घटा घ्यारी गिर गिर चेग घ्यारी गिर

राग मधु प्रबंध ताल संगीत। परमानंद के

दे सिरीरागसे २ स्वरचित मधुर चिन्मकरंद

अनंद समान सम्यक निर्मलेका कलशामद

सरारी चेतन कला नयना चला। इतिस्था

ई। समताल: सवारी· श्रीमत करुण वर

स कल्लोल कला ॥ अब पंचमकी ताल· स

रा॰ म॰ इन गुण गाइये गाइये रिझाइये रघुनाथ
कौ स्वर तान तालसौं रागडौट सौं स्वर स
म सौं मान मनाइये। इत्यस्थाई। तनन त
नुम दिर दिर तोम तदीम तदीम नादिर
दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर।
तोम ततोम उदत हतुक्रततु यलल य

ति र वे ग । अथयमारतालः । कनक कनक

कन मन मेव्रः। अथ त्रयतालः । कठ केक

न कृपणिया २ । अथ दे तालः । वपकः न्ह

निमेया न्हनमेया । अथ मेगीततालः नन्ह

न गुरु रामानेद वरण मरण उदार परमा

नेदकेदे । अथ वेतरेगनतालः । चन्द्रेग गा

रा.म. छूंछे मछ सूदेग मिलाइये। पवन घ्रति घ्रति

पदति मन उड़ति यडराइये। पद नरानाप

राक्रम प्रेम रंग त्रेवट सुनाइये॥ इत्याभोगः

राग मधु लोरी नाल ३॥ लोरी लालको दे

ऊ माई कबकी ठेडी ठेडी परचाऊ। छिन

कित छनकार गाऊ बजाऊ घ्रगार चेदनका

3

लल ले लाइये। इत्येतरा। सानिधपमगरेसा

सा रेरे गग ममम पप धध निनि ससप सस

प सधाइये। सस सरन निन गाम पकईस

सरछना गुणी जन मनमान तान पाइये

परमाईये। थेय थेय थेय थेय्यया थित लो

गता थिथि ऊऊ केके थिकि टित थतन।

रा॰म॰ गेंद लियाई मालन । फूल कवरने जनम
लीयोहै नेद महर घर पालना ॥ राग मधु
युगलबंद ताल ३ । तेरी ग्रटल रहीलो रा
न पियारे महमदशाह पीया जम जम नि
त नित नवन बैठके इन मिल काज । गा
इन गुणीग्रो नेद वहीलव सब सखी ग्रन

झूला झूला झुलाऊ। लालकौं देहो मधी म
भ लोरीओ। अगर चंदनका झूला झुलाऊ
रेशमदीआ वटा डोरीआ झूलना झु॰। नव
ल हृदोरना माई झूलासी गो ऊल चंद।
केवनको दो धम गाऊ पे नगान जउतब
झरेग। आनंद भए नंदजीके उआरे मेरा

ग॰ म॰ याला लोम याला लालाले लोम् यालाले ।

लोम् यालाली याले दिर लोम् लोम् तनाना

लोम् नाना नानानानाना दिर दिम् तनाना

दिम् तान नाना दानी ॥ राग मधु दादरा ता

ल तीन । बडो रघुवीर रव धीर गउ लेक ।

को मेरा लक्ष्मण बडो धनुष धारी । पद्मदल

5

मिल करत नवबमदा रंग मिल गाऊ बजा

ऊ तान तंबूर मदीलरो साज ॥ राग मधु

तिलाना ताल ३। दानी उदे ताना दिरना।

दीम दीम तना नानानानानाना दीम दी

म दानी नादिर दिर तुम दिर दिर तुम दि

र दिर दीम तदर दानी। यालाली याली।

रा॰म॰ गागर भर भर घर श्रावै मोरा कछूना विसाल

पीश्रो सरूप सावरे ठाडे नैननमें भरो ॥

राग मधु ताल तिताला । टोना । कामन क

र समझावरे काहू देसना जावरे । जेत्रमेंत्र

डार सावीरी २ हक्के नीको पीश्रो गर लाव

रे ॥ इति मधुरागस्य॰ फूलना वगैरह समाप्तः

6

अहमाहो जोधावली लीऐ एकते एकबल
अधिक भारी। सेस धरनी धस्यो स्तर बारद
छपिडे हाथ पैवान लीऐ पावारी। दौर च
ऊ और जब मार लेका लई सकल सेसारजै
जै पुकारी॥ राग मधु ताल जत। नवली॰
अकेली चलो स्याम मधमाती लेगार जाऐ।

रा॰म॰

इहि भांति बढैगी ॥ नव वधूको रस मंजरी

मै प्रकृत जोबना कहाहै ॥ राग मयु सवैया

नाल तीन ॥ यत भूयरि लोचन लालसोमे

लि सकोंड कटाछकी कोर कढी सव मा

धुरि वानी वसी चतुराईयो केश मोहन ना

सपढी । ऊच नेह नैने नन लाज विराजति

7

राग मधु सवैया ताल तिताल। मोहिबो मो
हनकी गतिको गतिही पढ्यो बैन कहाँधौं
पढैगी ओप उरो जनकी उपजै दिन कहि-
मटै अंगिया न मटैगी। नैनन की गति पू
छ चला चलके आबदास प्रकास चढैगी
माई कहो यह मायगी दीपति जो दिन द्वै

गा॰ म॰ बिछुवै छवि ग्रीरमी पेलत पानि पियापह

सोहै। नाहि करी जिन नागरिन्ह गज राज

दियो तब ग्रंकुश कोहै॥ राग मधु ताल ३॰

पाइ परैं मन हारकरैं पलका परपाय दियो

भयभीने। सोई गई कहि केशव केसेहू कों

रही कोरक सौंहन कीने। साहस कै मन

वारगहि बहुमओरमढी। नवढी इतिबाल
हिं बालकता हति ग्रेग ग्रनेगकी फौज व
ढी॥ राग मधु सवैया ताल तिताला। उहा
उरोजनके परसे रिस भोहि चढी नवढी
छिन छोहै। दैरद बबूद ब्रुब नहीं रसरी
ति गही उनही मनमोहै। नीवीकीनी वि

रा॰ म॰ टी बडी विधिरेष लिषी जग आपूकी रेषन

कौन जु लेषो। प्रेम ते बोल सख्योन पत्यो

अकुलाय कह्यो पिय कैसी है देषो।। रागम

धु सवैया ताल तीन। आजमे देषी है गोप

सुता इक होयन ऐसी अहीरकी जाई। दे

षतही रहिये उति देहकी देषते औरन दे

सैं सब छै छिनमै हरिमानि सबै सावलीने·
एक उसासमहीके उससे सिगरेई सगंध वि
दा करि दीने ॥ राग मधु सवैया ताल तीन।
वोले नवाल वुलावत है नषेरष लिषे म
व प्रेम परेषौ। आपन हाथ विलोकि वि·
लोकि कही नवके सब बुढि बसेषौ। बो

रा॰म॰

सभीत भयो कियौं सीत विसेष्यो । सुदित
होत सषी वरही मेरे नैन सरोजनि सोच ।
कै लेष्यो । नैंन कह्यो सुख मोहनको ग्रह
विट सौंहै सो तो चंदसो देष्यो ॥ रागमयु
सवैया ताल तीन । कान्ह भले जू भली स
सुकाई हौं मोहि ससुद्रकौ सौ उमह्योहो ॥

10

बी सुहाई। एकहीं वेक विलोकनि ऊपर-

वारौं विलोकि निकाई। केशवदास कला

निय वक सुक्रिय कामकि मेरी कन्हाई॥

गुगा मधु मवैया नाल लीन। ज्यौं ज्यौं ऊला

म सो केशवदास विलास निवास हिये

सुबरेखौ। त्यौं त्यौं बढौ उरकंप कछुक

रा॰ म॰

आनेद केद हिये उलहे हैं। औह विलानि
कोमल हासनि श्रेग खवासनि गाढे गहे
हैं। वेक विलोकनि को अविलोकि स मा
कहे हैं नेद कमान रहे हैं। एई तो कामके बा
न कहावत फूलनके विधि भूलि कहे हैं
राग मधु सवैया ताल तीन। तो हित पाय

केशव आपनो मानि कसो मन हाथ परा
यै कौनै लह्यो है। नैन नही मिल बौ
करिये अब बैनन कौ मिलिबौ तौ रह्यो है।
ज्याइ कह्यो तुम जैसो भयो भइ ऐसे ही गुपा
ल मै ऐसो कह्यो है ॥ राग मधु सवैया ता
ल तिताला। है गति मंद मनोहर के सब

ग॰ म॰ आज विराजत है कहि केसव श्री वृषभान।
कुमारि कन्हाई। बानि विरंचि बहि क्रम का
मरची रचि चारि सबुद्धि बनाई। ग्रेग बिलो
कि त्रिलोकिमे ऐसीको नारि नहि जहि ना
रि निकाई। मूरतिवंत सिंगार समीप सिं
गार किये किधौं सुंदर ताई॥ राग मयु।

12

बजावत नाचत बार अनेक सिंगार बनायो ·
नीहमै आनकौ आनिबौ छोड्यौ पै तेरौ नेहु
भयो मन भायो । भावै स है करिबौ करि ।
भामिनि भाग बडे बसतैं करि पायो । कान्ह
सौं सनेह जु चाहति नाही सम्हारति है अब
पार लगायो ॥ राग मधु सवैया ताल ३ ॥

रा॰म॰ कीनो। राग मधु सवैया ताल ३। चितवौ चि
त चोरु हमारु हमैं हो बुलारु तें बोलौ रहौ
नित मौनै। मैंह अनेकनि आवहु अेक करौ
रतिकौ अति रैन कौ गौनै। अबारुतें आहु ब
याह बिरीजन आईहौ केशव आजही गौ
नौ। मोहनके मनकौ मोहनी सु कहौ यह

॥ श्री ॥ रस मंजरी ॥ ७३ ॥

13

सवैया ताल तिताला । आवत देषि लिये उठि
आगे ह्वै केशव आपुहि आसन दीनौ । आपु
हि पाइ पषारि भले जल पानकौ भाजन
लाइन दीनौ । वीरा बनाइ कै आगे धरे ज
ब बैठे हरिकौ कर बीजन लीनौ । बांहे गही
हरि ऐसो कह्यो हसि मैनो इतो अपनायन

रा॰गे॰
ट॰

३

भमाक मोदि विन वफ्ये दियें होवे फोलामै ॥
टपा ॥ जिंद मोड़िया रोंदे नाल लगिये ॥ आदा रेरा
ने जद मैं पावां गारे लगावां विन छिदेओ मेटगी ॥
टपा ॥ सखि आंवी मेरे प्यारे नू रात किथे वे गारि
ओ ॥ आप कुड़ जांदे वारी नाल मेरी हे मछूड यकै
दीमैं सारिओ ॥ टपा ॥ कीनां करे जा मारदा पा
वे

३

मार चला कों छोडि चलावे मजनू इस्क गरीबां कों

मियां। इयाबेदा यदमनमेरी दाई फिरयादसो मेरी

मियां॥ टपा॥ बेडन सापर वेला वे भला मियां

वे मानू बाक चाक जवानी भोदा कोई वे॥ ओदा

नियोदा साडे घरवे सोरी लगि महवत पाक॥ ट

पा॥ होवे फोला मन पर चांदियां॥ ओघलडोदि

रा॰गे
ह॰

लागे पल ऊपकन आपड़े रे। टपा। पलक देख्या
ऊ भैया साई। जो चाहे जग राज करवाई करमम ऊ
टरन उसिताई। टपा। भई लीइं बांमरी विन देखेने
कना सहाय। जबसे गमन कीनो विदेशवा भवन
भावे कछु न हिंया॥ टपा॥ मगा मय मेरे मचोरे
याति सामरे सानी॥ पगामें परें परें पगा य।

४

रहा गम खोखो ॥ कीएक्कू देवागीआजय दिलवे

करारहा झैंनो यादियो दे नाल गजारदा ॥ टपा ।

नोरि नगारि आमैं नारझैंगि नेनो अनन कररस

भोग । सदारंग रसरंग कराई हमको दीनी वड्ड

न विरोग । टपा । आज नोरन गाजैं आये पियारवा

नरमैर । अंग मेगा रंग लागै फचटउराव गान खिन

ग॰गी॰

८

म धामरे सामरे सानी । सारे गामम मे सगरे मगामे
धाम धाम पेप धानी साध साध पग धरे ससारे
ग मेरी पकन मानी । टपा । पग मधरि सानिप
रे मपग धरेरे । री समाध सेधै गानि साध सा
ध सानी धापम गरे ॥ इति राग केदार टपा
परिच्छेदः समाप्तः ॥ शुभंभूयात् ॥ ॥

रा॰ग॰
च॰

दरकेपधनि। अलनाल। धध पप मगरी गमंमग
री मगरीसा सरिमग सरिगमगसा परमा॥ इंग्यत
ना। अथआभोगः॥ अलवारी विपरीत। पंचता
ल॥ पीमधे रसहेकार श्रीतज सरता क्रमता॥
गीततालः॥ डुम डुम घटा डुम डुम घटा धारी गि
रगिर चेग धारी गिर गिर चेग॥ यमालताः॥

अथ रागगंधार अवंय परिछेदमाह तालसंगीत

परमानंदकंदे सिरी रामरे स्वरविन मधुर विन्म

करंद अनंद समान सम्यक् निर्मलका कलशम

ट सगरी चेतन कला नयना वला ॥ अस्यार्थ-

अथ समताल । असवारी ॥ श्रीमन करुणावरस

कलोल कला । पंचमसवारीताल । सबला सकला

गा.गे.
व.

नालसौं गग ऊंटसौं स्वर ममसौं मान मना२ये ।।
२न्यस्थाये ।। ननन नन्नम् दिरदिर नोम नदीम
ना दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर नोम
ननोम् उदनदन क्तनने यललल यलल ले ला३
ये ।। इत्यंतरा ।। अथ आभोगः ।। स्तालिय पम
गरे सासा रेरे गग मम पप धध निनि ससपस

ग २

कनन कनन कन मन मेघः ॥ त्रयतालः । कटके
कन त्रयताथा । दोतालः । चपक ॥ रुति मेथा
रुन मेथा ॥ संगीत ताल । तन्मन गुरु रामानंद
चरण सरण उद्धार परमानंद केदे ॥ इतिताल
प्रबंधः ॥ चतुरंगतालः ॥ ३ ॥ चतुरंग गाइनगु
ण गाइये गाइये रिझाइये रघुनाथकों सरतान

३२

रा॰गं॰
व

रंगा चैव दम्भनाईये ॥ इति राग गंधार वनरंगा प
रिच्छेदः समाप्तः ॥

३

सप ह्याइये । मन हरन तिन ग्राम एकई

म स्वरकुना गाली जन मन मान तान पाईये।

पेय पेय्य पेय पेग्ग्या पिन लेगाना पिपिक्र

क्र केके पि किटिन रगन थेथे स्तऊ स्तदे

य मिलाइये । परन घनि घनि पयनि मन

उहनि यङगइये । पद नगाना पराक्रम प्रेम

रा॰टो॰

पा ताल ।३। मयाने वेलियावे हुवनया वसदे लोक

विगाने । मिज़न करदि वारिवे पैयां नापउदी वे

मियां रवककरेन सिंमड़े श्रावो नैयनादे ॥रागि

नी टोड़ी मधुमाधवी टपा ताल ॥३॥ केहा जाड़

ङाकीता वेदिलन कदरना जाने दर कदर मियां

वेषनन मस्ताक जि मेरा इस्क लगामन लीता

रागिनी टोडी मधुमाधवी टपा ताल॥३॥ नांडे वेख

नदि तांगामेन। चक्रवेषां वारिवे राकनन्न हरोंवेमो

हाणा रवमनले साडी वांग। रागिनी टोडी मधुमाध

वी टपा ताल।३। श्रागानिम भालवो रांकनयारकि

ऊयांतेन्नयार। द्वीरनि मानिनकि धुब्बदापीहा द

ल दिऊई श्रांसार॥ रागिनी टोडी मधुमाधवी ट

रा॰टो॰

य चांन शोरि मियां मोई गनि मत ईमान प्यारांदा

रागिनी टोडी मधुमाधवी टपा ताल ॥२॥ किजाल

माडिवे मियां योकिसदी यारीदाले विसडडे नाल

न जानं नामन जानंकी करवे। मख वेखां नेडासा

वगे यांमैंडियाने जिंदडी दिवानी मैंडा जिडरे ॥

रागिनी टोडी मधुमाधवी टपा ताल ॥३॥

दिलन्। रागिनी टोडी मधुमाधवी दपा ताल ।।३।।
चल उठकर दीदनयारा मियां। दीदन यारेदा श्रा
मदा जांदामियां। बाग बहारां निवेवेषन चलिए
होमियां मैंडा दिल परदा वजाव मियां।। रागिनी
टोडी मधुमाधवी दपा ता॰।।३।। देखणा दिदार जा
दंदा परावले परावायलेक्कमियां। खोटा खारा प

रा॰टो॰ चला कीं छोडि चलावे मजनूं उस्क गरीबां कों मि
यां ॥ ईयाखदा यद सनमेरी दाद्दे फिरयादसी मे
री मियां ॥ रागिनी टोड़ी मधुमाधवी टपा ताल ॥३॥
खिडुनदापरवे लावे मला मियां बेसा न चाक
चाक जवावां भांदा कोईवे ॥ श्रांदानि यांदा
साडे छवे शोरी लगि महबत पाक ।

3

जाइडाक मालकीनाये॥ इस्कलगामैंड़ा जीनर

मंदाके हाह्राल जिगर परबीताबे। रागिनी टो।

डी मधुमाधवी टपा ताल।३। कौनगत भई मोरी

आनना मिलैं पिया मोकों। उन बिन कलन परत

पलछिन कैसैरैण बिहाय आन मिलैं पिया मो

कों। रागिनी टोड़ी मधुमाधवी टपा ताल।३। मार

रा॰टो॰

सखि आवी मेरे प्यारेन् वात कियेवे गारिआं ॥ आप
छड जादे वारी नाल मही हेमकुंड थकेंदी मैंहा
रिआं ॥ रागिनी टोडी मधुमाधवी दपा नाल ॥३॥
कीतावेकरेजा मारदा पारदा गम खोखो । की ।
पुछदे वारीआ जय दिलवे करारदा हौंतो यारियां
देनाल गुजारदा । रागिनी टोडी मधुमाधवी दपा

4

रागिनी टोडी मधुमाधवी टपा ताल ॥३॥ होवे
छोल्लामन पर चांदियां। श्रांब लडां दिस माकमां
दि बिन चढ़यां दियां होवे छोल्लामें। रागिनी टोडी
मधुमाधवी टपा ताल।३। जिंद मांडियां रदे नाल ल
गिवे। आदां रंगनें जदमें पावां गरे लगावां बिनडि
ठेआं मैठगी। रागिनी टोडी मधुमाधवी टपाता।३।

राटी·

वी टपा ताल ॥२॥ पलक दरे आऊ मेरा साईं । जीवा है जगराज कर वोई करमम ऊदरन उमि ताईं ॥ रागिनी टोडी मधुमाधवी टपा ताल ॥३॥ भई लीऊं बांमरी विन देखेनेकना सहाय ॥ जवते गमन कीनो विदेश वा भवन भावे कछुनहिंवा ॥ रागिनी टोडी मधुमाधवी टपा ताल ॥ ३ ॥

५

ताल ३। तोरि नगरि आमें नारहौंगि ते नो अनतक
ररस भोग। सदारंग रमरंग कराई हमकों दीनी
बहुत विरोग। रागिनी टोडी मधुमाधवी टपा ता
ल ३। आज तोरन गाजैं आये पियारवाहरमेरे अंग
संग रंग लागें श्रघट इगावत गात छिनल खेप
ल जपकत आप डेरे ॥ रागिनी टोडी मधुमाय।

रा·टो·   गरे ॥ इतिरागिनी टोडी टपा समापतम ॥ ॥

6

मग मध मेरे मगेरे धानि सासरे सानी । पगमे
धरें धरें पगधम धामरे सासरे सानी ।। सारे ग
ममे मगरे मगमें धाम धाम पेप धानी । साध सा
ध पग धरे सदारंग मोरी एकन मानी ।। रागिनी
टोडी टपा ताल ।।३।। पगमधरि सानि परे मपग
धरेरे । री समाध होवैगानि साध साध सानी धापम

रा॰टो॰

गोकुलचंद । कंचनको दोधम गडाये नगन जडत

बहुरंग । आनंद भये नंदजीके दुआरे मेरा शूंदलि

याई मालन । कुल कवरने जनम लीयोहै नंद

महर घर पालन ॥ रागिनी टोडी जुगल छंद

ताल । । तेरी अटल रहीलो राज पियारे पि

यारे महर मद शाह पीया जम जम निव नित ।

रागिनी टोडी तोरी माला । तोरी लालको दे
ऊ माई कबकी ठांडी ठांडी परचाऊ। छन कित छ
न कार गाऊ बनाऊ अगर चंदनका फूलना फुलाऊ
लालकों देहो सखी सब लोरीआं ॥ अगर चंदन
का फूलना फुलाऊ रेशम दीआं वटी डोरीआं ।
फूलना । नवल हंदोर नामाई फूलासी =

रा·टो·

दीम तदर दानी । यालाली याली याला लोम या
ला लालाले लोम् यालाले लोम् यालाली याले दि
र तोम् तोम् तनाना तोम् नाना ना ना ना ना दिर
दिम् तनाना दिम तान नाना दानी ॥ रागिनी टोडी
सादरा ताल । । चढो रघु बीर रथ धीर गाढ लंक
को संगल झमन बडोयनु घयारी ॥ पद्म

तै
२

नवत बैठके इन मिल काज। गाइन गुणीश्रो न
न्द वहीलवा सभसभी श्रनमिल करन जवव स
दारंग मिल गाऊ वजाऊ तोन तेहूर मदीलरो सा
ज ॥ रागिनी टोड़ी तराना ताल। । दानी उदे
ताना दिरना दीम दिम त ना नाना ना नाना ना ना
दीम दानी नादिर दिर तम दिर दिर तम दिर दिर

रा॰टो

विसाज पीआ सहप सावरे ठगनो नैननमैं भरी ।

रागिनी टोडी टोना ताल । । टोना कामन कर

समझावरे काह देसना जावरे ॥ जंत्र मंत्र डार

सावीरी हछे नीको पीआ गर लावरे । इति रागि

नी टोडी लोरी फूलना जुगल छंद तराना साद

रा जत टोना समापतम ॥:

3

१

ल ३

दल सुग्रह सारंग जोधा वली लीये एकते एक वल

अधिक भारी । सिस दारनी धस्यो सूर वादर छपि

ऊ हाथ पैरवांन लीये पवारी । दोर वज और जव

मार लंका लई सकल संसार जैजै शुकारी ॥

जन । न वेली अकेली वलो स्याम मथ मातनी लंग

र जाये । गागर भर भर धर आवै मोरा कह्मना

रा॰ष॰
क॰

स रूपकीसी माला प्रेमकीसी माला आजलौन
दीवी मनि जेसी आज दीसीहै ॥ राग षट् कवि
त ताल ॥ २ ॥ चंचलन हूजे नाथ अंचरा नछू
जै हाथ सोवे ने ऊमारिकाऊं सुकनो सुवायो
जू ॥ मंद करो दीपदुति चंदमाव देखियत
दोरिके दुराई आऊं द्वारते दिषायोजू ॥ ॥

गुणरागा षट् कवित ताल।२।। सकल मनि
न कीन्है मम्म शशीसी नाक दांत दाड्यौं दामनी
हसनी वनीसीहै। मोहनके मैनके गुणगान
कोसीरेष भकटी सुवेष भाव भेद छवि छो
सीहै। चित चतराई उजकीसी उजकेसे ग्रह
जव सजकैनो नैन जैसे उजकीसीहै ।। केसोदा

रा·ष·
क·

है ॥ अवलौनी देषनिंही ड्हो कहू ड्हनो नही अ
वहंने देषियत उरउठ नयो है ॥ रहसि रिवलन
गई मोने जेबभारी भई कियो याते बाजभयो म
हा वर दयो है ॥ आंषनकी मेरी फाटन सी आव
न है जानन हीं रीढ लागि केशो जोकि गयो
है ॥ राग षट कवित माल ॥३॥ सावंदे ॥

म्रगा जमराल बाल वाहिरे विडारि देके भाव्योन

मेहे केशव समोहू मन भायोजू । छलके नि

बास ऐसे ववन विलास सनि मैरणा सरनिहे

ते स्याम सवे पायेजू ॥ राग षट् कवित ना

ल ॥ २ ॥ इतउत चाहि देषो जव कोऊ फि

रा नाहि बारबार जिय कहो हिये कहा भयो

रा॰ध॰
क॰

हौयौं रसिक नए यामै कौन रमैहै ॥ रारा ध
ट कविन नाल ॥ ३ ॥ प्रथम सकल सचिम
ज्जन अमल वास जावक सुदेस केस पासको
सुधारिवौ ॥ अंगराग भूषण विविध सुरवे वा
स राग कज्जल कलित लोल लोचन निहारिवौ ॥
बोलनि हसनि मृदुचानरी चलनि चारु पल पल

३

सवीन बीच दैकै मीड़ै षायकै षवाय कछू स्वा
द वर कीनी वस वसै है। कोमल म्रनाल कासी
मल्लकाकी माल कासी वालिका जवारी मोटि मा
नस किय सहै है। जानै को विभात भयो केशव
सहै को वात देषौ अति गात भयो कियौं भ्रम
है। विरली जराषी पर विरनी विविध गतिक

गा॰ब
कं

पि बिवाकहै । छूटि जाति लाज जहाँ भूषण खुदे
स केस टूटि जात हार सब मिटत सिंगाकहै ॥
छूजि छूजि उठैं रति कूजितनि खन घरी मोईनौ
खरनि सखि औक बिवहाकहै ॥ राग घट
कवित ताल ॥ ३ ॥ तान कोसो गान सब बल
बल बीर कौसौ मान कौसौ मरव महो मोहि

अति पति व्रत अति पारिवौ । केशोदास सविला

स करइ जथारि गाथे इहि विधि सोरह सिंगारनि

सिंगारिवौ ॥ राग षट कवित्त नाल ॥ ३ ॥ केश

वदास सविलास मंद हास जुत अवलोकनि

अलापनिकौं आनंद अपार है । बहिरंग स्नान अ

रु अंतरति स्नान अतिरति विपरीतिनि निकौं विवि

रा॰ष॰ देषीहै गपाल पक गोपिका अनूप रूप सोतेतेस
कं लोनो वाम सों येत सवाईहै । सोभाई स्वभाई अव
नार लीनो घनस्याम कियौं यह दामिनीयौं काम
नीकै आईहै । देवी कोई दानवीन मानवीन होय ऐ
सी भानवीन ह्वाइ भाइ भावनी भफाईहै ॥ केशो
दास सव स्वष साधन की सिद्ध यह मेरे जाने मैन

मन भायोहै। चलसौ प्रबल सील अनल मेघ

ल बिन जलसे अमल नेज नेज कौसो गायोहै।

केशोदास बसन प्रकासके प्रकास घोषचार व

र चटचट चेक बनौ छायोहै। रतिकौसो रतिना

य रूपरति नाथकौसो कैसो केसोराइ छूट कौ

न पहि पायोहै॥ राग छट् कवित नाल।३।

रा.ष.
क.

6

देवना वषानी है । ऐसी बानैं कौंन जुन मानी ष
नि मेरी रानी उनके गोनेरी बानी वेदकीसी बं
नी है ।। रागा षट् कवित नाल ।। ३ ।। कैधौं गट
ह काज कैधौं क्रूटोन सषा समाज कैधौं कछू
प्राज ब्रज वासर विमानतै । दोनोंतें न सोय कि
धौ काजसो भयो विरोध उपज्यो प्रबोध कि

८

हो सो मैन का की जाई है ॥ राग षट् कवित ना

ल ॥ ३ ॥ वोली कोसो पान नोहि करन सेवा

रि वोई दर्पन ज्यों नोही मोऊ मरती समनी है।

नैर मनोरथ भगीरथ रथ पीछे पीछे डोलत

गुपाल मेरो गंगा कोसो पानी है । नेही लिय दे

वनापै पायो पति केशोराय पतिनी वडुत पति

रा॰ष॰
क॰

दास नामै उरी दीपकी सिषा सी दौरी उरावति नी
ल वास उति ग्रेग ग्रेगकी। पौन पानि पंछी प
सु वासमै सवद सुनि जित जित चौकि चाहै चो
प संगकी। नेदला आगाम विलोकै जज जा
ल वाल लीनी गति नहि काल पिंजर पतंग।
की॥ इति राग षट् कवित समापतं॥ ॥

यौ उर अबदानतैं । सावैमन देह किधौ मोहसौ

कपट नेह किधौ देषि मेह अलिउरे अपियानतैं ।

किधौमेरी प्रीतको प्रतीत लेत केशोराय ब्रज

ह्वेन आयमन सषौ कौन बानतैं । राग षट् क

विन माल । २१ चंदन विटप बघुकोमल विमल

दल ललित वलित लता लपटी लवंगकी । केशो

रा॰ष॰
ग

जवलाद वलेगा वन जारा। गई है तलकावी वन जारा
श्रीर खिणभी नेही भारी है। अय गाफिल तउसे भी व
द्धना एक श्रीर वश आया री है। क्या शक्कर मिसरी
केंट गिरी का सालर मीठा खारी है। क्या दाव मन
का सौंठ मिर्च क्या केसर लौंग सपारी है। नवगियाला
हैं वल भी जो सर्व पद्धम जावेगा। या हद वफाकर लावे

अथ राग षट् गजल निमारा ॥ २ ॥ टुकाहि
रस रुवाको छोड मिया मन देस विदेस फिरे
मारा । कजाक अजल्का लुटै है दिनरात वजा
करन कारा । क्या भैसा भेड्या वेल शुतर क्या गा
वे पल्ला सिर भारा । क्या गेहूं चावल मोठ मटर क्या
आगाय आका झेगारा । सब ठाट पडा रह जावेगा

रा॰ष॰
ग॰

फिर तेंडाहै मैं भेडाहैने हलवाईने मांडाहै ।४। जब
चलते चलते रस्तेमैं यह गौन नेरीफल जावेगी ॥
एक वगीचा नेरी महीपर फिर वरने वासन आवे
गी । यह देवणजो नने लादीहै सवहिमसोमैं व
ह जावेगी ॥ थी एक जवाई बेटा का वन जा
या पासन आवेगी ॥ ५ ॥ कौ नाहक बोज उ

गाया खाटा बाया पावेगा । बट मार अजल्का रसे
मै जब भाला मार गिरावेगा । धन दौलत नानीतो
साकया एक भनगा पासन जावेगा २ इस मंजिल
मै अवसाथ मेरे यह जितना डेरा उठा है । जरदाम
दिरमका भांडा है वहक सिपर और खोडा है । जब
नाइक तनका निकल गया जो मलको हाडा है

रा॰ष॰
ग॰

3

प वदनकी है। खेपनी क्याथाल कटोरा चांदीका क्या
पीतल का फकना फकनी। क्या बर्तन सोने रूपेके
क्या मट्टी की हंडिया चपनी॰ मगर हरनशे नलवारौप
र मन भूल भरोसे छालौंके। सब घमंड तोड़के भौंगेगे
सहदेव जलके भालौंके। क्या उन्ही हीरे मोतीके क्या
ढेर खजाने मालौंके। क्या उनके नाशा मशा ज्यव क्या

टा नाहै इन गौनै भारी भारीके। जब काल लूटेगा
ग्रान पडा फिर हूनहै औगारीके। क्या साज जड
ऊ जर जेवर क्या गोटे थान कीनारीके। क्या घो
डे जीन सुन हरौंके क्या हाथी लाल अमारीके
६ जो खेप भरे तू जाता है यह खेप मिया मत
जान अपनी। अब कोई घडी पल साथन मै यह खे

रा॰ ष॰ ग॰

4

फिरता है जंगल जंगल। एक भूमगा पासन आ
देवा। मोकूफ हुआ जब अन्न और जल। बर बार
अटारी चौपाये का तोसा नन रबाब क्या मलम
ल॥ क्या चिल बनन कीये रेशम को क्या ला
ल पलेंग क्या रंग महल॥ ९॥ क्या शुवेत म
कान बनता है रैरवभ नेरे ननका पोला। ने ऊंची

४

नाखने शाल दुशालोंके ८ अक्क का मन आवेगा नेरे

घरलाल जमर्रद मीमोजर। अब इसी वाटमें फिरे

गी जब आन बनेगी जोकर। क्या मम नेद नकिए

मल्क मकान क्या वोकी अबसी नखने खबर।

क्या माल खजाना मलक मकान दौलत हशमत

फौज लशकर ९ यह सम यस्का साथ लिये कौं

रा-ष
गा-

5

बाक कल हदकी फाकेगा । उस जंगलमें जब
आदनजीव एक भनगा आनन झांकेगा ।५। य
ह पेट अजाईबहै दुनियांकी और क्या क्या जिन
स इकट्ठीहै । यहां मालकी खीका मीठाहै और बीज
किसिकी खेहीहै । कब्ब पकनाहै जब बनताहै
पकवान मिठाई पहीहै । जब देखो तुवमें आविब

गाफ़ी उठाता है यह गीरगाफ़ने मुह बोला । क्यों र
नी खेद करेद वहांका कोट केंगुरा ग्रम मोला । क्या
बुर्जैं है इला तोप किला काशी शादाह गैर गोला
॥ अब काल फिरा कर चावक को यह बैल वदन
कांहां केगा । कोई नाज समेटैगा नेरा कोई गोन
सिये और टेकेदा । हो फेर अकेला जंगल में हू

रा.ष॰
गा॰

6

जब देखा खूबतो आखिर कोमे दिल्लाईहै नामाहै ख
लक्षोगन ॥ कोई सेठ महाजन लाखपती जेवजा
ज कोई पसमारीहै । यहां वाजा किसीका हल
काहै और खेप किसीकी भारीहै । क्याजाने कौन
खरीदेहै और किसने जिनसउतारीहै । जब देखा
खूबतो आखिरको दल्लालन कोई ब्योपारीहै ४

रको मैलहा भाउल भहीहै । गलशोर वहला या
गहवा औरकी चट पानी महीहै । हम देखतेके
ईस दुनियांको सब योखेकीय सीहीहै । कोईताज
खदीदेहैस कर कोई मखेनणझवन खानाहै
कोईकपडेरंगे पहरतीहै कोईगुदडी ओढे जाताहै
कोई भाई बाप चाचा मामा कोई मानी सनकहातीहै

गा-घ-
ग-

आ मिलका मिलदाना कोई मस्त सिहा दीवानाहै।
तावीज फलीला फालफले और जाडु मंतर लानाहै
जब देखा ह्वनो आखिर को सब हीला मकर बहा
नाहै। कोई लोटे कूचे गलियोंमें नेयार किसीका
बेराहै। तिनक जीघे जगाउे रहेहै यह मेराहै यहते
राहै। जब देखा ह्वनो आखिर कोन मेराहै। ८।

कोई फलके बैठे मसनंद पर कोई रोवे अपनी दौल
तको। कोई बोले अपना मुजसे लो और मेरा है
सा मुझको दो। कोई लडता है कोई मरता है जा
ई हक और नाहकको। जब देख रहे बनो आवि
रको कबूलेना एक न देना दो ५ रम्म नजूमी
आ मिले है और फाजिल मुला स्याना होरा। कोई

अकेला जाता है ११ कोई रोता है कोई हस्ता है कोई ना
चे है कोई गाता है । कोई कोने ऊपर ले भागा कोई थो
म उर दिखलाता है । कोई माल इकठा करता है को
ई ऊंची झलक लगाता है । जब देखा खूब तो आखि
र सब झगडा रहा जाता है । कोई बैठे भंग शराब
अफ़यूम कही हथ दरी को फेरी है । कोई पला किसणा

कोई टोपी टोप बनाता है कोई बांधा फिरा अम्मामा

है । कोई साफ बाहना फिरता है ने पगड़ी न पाजा

मा है । कम खोघ गजी और गाढे का तिन कजीया

है । जब देखा हम ने तो आखिर को ने पगड़ी है ने जामा

है ॥८॥ कोई बाल बढाय फिरता है कोई सिर को घो

ट मुडाता है । जब देखा हम ने तो आखिर को सब छोड

रा-ष-
ट

मयाने वेलियावे हरनया वसदे लोक विगाने
मिइन करदि वाविवे पैयो नापडदी वे मियो
रवकेरन मिमदे आवो नैयनादे ॥ रागष
ह टपा निनारा ॥२॥ केहा जाडुडा कीता
वेदिलन कदरना जाने दर कदर मियाम।
वेषनन्ह मस्ताक जिमेरा इस्क लगामन लीता

१२

अथ राग षट् टपा ताल ॥ ३ ॥ तोडे वेववनदि

तोगमेन । वफवेषो वारिवे राजनन् हुरोवेसो

गार वमनले साटी वोग ॥ राग षट् टपा ता

ल ॥ ३ ॥ आयानिस भालवो राजन यार कि

ह्ययोन न्यार ॥ होरनि मानितुकि पुक्षदापी

ह् दिल दिहई आसार ॥ राग षट् टपा ता ३ ।

य वांन शोरि मियां सोई गति मत ईमान प्यारे
दा ॥ राग घट टपा ताल ॥ ३ ॥ कि जालमा
डिवे मियां ये किसदी यारीदाले विसडडे ना
ल न जान्हे नामन जान्हे की करवे । सब वे
खां नेडा सांवरे यांमे डियाने जिंदडी दिवानी
मैंडा जिडे ॥ राग घट टपा ताल ॥ ३ ॥ =

दिलन् ॥ राग षट् टपा ताल ॥ ३ ॥ वल उ

ठ कर दीदन यारा मियो ॥ दीदन यारे हा ग्राम

दा जो दा मियो ॥ वागा वहारे निवे वेषन चालि

पहो मियो मैंडा दिल पवदा वजार मियो ॥ रा

ग षट् टपा ताल । ३ । देखणा दिदार जारेदा

परावले पराबायले कमियो । खोटा खारा प

रा॰ ष॰
ट॰

चला कौं छोडि चलावै मजनूं इश्क गरीबां कौं
मियां ॥ ईया खुदा यद सुन मेरी दाहे फिरयाद
सो मेरी मियां ॥ राग षट् टपा ताल ॥ ३ ॥
खिउनदा परवे लावै भला मियां वेसान् चाक
चाक जवावां भांदा कोईवे ॥ छांदा नियां
दा माडे चरवे भोरी लगि महरवन पाक ।

३

जाउआक मालकीनाये । इस्कलगा मैंउाजीनर

मोद्दाके ह्राह्राल जिगर परवीनावे ॥ राग षट्

टपा ताल ॥ ३ ॥ कौन गत भई मोरी आनना

मिलै पिया मोकौं ॥ उन बिन कलन परतप

लछिन के सैरण बिहाय आन मिलै पिया मो

कौं ॥ राग षट् टपा तालतिताा॥ ४ ॥ मार

रा·म·
ह·

मचि आवेंदी मेरे प्यारे नू यार किथे वे गाविग्रा ॥
श्राप छड़ जांदे वारी नाल महीं देमपेंड थके
दी मैं हारिग्रा ॥ राग घट टपा तिताया ॥ ३ ॥
कीताथे करेजा मारदा पारदा गम खोवा ॥
की फ़ट्टदे वारीग्रा जय दिलदे करारदा हैंनो
याँदे नाल गुजारदा ॥ राग घट टपा ॥

4

रागा घट् टपा नाल ॥ ३ ॥ होवे फोला मनप

र चोदियाम् ॥ श्रोष लड़ेदिम माकमोदिवि

त वफ़यो दियो होवे फोलामै ॥ रागा घट्

टपा नाल ॥ ३ ॥ जिद मोडियारोदे नाल ल

गिवे । श्रादारंगने जदमै पावोगरे लगावो

विन डिटेश्रा मैटगी ॥ रागा घट् टपा नाला ३ ॥

रा॰ष
ट॰

टपा ताल ॥ ३ ॥ पलक दरे आज मेरा साई ॥
जो चाहे जगराज कर बोई करमम कदरन उसि
नाई ॥ राग षट् ताल ॥ ३ ॥ टपा ॥ भई ली
झे बोमरी विन देखे नेकना सहाय ॥ जबने
गमन कीनो विदेश वा भवन भावे कछुन
हिंचा ॥ राग षट् टपा तिताला ॥ ३ ॥ ॥

५

ताल ॥ ३ ॥ तोरि नगरि आमैंना रहौंगि तेतो अ
नत करस भोग ॥ सदा रंग समरंग कराई हम
कौं दीनी बहुत विरोग ॥ राग षट् टपा ताल
॥ ३ ॥ आज तोरन गाउँ आये पियार वा घरमे
रे ॥ प्रेम सेग रंग लागै प्रचट उरावत मान
छिनल खेपल झपकत आप डेरे ॥ राग षट्

रा॰ष॰
टं

साय सानी यायम गारे ॥ इति राग षट्टपा

समापतम् शुभं ॥ ॥

6

27

६

मग मय मेरे मगेरे यानि सामरे सानी ॥ पगमे
यैरे यैरे पगयम यामरे सामरे सानी ॥ सारेग
ममे मगरे मगमें याम याम पेप यानी ॥ सा
य साय पगयरे सदारंग मोरी पकन मानी ॥
गग घट् टपा ताल ॥ ३ ॥ पग मयनि सानि
पेरे मपग यरेरे ॥ गीममाय ह्रोवैगानि साय

गा॰घं॰
गा॰

है। जब देखो हुंवनो आगिवरको सब बिकरी देखन
भूलीहै २२ कहीं बान ञटेबन टाट पगड़ी कहीं दम
राव चमरखन कलाहे। कहीं गाक रुपयेका खुब
टा कहीं कौड़ी पैसा येलाहै। कहीं खुटना खाजा पि
टारी है कहीं बिकता खाट खटोलाहै। जब देखो
हुंवनो आगिवरकोने पीढी खाट बराबोहै॥ २३॥

९

लाताहै कोई लादेवै लसुकेरीहै । कोई जगाडे अपनी
जागाह पर यह मेरीहै यह तेरीहै । जब देखा खुवलो
आखिर कोन तेरीहै न मेरीहै न मेरीहै ॥१॥ कंहीवली
टेकी हनीहै कहीं खोसी कटवकी पलीहै । कहीं
चलनी छाजपिटारीहै कहिं तुलसा चकीउली
है । तरकारी बैगन साग हरा गडगाडगाजर मूली

रा॰ष॰
रा॰

लगीहै यह अखोहमजा वरवा कहिये। येसैरन
माया देनरवे जीर अवजा कहिये हजा कहिये। कब्बु
वान नहीं वन अनेको डुपवाप भलाहै क्या कहिये
गुलशोर॥ आखरवा औरकी वडपानी महीहै।
हमदेखेडुके हम डुनियाको सब थोखेकी महीहै।
वटमार अजलका आपहुंचा इक हकोदेखडेरा बावा

10

कोई शिकरा बाज उड़ानाँहै कोई हाथोंमें राखके उड़न
लीहै। शाहबाज कोईले बैठाहै और हौर किसीने उ
ड़नीहै। हैनाव किसीके हाथोंमें और नावनी फिर
न उड़नलीहै। जब देखा हुबनो आखिरको नरेश
म सलन हलनलीहै २७ अब किस्कां रंग बुरा कहि
ये और किस्का रूप भला कहिये। एक दमकी पैर

रा-घ
ग

न्नकरो या दानकरो। याउरी लड्डू वटवा ओया खो
सा हलवा नानकरो। ऊक्क लनफ नहीं अव जीनेमें
अव चलनेका सामानकरो २८॥ ननरूपा॥ दिल
काटो अपना जीनेसे अव और गलेका मनकाटो।
अव वाट फूनाकी टुरखेववको और हून कि
सीका मन चाटो॥ अन कोऊ हिस्से व॥

१२

अब शाकबरी श्री आंखोंसे श्रौर श्रांसू सरद भरे बाबा।
दिल हाथ उठाकर जीने सेवे बस मन मार मरे बाबा।
जब बाप की खातिर रोते थे अब अपनी खातिर रो
बाबा। तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़े पर जीन धरे
बाबा २९ जब जीने को तुम कहव मन दो श्रौर मरने
को मरमान करो। वैरान करो रहमान करो या ग

रा॰ष॰
रा॰

12

मन देर करो । २९ । सिर कोंपा चोटी बालऊ पत्थर
पीला पलकें श्रान ऊकी । कद देखा कान ऊप व
हरे भैर श्रोठें भीतु पलायगाई । खाबनी दगाई श्रोर
झाव चटी दिल खलऊवा आवाज नहीं । जो होनी
थी सो होगुजरी अब चलने में जल्दे देर नहीं ३- इस
पाव बिसटकार चलने से मन रस्तेकों हैरान करो

त्वैरेकी और भाजी अपनी तमबोटे। नाकंदवक्केर

कूदत्रुके अब और उलनी मन क्कोटा ४८ यह अस्तब

झन कूदा उक्कला अब क्कोउ माथेजेर करो। अब

माल इकठा करने थे अब ननका अपने फेरकरो

बाफ्हूठा लशकर भागा ओका अबजान मैं नम शाम

शेरकरो। नम सांज लगाई हार उके अब भागने मैं

खैरेकी और भोजी अपनी नसवोटे । नाकंदवक्केरे
कूदहुके अव और डलनी मन कोटे ४८ यह अलव
ऊन कूटा उक्कला अव कोश मारेजेर करो । अब
माल इकट्ठा करनेथे अव ननका अपने ढेर करो
गाफ हुआ लश्कर भागा हुका अव नाने मे नम शाम
शोर करो । नम सांज लडाई हार हुके अब भागाने मे

रा.ष.
ग.

13

रहतारी । अनेदवन मेरे सदा निसवा सहर नरक स
नी भाग गाये इकवारी । कहत कबीर सुनो भाई
साधो गुरु कीनो प्रीत मोहे सबहूं सैं प्यारी ३२॥ क
वित ॥ ताल ३ ॥ सुलफाक ॥ पहरे आई नवसत
अवरन अतरी सुंदर त्रया बहुत सियानी । गोरे
वदन पर अलकों छूटी मानो चंदन लेप लानी

और पीपले मुहमे रोटीको मन मल मलकर हल
कानकरो। अब आपटूप नस पानी मे मन पानीका
नकसानकरो। उक्त नाभ नंही इसजीनेमो अवसर
नेसे परखान करो २१। उपमान। ज्ञान मय माने सो
नरकैये जिनको रहते हैं निस दिन खुमारी। ज्ञा
न मय पीवन मैरे खुमारी सरन अंतर खेले लगी

रा॰ष
ग

लोंदी श्रोगालिश्रा ॥ इय हुंदि मोडे कारी कम
रीया वाप अप्रसाडे देया पालिश्रा ।२५। दयालना
ला।१। मीयां राजावे मोणा निम माडे श्राओदा।
माउही गल मनदा नहि श्रापना आमजनामदा।
कोई समझाउे को पेकुप मावदादिवलाम
इति गजल राग षट् समापतम ॥ ॥

१४

म्हामै नैना कोकिल बैना कटके हरगज वाल म्हा
नी। शाहे वराडा बेह्लव निरखन इंद्रलोक की अप
सर विसरानी ३३ दयाल। कडराल वांह प्यारे भोर मै
थेडना। दीपवा की जोत चढी चंदऊंका छोडना मो
तन के हार सीतल फुरी आयो थेजना ३४ दयाल॥
साडे नाल बोलीबे आभीबे रंजेटे आवोंपंगा मिश्र

बि॰रा
४६

की स्वामिनी श्यामहि देखि सखी सुखि प्रेमकी
परसनि छबिनि रंग अनंग ॥ राग बिभास ताल
रसिक लालके संग संग जागी री सुख बैन सों
रैनि सगरी । सोभित सीस कुसुम सिथल अ
लकैं नासिक कहूं कहूं री मोग मोती बगरी ॥
अरुण नैन सलोल मोहन मधुरे बोल रचीहै पी

विहरतयों सखी भोर भयो विहारनि दासिकें है
सिधरें उरधैन । राग विभास ताल । लाड
लि लाडिली नवरंग अपनें लाल विहारीकें संग
अलसा नैंमैं जानैं आग प्रिया पति विपरीत रति
यों न्हावैदे अंग अंग । विकलित कच कुसुम
सिथल पाग मरगजी संग । विहारनि दासि

वि॰रा॰
४७

यै उठि आई । श्रेंग राग अनुराग बली फबि छबि
बरनी नहीं जाई । अति सुख भरि भरि उमगि
बिहार निदासि सों कहति पेमे सों लाल लडाई ।
राग बिभास ताल । यहि सुहाग अनुराग
नैनोनि सखी परि गये न्हेसोनी । नवसिख श्रेंग
श्रेंग बानी प्रीतम प्राण समानी रसिक किसोर

क कपोल श्रमस्व भारी । छबसकिथै बिहारी
दासि वलि वलि प्यारी हरन निश्वन निन स्व
हाग भाग अनुराग अगारी । राग विभास
माल ॥ भोरहीं करसौं करजोरैं अंग अंग
मोरैं आलसलेति जंभाई । पियके अंकनिसे
कसैवै निसि झलसि विलसी आनंदमै उनीदी

वि॰रा॰
४८

48

तेजउइतौ हठकरनि वतर पिया रनिके विनदेषि
प निहारी। नवल किसोरै मिलि किसोरी मान
तजि विहारनि हासि वलि हारी ॥ राग विभास
ताल । माईरी आज ओर काहि ओर दिनप्रति
ओरहि ओर देषियेरसिक गोरि राजधरन। नि
तमति नवछवि वरनैसो कौनक विनि नहीसि

सुरति सुखदेनी । कोउ जानैं बरनैंब शुकवि सु
दमन छवि नहि जात बखांनी । बिहारी दासि
पिय सौं रति मानी मैं जानि सयानी नेहि सब नि
सि सुखबेसिरोनी ॥ राग बिभास ताल ॥ सु
ख पट ओटन करि प्यारी । काहे कौं रूठैं पही रु
क रुक निरसिकनी करतनैं रसिकनिहारी ॥

वि-ग.
४९

परनि परस्नैं नजागे । सोभतें खसि मोर मकुट भ्र

कुटीके तट आयो निकट सिथिल चपल टेढ़िका

हे बांधि पाट नागे । अलसी उरझ सीसतन ह्वै भां

ति कहूँ कहूँ प्रेम प्रेमकी क्रांति मदन नृपति

पीक छाप जुग कपोल निलागे । छीन खामि

नि वरय रमौर भर समय मधुप संगम गुण

सं २५

गार बागे बरन बरन । स्याम तन अंग अंग मोह

न कोटि अभंग उपजी शोभातरंग विषके मन

हरन । वनभंज प्रभ गिरिधरको रूप ध्यावैन

घुट पानकीजेजीजेरहिये सदाशरन ॥ राग वि

भास ताल । अथखंडिता । मरगजी उर अंद

माल लोचन अलसान लाल उरामसान चरण

वि॰ग॰
५॰

बनभंज प्रभु कह्यो बसत पलटि आय सोची पक

क्ते गिरि राज घरन ॥ राग विभास ताल । सो

ऊज आवन करि गय लाल भोर भये देखे गन

नन तन नैंन अरुलाने व्यारि प्रहर मानो जगवि

सेखे । कीन्हो भलोज चिन्ह मिटाये अधरनि रंग

अरु उरन खेखवेँ कुंभन दास प्रभु रसिक सिरो

गांन करत फिरत आगैं आगे । राग बिभास

ताल । आलस उनी दैनें नाहू मत आवत

मूदे अधिक नीके लागत अरुन बरन । जागे

ह्रौ सुंदर स्याम रजनी के प्यारे जोमने कहूं न पा

ए मानो पलक परत । अधरन रंग रेख उरही

चित्र बिसेख सिथिल अंग उर सगान चरन

वि·रा·
५१

काहेकोलजातकरहु यौं कहो लालन कहांवसे
इथान बलन आलस जंभानसो वदन रेख देखि
यत वसन खसे । ऊंभन दाम प्रभु गिरि धरनम
भज वेयन करि उरहि लाइकसे ॥ रागविभास
ताल । प्रकरण उनीदे आपहो रस मसे निसि
के विनु गियकरो उराप । नाव पद प्राणप्यारी

मणि गिरिधर ललरे कैसें लेवे ॥ राग विभास
ताल । रजनी वार नम करों वहे । सगरी रय
नि पथ वाहत वाहत नैन दहे । ऊंमन दास प्रभ
भए नाही के वस जिन ही गहे । गिरिधर पीयम
ले बोलनि वाहे संध्या जु कहे ॥ राग विभास ता
ल । निसि के उनींदे मोहन नयन रस मसे ।

प्रेकनव उरकागार । निसिकी बातैं सबै प्रकटम
ई कतल जातहोकोतक सागर । हम दास प
भु गिरिधर चंचल जुवति नापहर व्रजमें उजागर
राग विभास ताल । सेंध्यावदे बोल मन मोहन
प्रात आइ कीनैं सब सोच । तन मन उहैं प्रभासत
प्रीतमकाहे कौं लाल करतहोक्छ पोच । इहतो वि

के मोहन कौं निज छपन छिपाए । ऊंम ऊंमदे
जिन उरवन माला दिल लित मावे मधुरंजे भाए
गिरि पर नव केलि कला रस धुमदिन कुलदास
अलि गाए ॥ राग बिभास ताल । काहे कौं
डरावत अपनी केलि जानै हो हरि प्रीतम मनाग
र । मोहि दिखावहु बोलि सुनावहु आगी करत

धर बिन बन जुवति मृगी न कि जात । राग विभा
स ताल ॥ बने हो रसमसे आए प्रात । प्यारीन
खपद रत्नावलि रसरंजित नवरंग गात । नखरे
खो मोह निजु बनिन मन प्रमुदित पुलक जे भात-
सूरदास गिरिधर बिन बेवल ज्यौं नर बरके पा
न ॥ राग विभास ताल । बलि बलि जाउं र

थासो जानै गिरिधर जाकौं लगी विरह की आंच

ह्वानि कृसदास जाउं वलिताकी जिनिलीनैं सब

बस्हदे लीच । राग विभास ताल । वनेहो श्रम

मसि श्रापु आन । आलसभरे वदनकी शोभा निर

षि लजित जलजान । संध्याव देवोल कीये सो

वेकाहे कौं लाललजान । कृसदास प्रभु गिरि

वि॰ ग॰
५८

5 4

गए भोर आए हो भवन मेरे ऊंची दृष्टि कौंन करो कौं
न करो कौंन नेल जाने हो । जाही के भवन भावे ता
ही के धारी ये पाई कारे ऐसी बाउपरी कौंन गहरा
नैं हो । भोरी भोरी बनियन भोर बन लागे मोहि
सी गिरिधर नम प्रतिही मयानैं हो । कृष्णदास
प्रभु क्हाऊ अट पटी रहो हो लाल आज हों नसे

उ॰ ५ ३४

सिक गिरिधर पिय नीके आप तुम तुरके बोले ।
रहो संकोच कोन कोहो मानत अधिक लजाइ र
हे बिनु बोले । संध्याव देवो लसोवेकीये अनव
से मैं जाम्यो करिहे रहो रहिजोले । कृस्नदास प्रभ
पेसी कोंनतो सों करि समके त्रिजगमांहु त्रिभुवन
नकनोले । राग विभास ताल । कोंनकोभो

वि॰रा॰
५५

हन पीय जागे रैंन । आलस बेस जे भात सिथिल अंग
अरुण निद्रारे नैंन । उपटे उरहार प्रकट देखियत
प्यारी कैंठ लागि दियो रस चैंन । ब्रजपति पीय
की चाल चलनि परकोटिक वारों मैंन ॥ रागवि
भास ताल ॥ आपसो उठि भोर रस मसे नेंदल
ला रे । अरुण नैंन बैंन अटपटे भूखन देखियत सुथ

देखिवनीके पहिलानैंहो ॥ राग विभास ताल ॥

मदन मोहन पीय आप धान । चार जाम जागे प्यारी

मेरा अरुण नैंन आलस जेभान । विन गुण मोती मा

ल विराजत अंजन अधर पीक लगी गात । व्रजप

ति पीय नर्से ऐसीन बूझिये हमसो फिरि नमरें

स्ति मसिकात ॥ राग विभास ताल । मदन मो

विभा
५६
56

सुभग उरसि परविन गुणमोती माल झेम झेम
हलषित उपटे है ऊव उतंग । गोविंद प्रभु कत कर
हु डराउप सब करत नम्हारे ग्रेग ग्रेग ॥ ८ फीलेफी
रागवि.
ले पगायवन फीलेसेफ हेसे पेसे कौन पैंठ हेहे॰
गाछे जज्रीयके पीयपेसी गाफी कौन त्रिय गाफे
गाछे भजन सों गाफे करगहेहे । लाललालली

रन रंग भारे। कितव विवाद करत हो गुसांई नहीं जा

हु जाके श्रुति पारणभारे। गोविंद प्रभु भले जु भले

जानि पाए जैसे तन श्यामतैसे मन कारे॥ राग वि

भास ताल ॥ निसिके उनीके श्रुति छवि लागत

भरी प्यारी रंग। आलस वलित ललित लोचन जु

गभरि भरि आवत जंजके लि राधिके प्रेम उमंग।

वि॰रा॰
५८

57

उघले क्यौं बोलनहो ऊमबान लियें हरि । प्रातसमैं उ
ठि कहां ते सुरभ्रम आवतहो अनुराग भरे हरि ॥
राग विभास ताल ॥ रैनि जागे रतिरस पागे अ
नुरागे नव त्रिय संग । मोसन साँच कहु आयेहो द
रनि पिय रसमसे नैन अटपटात बैन नित हई जाऊ
जाके रंग । बिन गुणावनी माल पीक कपोलनि ला

इन उनींदे लागि लागि जात मोची कहो पीय होंतो

लालल ह्रैहो । नंद दास प्रभु मोची कौंन बोलो भयो

प्रात कहो बात प्यारे तम बात कहां रहे हो ॥ राग वि

भास ताल । पाग है सी सिर पै बलट पटी हूं मत

नैन उनींदे उजागरि । पीक कपोल अधर मसि दा

गा कंकण पीठि गड्यो अति सुंदरि । जानत उने इनपा

वि·रा·
५८

58

गाउरसव सकीनें सभाइ जागे जहां सोई प्रिया वडभागे·

राग विभास ताल । मंगल करन हरन मन आव

ति कारति मंगल आरती वाला । रजनी रसपागे श्र

नुरागे जागे प्रात प्रात अलसात सिथल वसन अरु

मरगजी माला । बैठे कुंज महल सिंघासन श्री वृष

भांन कुंवरी नंद लाला । ब्रजजन सदित श्रोटकै नि

वि

ल जावक तिलक भाल कीन्हें रस बस अंग । सूर

दास प्रभु लस रजनी विहाइ आये प्रात भये आप मेरे

जीति अनंग ॥ राग विभास ताल । माई आज

लाल लट पटात आये अनुरागे । सोभित भूषन अं

ग अंग आलस भरे रैनि उनीदे जागे । लट पटी सि

र पेच पाग छूटे बंद निवागे । सूरश्याम रसिक

वैंगीत मंगल वधाई । वनअंज गिरिधरन लाल था
रती वनी रसाल वारननन मन आगाज सोदा ने दराई॰

राग विभास ताल ॥ मंगल आरती कीजे भोर ।
मंगल जनम करम गुण मंगल मंगल जसोदा मा
खन चोर । मंगल मुकट वेन वनमाला मंगल रू
प वन मन मोर । जन भगवान जगत मय मंगल मं

रत्नन निमिषन लागत नवनि ऊंजलना डुमजाला

रागविभास ताल । रतन जडित कनककथाल म

धमेहैं दीप माल अगरादिक चंदन अतिवहु सर्वा

य माई । तननननननचेटा थोरजननननझानरटको

तननननननथेई थेई थेई कारतिहे पकहाई । तन

नननन नंान मंान गाग रंगा स्वर वंध्यान गोपीजनगा

वि·गा
६:
60

स्याम सुंदर गात प्यारे छिन छिन नित होत न्या
रे। नेक की ओट मीन ज्यौं तलफत त्यौं तलफत
नैनन के तारे। मृदु मुसकानि बंक अवलोकनि
डगमग चलनि सहज में सुधारे। वनभंज प्रभ
गिरिधर वेनिक पर कोटि कनम मथ वारे ॥
राग विभास ताल । स्यामा स्याम सेज उठे

गल राधा जुगल किसोर । राग विभास ताल ।
श्रीगोपाल जूकी आरती करतहैं । बेदा ताल प
खावज बाजे पंचसबदी बाजी बजतहैं । सिव विरं
चि नारद इंद्रादिक सब मिलि गावत बीन बजतहैं
स्याम प्रभुकों देखत सबतन मन धन वारि वारि
डारतहैं ॥ अथसमदायपद । रागविभासता० ।

वि-रा
८२

न जोवन चावत खोत दह्यो घर घरकों । प्यारो प्राण
दीजे जो पठये नागर नंद महरकों । कुंभन दास प्र
भु गोवर्द्धन धर रसिक राधिका वरकों ॥ राग बि
भास ताल । साखी तेरे चपल नैंन ऋरू बडे बडे
नारे । हरि मुख निरखिन मानत पटनिमें निस दिन
रहत उघारे । जौ भागे तें पायो कान्ह न श्रवण नैना

बैठि अब परसपर करत बिहार उनै उनके पहरे । मोतिनकी माला उन उनकौं पहिरयो नौ सरिको हार । लट पटी पेच संवारति प्यारी अलकैं संवारन नंद कुमार । सूरदास प्रभु नागरि नागर बिपरित भूषण करत सिंगार ॥ राग बिभास ना

विलगु जिन मानौं री कोउ हरिकौं भोर ही आव

वि॰रा॰
६२

सवन वनी अपर सपाई। पोंथी प्रभके मनऐसी भा
ई कहत नन कछु वनि आई और सोंहैं की सोंहै नेरीये
उहाई। राग विभास ताल ॥ नंदकिसोर पैरी क
रन वोहनीन पाउं। गोरसके मिसरसही फछीत मो
हन मोहन मीठी नानन कैसे कैंदापि छिपाउं। गोर
स मेरो चरहि विकैहै काहैको हेरा वनजाउं। आस

6

जानौं कहां चले जाते अपटारे कुंभनदास प्रभु गि
रिधर नवसिकष कृपा रस सींचे अति लाव बाढ्यो भा
वै ॥ राग विभास ताल । नैदे नवकी निकाई
मोपै बरनीन जाई । अंग अंग छबि छाई नैननि
लागे सुहाई ऐसी रचिपचि विधि विधिके बनाई ।
भौंहनकी कुटिलाई नैननि अरुणाई नासिका

वि॰रा॰
६३
63

नहर । रागविभासताल । वृंदावन नवनिकुं
ज नाठे उठि भोर । दोऊ जोरि वदन मोरि हंसत हेर
नयनिकी करि कुसुम अवन फूलनि जान नैननिकी
कोर । करत कबहुं वेग नाद मधुर प्याइ सुधा स्वा
द पंछी गण प्रमुदित मन बोलत चहुं ओर । रसि
क प्रीतम छवि निहारि उदयो जनु चंद विकासि वा

करत प्रभ मोहन नागर जसुमति जाइ सुनाउं ॥

रागविभास ताल । भोरही दान मांगत मोसों गि

रिधर । प्रातहि उठिकै चली जो नगरकों बेचन द

धि मटुकी धरि सिरपर । जो तुम हमसों आरि करउं

गे तो हम सब मिलि उलटि जाहिं घर । सांची कहो

धौं बात ब्रजपति प्रभु तुमकों नटेव परीति हारी म

वि॰रा॰
६४
१

64

राग विभास ताल ॥ प्यारे बोली भामिनी आ
जुनी की जामिनी । मैं हिंबीन मेघसे दामिनी
मोहन रसिक राइरी माई नाहेज मान करे ऐसी कों
न कामिनी । हित हरिवंस श्रवण सुनत प्यारी
राधिका रमनसो मिलि गज गामिनी ॥ राग वि
भास ताल । कौंन वनरजवनी पीया जाहि

र वार डम गिनोंबन हैं मोर ।। राग विभास ताल ।
प्रात समैं दोरस लंपट सुरति युद्ध जय जुत अति फू
ल । श्रम वारि जघन बिंदु वदन पर भूषन अंग अं
ग विविकूल । कछु रह्यो तिलक सिथल अलका
वलि वदन कमल अलि भूल । हित हरिवंस मद
न रंगरंगि रहे नैंन बैंन कटि सिथिल दुकूल ।। रा

वि॰रा॰
६४
२

स्वरवदीजे रसलीजे रैन कोहैं वित नेनें अनदारौ रे ॥
हुलस जीवन लछि रामके प्रभ संगान बसन सिंगार
सिंगारौं रे ॥ राग विभास ताल । राधे वसन स्याम
तन कीन्ही । सारंग वदन विसाल विलोचन हरि सा
रंग जानि रति कीन्ही । सुधा पान करि कैं नीकी वि
धि रह्यो भेस मसि मग्न दीन्ही । स्वरस वेस आहिर

मिलत लाल चोरके रैन । उरनकौं बडेरे सुनिया

रे रंगमैं गहेल चैनमे नैन । उरनख चेद खिरानै पट श्र

रपटेमे वैन । हित हरि वंस स्वरनि गयापनि श्रमध्वि

न मैन ॥ राग विभास ताल । छबिले लाल छबि

लेरी मोहिनीकी लागनुहै सैंननमन जोंह वारौरे ।

भोरभए आएमेरे अंगनाहीं पलकन सों पगझरौंरे ।

वि॰रा॰
६५

65

घनस्याम लाल पंकज लोचन बिसाल अंगन ब्रज
गली झुके ठुमक ठुमक धावे । पहुंची करबनी बाह
कंठमें बिचित्र हार लटकन लटकें सफार करतन
बनिग्रावे । झनन झुनन परे पाइ निरखि मुदितन
सोहा माई किंकिनी कटिमें उरधुनि श्रवण सुखव
पावे । श्रीविठल बिहारी अंग कोटि वारि वारी डा

ति नागर भुज ग्रीव करति गेंम करलीन्ही ॥ राग विभा
स ताल ॥ स्याम स्यामासौं ब्रतिरति कीनी । श्रमज
ल बूंद वदनयौं राजत मनौं ससि परसो तिन लर दी
नी । मुक्त माल टूटीयौं लागति जनु सुर सरी भ्रथो
गति लीनी । सूरदास मन हरन रसिक वर राधा
संग सुर तरस भीनी ॥ राग विभास ताल । हेट

वि॰रा॰ ६६

वहोहो होरी। राग विभास ताल ।आजवनीला

डिली प्रीतम संग आवति। सोंधे भीजी लट छूटी पि

यके प्रेम भजा पाछे सखी सघर विभास हिंगावति॰

श्रमजल विंदुनि मिके भाव सुचति मोहन वदनसौ

वदन मिलावति। विठल विपुल कल रसिक वि

हारी लाल आनंद समुद्र मथि मदन झिलावति।

फोजबनी अपार मनमैं मनुपावै ॥ रागविभास ता
ल । प्रातसमैं आवत आलस भरे जुगल किसोर
देखी कुंजनकी खोरी । लटपटी पागछुटे बंद पि
यके प्रियाकी बेनी त्रिकुटी कचडोरी । ललितादि
क देखति जु नैंन भरि प्रति अंग सुंदर वर जोरी·
विटल विपुल पुहुप वरषत नव मिण टूटत है अ

वि॰ग॰
६७
67

प्यारी नैरी चालि बिन वनि तांकी । तांके बसन ग्रभ

रन वैकरैख उरग्रंकी । वैकस भाव मिलन बाकी थि

या वैक कोरही झांकी । विटल विठ्ठल विहारी वो

के मिले नातें है फिरनवि सांकी ॥ राग विभास

न उा॰ । ज्यों ही ज्यों ही तुम राखत हौ त्यों ही त्यों ही

भों निा न हैं हो हरि । और ग्रब रवे पाइ पगे सलौ क

अ॰ ४६

राग बिभास ताल । आई भोर भरे प्यारी छूटी लट
बगरी । दोऊ जोरी लाल संग निसि किये कुंज रंग
सुबस किये बिहारी कुंवरि अगरी । निसि के चिन्ह
फिके गौर स्याम तन छवि पद नख परवारों जैनी ने
री नगरी ॥ विठल बिपुल केलि मन कुं कंचन वेलि
अरुझी कुंजन माल आवे कुंज द्वारी । राग बिभास

काहेकौं भाषियै सोनौ है सावनि । जाहि नमसौं हि
न तासौं नमही नकरौ सब सुख कारनि । हरिदा
सके स्वामी स्यामा कुंज विहारी प्राननिके आधार
नि ॥ राग विभास ताल । कबहूं कबहूं मन इ
त जात यातें बकौं न है अधिक सुख । बहुत
नतें घर आनि राख्यौ नाहिनो पावतो दुख ।

वि-सि
६५

जो म[illegible]नकैं पेंउ भरि । जहां पिहीं सुनभायौ कियो वा
[illegible]सेकरिसकौं जोनस ताको पकरि । हरिदास
के स्वामी श्यामा कुंज विहारी पिंजरा के जनावर लौं
तरफ राउ रह्यो उडिबेकौं कितौ ऊकरि ॥ रागवि
भास ताल । काशीकौं वसनाहीं तुम्हारी कृपा
तें सवरोर विहारी विहारनि । और मिथ्यापरपंच

वि॰ रा॰
६८
69

जो समोय करन तरसाय आगा सगरी निस । गोवि
द प्रभु पिय जान शिरोमणि भोसन कैसें जानत निस॰
राग विभास ताल । दोऊ री राजत हैं रंगभीने न
वल निकुंजमहल बस । कुसमनि सेज ओर उठि
बैठे रस आलस अंसनि भुज दीनें । गोर स्याम त
न नील पीत पट संभ्रम पलटि बसन तन लीनें ।

कोटि कोमलावण्य बिहारी तामैं सहचरी सब सु
ख लियें रहत सदा । हरिदासके स्वामी स्यामा कुं
ज बिहारी दिन देखत रहौं विचित्र सदा ॥ राग बि
भास ताल । आइये जू आइये जिनि दिखाइये
मोसन रिस । सिथल श्रेग पग परत डग मगो जू
टेढी करत माने कोमिस । अबजु आयेहौं मेरी

कि॰ रा॰
७.
१०

द किसोर ॥ रागविभास ताल ॥ प्रातसमै जागी
युगलरागी सोवत उठिरी स्यामजूकी संगिया । वीर
संवारति उठिरी दहिणा करवांम भुजावऊठी भ
रि अंगिया । भालमें सुहागभारी केऊकीकी छ
वि न्यारी पहरै कसूंभी सारी सोंधेबगा वगिया ॥
युगस्वामिनी लडाई वडुनतकीनी वडाई फली फू

७८

पिय बिहारी पियासंग बिलसे अति सुरत रंग सु
भग सिंधु ललितादिक हग भीनें ॥ राग बिभास
ताल । चंचल लेचलि री चित चोरि । मोहनकी
मनयों बस करि लीनों ज्यों चकरी संग डोरि । जो
लौंन देखत नव मूरति तौलौं पलकन लागत नि
मषन कोर । नंददास प्रभु प्रेम मगन भये नागर नं

आवनि कुंजनैं पोढ़ पौरी । पियजंभात अरसात र
सम सील ललनाके बाबन नीरी । सरस सिथिल अंग
अंग परस्पर अंको भज भरि लीनी स्याम रसीली ॥
विठल विपिन विनोद विहारी वहीं ललितादिक
नीरी ॥ राग विभास ताल ॥ स्यामके भजन वी
नराखिवैं स्रवन सीवि सोई लाजमाविजागीतमतर

ली फिरे सवरें निरंग रंगिया । राग विभास ताल
धिव थोच कामे देखी पाछैते नैनहो जनिभमी वेढी ।
थ्रछन थ्रछन पगधरत धरनि परथ्रावत जानैमैन·
हो रत नैनहो चौंकि परी भेरी थ्राली मेरी छतिया धीर
धरेन । जगन्नाथ कवि रायके प्रभरी कि हेसेतब
होंउहेसी वह हाव करत नव नैन । राग विभास ता·

स्याम सलोनैं । अति ही दीरघ विसाल विलोल कारे
भारे पियरमनि रूप कोनैं । वदन ज्योति चंदहू तैं नि
र्मल ऊंच कठोर अति ठोन वोनैं । नोन सैन प्रभु सों
रति मोती कंचन क सोटीक सोनैं । राग विभास ता
ल । होगई वछरा मिलावन स्यामनैं वोनमारी॰
धरनी मरछि परी सुनि सजनी वन हू की स्याहि वि

मोहतें । हाहा कान्ह उंदे भोन ग्रबही होइगी जोन

प्रकर प्रकर क्यानी गुरुजन डरतें । मधुर बचन

कहो प्यारे कौं भलो मनायो डुंबन ग्रको रहैनि नि

रवारि गारतें । ग्रंगनमें ठाडे ग्रह ललिता लेति

बलाइ सुरस्वामिनि राजे ग्रानंदके भरतें ॥ राग

बिभास ताल । तेरे नैंन लोनैं री जिति मोहे

वि॰ग॰ जगाव्हौ। सूरकौ प्रभु नहो फिरि फिरि देखन मानौ
७३ मोचे भरि काव्हौ॥ राग बिभास ताल । उठे प्रात
७३ गोतचात कहन नोतरी गोतरी बंत मोगनहै दधि मो
खन लाइहैं जसोदा मात । बाजत नूपुर सुहान नोच
नेत्रैलोक नाथ देखन सब गोपी ग्वाल नेंन निना रि
न सुवात। नंद सवन सुख दाई चिरंजीयो री कन्हा

मारी । सवीपक जब जल स्रवे पोयोक्रम क्रम ॐ

चरा संभारी । स्तरके प्रभुवर जो इन श्रीलियनिये

सवहीनें मारी ॥ रागविभास ताल । दधिमथति

ग्वालि गति भेदसो ताठी । जोवन मदकि जकति ना

गलोक लों वेनिकर कटकटि छवि वाठी । ततस्रवे

मारि चन वेलि कोल हेगा केडकी खमकि वनीउरो

३५ ५८३

वि·रा
७४
75

टा तामै मोती हारबग टटा संदर सभग पग पावरी
खटक । ब्रजकी भटक दधिचोरिकी सटक ऐसी
सिंह मूरति फनि मनकी श्रटक ॥ राग विभास
ताल ॥ जान्यौं जान्यौं री सयान तेरो आगो ह्वरसौं
तै किये मान भयोहै बिहान । पियकै तेरोई ध्या
न मेरी सिख सुनि कान जामैं बसे आनना मौकेसौ

ई जीवनि मरवे चाहि वाहिया निधि कौं माई । बाल
केलि देखि आई रोम रोम सत्र पाई श्रीवल्लभ हरषि
निरषिले नई वलाई । राग विभास ताल । कटि
पीत पट मरव मुरली मुकट सीस कांरवल कुटनट
वरकी चटक । तिलक टटक कांन कुंडल कपोल
वन माला की लटक तामें चटक मटक । वक्षवन व

वि॰रा॰
७५
75

कठिन कहीरी । मोगरीव परकेजी कृपा ऐसी मति
नेरी कितहू पोई सहीरी । रसिक प्रीतम सौं मिलि
प्रभात प्रति रुचितो सौं निबहेरी ॥ इति आभोगः

यौं गुमांन । सुनिरी मुरली गान आछिनीकी भिटि
तोंन संकेतस्थली रची कुसुम वितांन । सूरदास प्र
भु जान सकल सिरोमणि मांनि मदन मोहन तेरे मु
खकौं निधांन ॥ राग विभास ताल । पियहदे
रावनही निसि दिन आज कहा तें अतिरहीरी ॥
विव विच नाही नाही करति सकति घनमैं नमसी

गा॰ रे॰
कल्प॰

प्रथमही मुफ़ फैंक मोहनकी मन हरलीनी। अ
पनै अपनैं ढंग सब लागी होरी खपवय छीनी।
आनंद बरस पिच कारीके सरकी अंगीया सारी
सगमगा सब करदीनी। चरदुरवैं बोरी होकैं देवी
लाजस ऊचन जमगारी दीनी। आज्ञल बाल वि
हाल भए मानो नलफतजन खिन मानी ॥ = ॥

3

३

सखी कर उमगत गुलाबकी जोरी। फूल रसिक यौं
देह दाम मैं करहन प्रेम रस नागर नवल किसोरी ॥ ८
बज्यो डफ बाजन लागे री देखो धूम कान्हर फेरकी
न्हौ। मोहन आन ख्यान खेल सकल ब्रज जन उपजौ
उपज परत नैं रंग भीनी। तन मन जनीके वसन प्रम्रष
म सैयाकी सखी नवीनी। पसी चली होरी खेलवेकों

गा॰ खे
कल्प

खेलीजीए मन नैनन चाहे ॥ कान्हर खेलीये होरी गा
ऊंश्री गोकुल भवन राग । नाञनानीये वहोर कव हो
र कव अइहे परम भावनो फाग । कुसल रसिक पर
समय कृपा कारि दीजे परम सोहाग ॥ सर मर मर हे
सवी जे देउ भीजो रंग सभाने खेलन होरी । अन्तर
अरवाजा अबीर लावे री नंद कुंवर की शोरी । कुल

होरी के खेल मेल गोपिन बाल । कहा भयो जो तोपें दी
नों रंग अल । खोवपैरे उनने आपन कौं संभाल । जैसो
रहेंगे औरनें केरबस लाल । गोइ सां हैंसो आप काय
खेलन उन सें बाउ आरे । हंस हंस लेन बेगी अब कारन
अपने बारे । जाको आट देख इलास सैन अब हजो
भव दे खीये कारे । अभ सरूप पीयसों समीप कीजो

गा. रे.
कल्य.

कहौरे पीय कैसे कजा परह्यौ रे जीय अऊलाए सज
नी मोहन कौं कौंउ बेग बुलायले आवै । आयो है फा
गुन मन लाग न मंदिर मैं निशि दिन याद्यौ रहत न हो
पीतम की आवन की कोउ सुनावै । हम रसिक ह
नि बात पथिक मोरी कहियो यो मन सिज निन मो
हि आन सतावै ॥ मन मौं स्याम पामीरी गोरी स्या

33

रसिक सब ब्रज बिसराई निरखि सखी यन नोरी =।
फागुन दिन आई चलो सखी खेले स्याम सौं होरी । यु
नश्याम ब्रज में ज्यों मची है संग सखा सब जोरी । वर
सोने नै नाथा निकरी नंद गाव में ग्वारनी टोरी । अबी
र कुंम कुंमा गुलाल केसर डार मोहन पै जोरी । कृ
ष्ण रसिक मन भावन बस कर बाधें प्रेम की डोरी ॥

ग॰ रे
कल्प

लै सब मिल मोंवरी औंर गोरी की गोरी। बोलावेद
न अबीर कुंभ कुंमाभर लीए कर जोरी। एक गाव
त एक मरदंग बजावत बोलत डोलत वहे ओरी।
रसिक कलस गोपी ब्रज रंग छायो आनंद बढ्यो इहे
ओरी॥ एव गान लागे सेरो वन बन उट पट॥ मे
रे कहां नमानत आली जीया अब कहा करनो है सट

3

री सरस । मोपैं सामारी खाली सेंगगोरी खेलो रंग

रंगेरीरस ॥ जोवन मदमाती नार आवत कुंजनमे

सैं लीए व्रजराज । होहे कर यावक गावलि पटव

ने कन करत लाज । वृंदावन विपिन रंग छायो आ

नंद भयो वडेहि विय समाज । अवीर अर गगन गुला

ल उडावत रसिकराय सव के सिरताज ॥ होरी खे

कीयोर्ं । एसोनयो खेल खेलै ऊसोर्है गिवलासोया
के खेलनकोउ जानैं । सबको भलाए ब्रलाए खेल
वैकों वाकेकोउनना जानें । नैनन मैंनन देनसवन
कौ म्रवलीमें लेनहै मोनेएसो कौनहै कोउब्रलाए
याके चाएसोजाए वाकेमोनैं ॥ वरसे भामनीके
काज भ्राजबस नैननमें बसे । केझोरीमें हुकभरहै

पट। आनंदमगान करले मन सजनी अमनहै न

मलटपट। रसिकरंगको रसवस करले मिलले

आली जपपट॥ अब मोपै बोले क्योरी अबकोट

लेगार बर जोरी। सोतनके रंगर लीयो करतहै मो

री मोरी। सागरी रैन सबतन खेलत हो मेरी आप

हो मोरी। आनंद प्रभु सजधन सखा है नेटमरर

गा॰ खे
क॰ल॰

रंगलाल कुसम कुमा केसर छिरकत होरी खेले। राधे कृ
ष्णकौ हलराधेकौ प्रेम परस मिल सखवेकौ मौजे।
रसिक रायकौं रस बस कमली नैं निरख निरख केजी
जे॥ बहोर डफ बाजन लागोरी। कन्हैया ब्रजमें धूम
मचावै। ग्वाल बाल बाल सब सखा संग ले पिचकारी
न भर लावै। ब्रजवारी नरनी सब आई मोहन रंग छि

मिलवै जैनरहै। हम रसिक हियमें अब निसदिन
मनमिजरल मिरहै ॥ झूलै श्रीकुंवरी किसोरीउन
झूलै नवल किसोर। होरी खेलन सखा सखी सब
झूली झूमक झूलै चहुंओर। झूलै फीरन नरनारी
फागनमैं झूलानंद कै लै करन कलोर ॥ गाया मा
यो खेलै फाग भये मनराग काम संगाके भीजे। श्री

गा॰षे॰
कला॰

कोंऊं उरत नाहदेषत अपनी षोरीनें। तेओरी कछु जान

न नांहीं स्याम देषत काम हरष षोरीनें। अपरी षेगीया

उरपनें सको जान देहीं यों डोरीनें॥ अब कतलागी ज

षिन षिन रोवत पटपट। जब तें सीषे हमारी मानी न

म नाहिन अनपरी प्रपटपट। इन बातनकौं सब समझ

न हरकी जीप अटपट। कदिन सनै काम आवन हैं क

37

३७

रकावै । धन धन रसिक रंग खेले होरी आनंद उमन उमन

रमावै ॥ परी तेतो काहू न खेले फाग लाग गई है भाग आ

प स्याम नैं र भाग । बीन मृदंग तालीप खेलन आवन गावन

नैन सिरी राग । कुल रसिक सौं खिल सैंन प्यारी करके

हित अनुराग ॥ ऐसी निरखै नात सबन तें आगे एसो व

सको परो तो है काहे होरी तें । वरजत जे तो नाह धोतन

गा० खे०
कला०

हूको मनरिपर अधिक धरेगो । पकरत नैंहै होरी के मिस
वासे कौन करेगो । कमलजीवन लक्ष्मी रामके प्रभु सोहे
धूम मजेगो ॥ सब संग मोहन खेले होरी रे । मोहे लेजा
य के योगी कहो और नाहीं न वाके थोरी । गारी देदे सब
मेहनतहै और सबही रंगमें बोरी । लाजन आवन नेको
केहिन ऊखजा भईहै जोरी ॥ परी मेरो नार छिनरी

बोल बोल गुरुजनके अटपट ॥ उनरहै है मारी देनसों

मारी देह टरैगो। एकनो भीतर लेगयो तम एक एक

बोलैगो। उर लागत है घामें मोंकों काम अधिक भय

देगो। जब जानैगी सबही मिलों उपन खपेनवदेगो-

गारी देह भिजयो बाहर गारी नेह भजेगो। एहो की

टनि पटहै काहू गारी बजन लरैगो॥ हात लगो है का

रा० खे०
कल्प

कौं आगे। कृष्ण रसिक नहीं टरत नेह बस हिल मिल
के गरे लागे॥ मन मगन भगन खेले होरी मोहन ब
ज की खोरी। अबीर गुलाल निसंक भरत है करत
फिरत बरजोरी। लपटन झपटन काहू को भजब
र काहू की अंगीया बंधनोरी। कृष्ण रसिक ब्रज
फाग रच्यौ है नवल किशोर किशोरी॥ रंगे नैन

यातें सब कीनो। लाजन आवन नोहे सबन में फाग
नमें रस लीनो। इत उत छिपके अपनो कर लेत न कारे
सबनमें इत बदीनों। उपन आवननो है काहे ऐसे जगमें
ज पालीनों कूसर सिक ग्रब रहत हिबसनि सुनेरहो
रंग भीनों ॥ होहो री में जब जानों गीतन प्रेम लग
न मन भागो। अवीर गुलाल लीए सब सखन मो उन

गा.ठं
कल्प

ग्र अबीर गुलाल लीए भर जोरी। बीन मृदंग संग डफ
बाजत ढोल डंडभी और मंजीरन की जोरी। गावत वे
न सैना वैनी कर कर ब्रज में भारी रंग रच्योरी॥ आगे
कुल खेले होरी पाछे कुल खेले होरी ईन कुल खेले
होरी उन कुल खेले होरी री। गोकुल कुल खेले होरी
मधुबन कुल खेले होरी वृंदावन कुल खेले होरी नंद

४०३

४०

तिह्नारे मोहन कवनन वलनीय संग खेले होरी रंग

रंग विरंग वेवसनन पहर के मरगजे वागे कोनन नि

ह्नारे यह ढंग । छूलर सिकरन नारे प्यारे अमिन म

दन के संग ।। मोहन ग्वाल वाल संग लीए गोपाल

होरी खेलन वरसाने आए श्री व्रषभान की पोरी ।

ईन सखा स्याम जहै पे शोभित उन सखी लीने श्री राधे

रा॰ खे॰
कल्प॰

लग्यो मेसे प्रेम। केसर की पिचकारी मोहे मारी बजाय
बांसुरी सदेस औवेग। कुल रसिक रस बस कर लीनी
देख चकित भई देग॥ रागिनी विभास की तालथमा
र॥ राजरीयां राख मान भरी जोबन की नैरे होरी आ
ज। चल चल आवत निकट मोहन के केसर भर पिच
कारी रंगले छोर दई कुल लाज। नैरे लीप रसिक।

41)

गोम बरसानैं फाग खेले होरीरी । ग्वालनमैं खेलेब

ल्कनमैं खेले आपही आप सरूप धर धर फागही खे

ले होरीरी । ब्रह्मामन गन हर लीनो जित तित फ

देखत सरूप मगन बिंब ले खेल सब ब्रजमैं फागही फ

ग खेलन है होरीरी ॥ कौन रंग मो पै डारे मोहन के

से निहारे ढँग । सारी भिजो यहई मोही गारी पकर

रा॰ खे
कल्प

अहो कैसे जानन पावोगे भर होरीमें नवनागर नम
भाज। गारीमे योगी देवाउं सवननि पै अव जो मोहे रागीहो
आज। अतर फुलेल सो अंग सव वरवो करीहो अपनें
मनको काज। राम रंग अभ पकर पाई हो फगवा देहो
महाराज॥ खेले हो हो हो करि होरी व्रजनीया गोरी।
खेलनमे सुवट पट उर गयो पसी वनी मदहोरी। अव

नित आवत बिन काजही काज। अथ नायक वलिहा

र होरीकी खिल खिल खावे लीजे दीजे जोही सौ सुखर

समाज ॥ गोकुल गांवको बसैया होरी गावे धूम म

चावे। इफ बजायके इगन बायके फिर अवीर उड़ावे

कर जोरी होरी खेलि बोरी अंगीया रंगमें लाजन आवे

बाहल घरको भैया कन्हैया यह वलिहारी कहावे ॥

३

गा. खे
कल्या

सिकनको रंगरी लेगी ।। याकौं कौंन सिखावै सखीभ
ईन भोनन काहूके वान । याकी फागमों नहीभावन
हे खेल खेले छिपजान । लपट झपट पिचकारी व
लावन भावसें गारी गान । रसिक केलनें रसवस कर
लीनी एकरन भ्रमभर गान ।। बहुत दिननतें दावला
गयोहे अबन क्रासेगी ब्रजराज । प्रानपरोहों मेरे वस

४३

रा पकर घूंघट खोलन मदन गोपालसौं फाग खेलयो

री । रसिक छैलकों रसवस करलीनों ब्रज वियन म

धमें करी खोरी ॥ याहोरी हों खेलोंगी मौकों कास

खी मनेकरत हो । नेक मोहन मुख भयो वाहीपसो

नैं पायनटेलेगी । अबीर गुलाल कुमकुमा केसर भ

रभर मुठफेंमेलेगी । फगवा लेहों गोपाल लालसौं र

रा. खे.
कल्प.

रैन बस जागके बिहानी परन परन पग धाय। उगम
ग झुक झुक उठत उनीदी अंखियां लौं पे भूखग। उग्रा
सहाय। तेरी भाल तिलक यह देश आप बनाय।। अधि
क बन आप मन भाप तुम एतेपे काहेको बनावत ब
तीयां न झुठी। तोक कुन सो कहावत तुम सों लाल ल।
किन बाथी रहन देसों मटी। करो कलोल फाग की

44

मैं कहां जावेगे आज । फगुवाले हो पीलेंगावरयाहके

हूं र करंगी काज ॥ जब हाहा कर छूटे हो मोहन अब

न जावेगे ब्रज राज । हाउ की सें जगा फागैंमो उन आ

उंगी बाज । बहुत फिटाई हमसों ठानी अब कहां जावो

गे आज । अबीर गुलाल सों अब मलोंगी फगुवा ले

हैं महाराज ॥ खेले आज लाल कहां होरी जाय । सा

रा॰ खे॰
कल्य॰

गे याने बोल तुम नेनन रात । हौं कछु नाही कहों तुमका

हे मोसौं मकरान ॥ हम आप फाग खेलन संग उमा रे

हेस हंस लै लै रंग सब करत आपन चाहे । जाके भाव दे

खे हुलास उमगाने यजो और भाव देखीए काहे । प्रभुस

मुद्र पीयसों समीपको जीए मनन नैनन लाहे ॥ फा

गन मे लाज गावे को उनो कैसे ऊ गावत नीहीं रहत ॥

45

४५

कैधौं ने हरि साउनोन्नम यारो ग्रन्दठी। तिह्नारी सभाय

सी वनी नाह्निनवेड्रमलो नियन्न मड्रे लोड्र होई हठी ॥

देवै लैलाल कह्रो रसभीजे जात। सगरी रैन विह्नानी

पगायरतडगान पगाडगामगात ॥ लाल न्नम आपहो

मेरे नैनन रंग लाए काहे न करो नवदेवान। काहे छि

पावत चिन्ह न्नम करे तिह्नारो गात। रैन उनी देहो जा

रा॰ खे
कल्पं

निशा जगाए अनत राग भरी तुम झोरी के दिन नदौएवो
री । चटक विंद करे देत गात सब अधिक बनी है गोरी
लाल तुम आए मेरे नैनन रंग लीए काहे न करो सखवा
न । काहे छिपावत विन्ह तुम कहे तिहारे गात । रैन उ
नीदे हो जागे याते बोल तुतरे तन गात । हौं कछु नाही
कहो तुम सौं काहे कों मो सौं सकुचात ॥ नवल नेह को

46

कासे कहूं कहबेकी नाह काम वयारवहू। हूस रसिक
यह समय भलो वो कोऊन काहकी कहत॥ व्रजको
वसबोत जोईस लेगव कान्हके हात माई कुपमटकी।
भेरे भिजाये हसे गविजावो गरे छनरी चटकी। लाज
की मारी कहेन सकनसो रसना जात अटकी। उघर
गयो जट पट हेवट सब मथन रही मोचटकी॥ लाल

रा॰खे॰
कल॰

बिनै यवनेया करतहै वाघन ॥ ओढे सारी मे प्यारी
केसरकी रंग छिरकी । सामदा वहलके पगांधरे का
ऊमोन उरीरी यह कौन धूम फिरकी ॥ आयो फागुण
मास सखी उपज्यो अन काम नीया ननमें । वलीसवसि
लकै धाम धाम सो मोहनपै श्रीवृंदावनमें ॥ स्यामसा
गर गर जगरजन खेलीप फाग वनाय वनाय । होरी

47

४८५४

होरी आमोन देखे आइ लीनी इन दोउ प्रनके मनको ला
ग । फाग आपही रीझ चूनर दएन लेतफी खक ख
क चैन वे पावत लालको पाग । झूमत रसिक दोउ मन खे
निरखत है यन दोउनके भाग ।। रस मसे आपहो मेखला
ल होरी खेलनको उग मगे पगे है जु पायत । प्रगट
चिन्ह सबकहे देन निशा जागे फाग खेलनको चनर

रा॰ खं॰ कल्या॰

रंगलाल केस केसरीगोरी कृष्णरसिक के संग रंग बोले ॥
बहुत दिनने दाव लग्यो है अबन छांडेगो ब्रजराज।
गारी देवेंगी सबी रस बस मीजें कृष्णरसिक रस साज ॥
आज ब्रजराज आप होरी खेलनको ग्वार बाल लीये सं
ग। कान्हके साथ काच रहबसों मीठन एकन पर छिर
कत रंग। कृष्णरसिक अदभुत यह सोभा फाग प्रेम

४८ ४९

48

के दिननमें बनबनकौंकर आपहीं रंग मचाय ॥

बृंदा बन छाय रही छबि कुंजनि कुंजन माई। हो री खे

लत खीगाथा बरंग भीनें अबीर गुलाल उड़ाई। निर

खि फलवारी सबरंग रंग अंग छबि मोपै बरनी न जाई ॥

रसिक खुशाल बिलोकन सोभा नेंह उमगा उमगाई

हो हो हो हो होरी बोले नंद कुंवर मद मातो डोले। खी

गा॰रे॰
कल्प॰

वाल। गावत सब सब सब मिल छव छोनी है मराल।

॥ गजर जोबन माती डोले नेद पबर के वीच। फाशन मा

स में रंग मचाई ज्यों भादों कीच॥ अंबर सब विथम्

धमा पद्धरे नाना सबन अमोल। हेस मत काय परस्प

र सब मिल भामिन सब की बोल॥ सनगई ज्ञ नेद ने

दन पीय संगमें मेले सब ग्वाल। खेल लप मारग में सब

४९

नंदरा ॥ मेरी जट कलई छुन रीया मथुरा नगर के गवारन-
कित वरजे वरजो नही मानत रनन जडाव कोई छुरीया
छीन लीनी कान्ह वट पारन । कुसल रसिक यों कहत स
वन मोंनें हकी भरी गजरीया गारी दई मोहि हजारन ॥
खेली रंग रच्यो व्रज भांमिनि सब मिल नंद नंदन सों खे
ले धमाल । सव जुर आई व्रज की पोर में संग वृषभांन के

रा॰ खे
कल्य॰

नहैं चवर खिलार । सब मिल खेलनहैं सांवरो गोरीगा
वन देदे नार । कृस्न रसिक मन भावन प्यारी निरखे
सखी बलिहार ॥ खेल होरी स्याम बाम सब वनव
न आई नेदमहर को धाम । ले अबीर मुख रुचसों मी
डन गारी देत नीच लेवा को नाम । कृस्न रसिक सों
प्रेम कु किन भई भल गाई सभ काम ॥ होरी आयो है

५०

50

कौं श्रेमबर मीर गुलाल ॥ नारदेदे गावत हे दम्मीयन
म्रदंग डफ बाजे । मह मद साहु हेदर जान पीया साहब
सो विराजे ॥ सकल डफ बाजे हे बाजे म्रदंग डफ बाजे·
रागरंग गावीन रबाब सेंग मिल मिल विब म्रदली धुन
बाजे । चोवा चंदन और अरगजा कुल रसिक रंग
साजे ॥ होरी आई कर सिंगार साब सखीर उरन बेल

ग॰ खे
कल्प॰

कृष्ण रसिक अब जान दे प्यारे मैं नेरेव लिहारी ॥ अब हैं

जीय को पन हैं परी होरी के त्रास । चरनै निकस वैठव

र भयो मेरो एक गाँव को वास । कृष्ण रसिक का सें क

हिये यह परी प्रेम की फांस ॥ लाल वस को नैंरी आ

ली फागन मे आव होरी औसर पाय । गारी देगी देवा

उस वन पै मारवे मे जेगी धाय । कृष्ण रसिक मन मा

६४ ५१

५१

फागुन मास हरि मोरी रूपन लई। सब खेलन बर

बांचर अपनें कोउ लेन मोस ख्ले दई। कौंन सुने उब

कासों कहूं मे यह होरी मोरी मोन भई। सुनों नगर मो

हे सूनो लागत उन बिन बिपत नई नई॥ स्याम जुटे

रन होवन वारी होरी खेलन कों अहो गिरधारी। ह

मरे संग कि हर निकस गई खेलन कों हमस्यारी

रा॰म॰ करि तोषा ।। राग मधु ताल तिताला ।। ल्ला

ग्रब तो मति डोले। कौन जग मांहि फिरे कथ

मारत स्वारथ कौन परे जिहिं तोले। जैसों

हरि हाय गउ नहिं मानत हूयहा कछु सो

पुछोले। तूं प्रति वेचल हाघन प्रावत।

निकसी जाइ नही म्रवबोले। सुंदर नारि

65

अब तो कर तोषा। बाद वृथा भटके निसि
बासर हरि कियो कब नहि धोषा। तह॰
तियारि नि पापनि कोठिनि सोचक क्षम
ति मानहि रोषा। तेहि मिलें तब तें जो बे
धतत्र मरि है न वहीं है मोषा। हेदर और
कहा कहा कहिय तोहि है ऌसा अब तो

रा॰म॰ सो सभ भए परमोदत तैं अब आगेंही कैं
रथ ह्वेकौ । सुंदर सीष गई सबही चलि
हे लछमा कहिकैं तोहि षोकौ ।। राग मधु
माल तिताला ।। हे लछमा तोहिं नैकन ला
जा । तैं भरमाई परदेस पटावत बादि ।
हृथ मरि जाइ अकाजा । तैं सब लोका ।

66

कह्यो वेर केतिकहू ल्लला म्रवतो मति डो

ले ।। राग मधु माल तिताग ।। हे ल्लला क

हिंकैं ताहि घ्योकौ । हे केतो हि कौंन कोउ

कानधरी नहीं नैकहू बोलत बोलत पे

टहिपोंकौ । हूकोऊ बात बनाइ कहू ज

बतै नव पीमतही मव फोकौ । केति क

ग॰म॰ यो। नाकदियो मम्मेभितताकरिजीभ दई

हरिको गुनगायो। सुंदरसाजदियो परमे

घर पेटदियो परिपापलगायो॥ ममः

मधु ताल चार॥ कूप भरे पुरुवापिभरे

पुनि तालभरे वषारितु तीनो। कोठीभ

रे घटमोटभरे घरहाटभरे सबही भरेली

67

नचाए भली विधि भाउ किए सबर कहरा

जा। स्हेदर तोहि उबाउ कहौं ग्रब हेल्ला

नोहि नैकन लाजा॥ राग मयु नाल चार।

ईदब क्षेद। पाउँदेये चलनैं फिरनैं कहो

हाथदिये हरि कृत करायौ। कानदिये स्र

निये हरि कौ जस नैन दिये तिन मार्गे दि

ग॰म॰ किधौं बावि किधौं सागर है जितो जल परे ते

तो सकल समात है। किधौं पेट दैत किधौं

भूत प्रेत गन सम है खिड खिड करे कछूं नेक

न अघात है। सुंदर कहत प्रभु कौन पाप

लायौ पेट जबतें जनम लियौ तबही ते

खात है ॥ राग मधु ताल चार॥ विघ्नहर्ता

68

नौ। खिदक खार बुखार भैरे परिपिट भैरे।
नबडो दराही नौ॥ संदर कहत तो रहै य
ह कौन खेड परमेश्वर कीनौ॥ राग मधुमा
ल चार मनहरखेट॥ किधौं पेट चुलहा
किधौं माटी किधौं भारयाहि जोई कछु।
सो किए सोई जर जात है। किधौं पेटघल

ग॰ म॰ गिलत नन हिलम होइ सेदरकहतवग्र
कौन पापलायो हता एक पेट काज ए
क एक को प्राधीनहै। पाजी पेट काजको
नवाल के आधीन होत कोनवाल सोतो
सिकदार आगें लीनहै। सिकदार दीवा
न के पीछें लगो डोले पुनिदीवानदूजा

69

विघनहू करत प्रति बारबार तन मन प्र
नि तन कबहूं अघायो है। घटत भरत॰
कैयोंही घटोई सा रहत नित सिर बिराई
भै तो कहूं बन खायो है। देह दे कहत
हि कहत जन्म ख्यायो पिंड पिंड काजे।
निस दिन ललचायो है। मगदलगिलत

ग.म.

काज घर द्वार द्वार फिर्यो है। पेटही के लि
ए हाथ जोरि आगैं ठाढो होइ गोड़ जोड़ क
हो मोड़ मोड़ उन कर्यो है। पेटही के लिए
पुनि मेघ सीत घाम सहै पेटही के लिए।
जाइ रन मोहि गयो है। सेंदर कहत नइ
पेट सब किए पुनि भोड़ प्रेर गैल क्रूटि

ई पातसाह आगे दीनहे पातिसाह करे या
खुदाइ सबके ओरदीजै पटही पसारेनहि
पेट बसकीनहै। सेदरकहत प्रभु कोंहै
नहि पेटभरे एक पेट कान एक एक।
को प्रधीनहै॥ रागमथु ताल चार॥ तै
तै प्रभु दियो पेट जगत नचायो जिनपेट



ग.म.

निडर ऐसेहीयेहै। देवता असुर भूत प्रेतती
नोलोक पुनि सेदर कहत प्रभु पेट जेरकी
येहै॥ राग मधु ताल चार॥ प्रातही उठत
जब पेटही कि चिंता तब सब कोऊ जात
अपने अहारेकौं। कोउ अन्न खात पुनि आ-
मिषभषतकोउ कोउ घास। ।

72

खरि पेट गेल परो है ॥ राग मधु ताल ष

पेट सौ नवली जाके आगें रम बहार चली

गाव ग्रह रेक एक पेट जीत लिये है । कोउ

वाद्य मारत विदारत है केजर को ग्रेमें स

र बीर पेट काज प्राण दिये है । जेत्र मे यसा

यन आरायन मसान जाइ पेट आगे उमत

रा॰म॰

73

न जीवहने बहु पेटही मांस भक्ष ग्रहह
गापी। पेटही लकरि चोरी करावत पेट
हीकों गटरी लेकापी। पेटही पासगरेम
हडारत पेटहू डारत कूपहू वापी। षेद
र काहूको पेट दियो प्रभु पेटसो ग्रौर न
हीको उ पापी॥ राग मधु ताल चार॥

चरत चरत कोउ द्वारको। कोउ मोती फ
ल कोउ वाम रस पय पान कोउ पवन॥
पीवत भरत पेट भारको। सुंदर कहत प्र
भु पेटही प्रमाण सब पेट तुमदियोहै।
जगतहो न वारको॥ राग मधु ताल चार॥
पेट सौ और नही कोउ पापी पेटके कार

रा.स.

सकल कोन्यागि कै एकांत जायगा रहते। हे

टर कहत यह ते मेंही लगायो पाप पेट

न हो तो प्रभु बैठ हम रहते ॥ राग सधु ता

ल चार ॥ पेटही के बस प्रभु सकल ज

हा है पेटही के बस रंक पेटही के बस रा

जा पेटही के बस औरगबान सुलतान है

74

मन हरखेद ॥ पेट नहोत तौ प्रभु बैठ र
म रहते। काहूकौं काहूके आगे जाइकै
आधीन होइ दीन वचन उच्चार भाख क
हते। जिनके तो मद अरु गर्व गुमान।
अति तिनके कठोर बैन कबहूं न सहते।
रमाके री भजन मौं अधिक ले लीन अति

ग॰म॰

७५

ल चार विश्राम को छेग ॥ दोहा ॥ नि चिंत करे
मति चिंतही वे वदई सोई चिंत करेगो। पो
उ पसारि पेंख्यो किन सो वह पेट दियो सो
ई पेट भरेगो। जीव जिते जलके पुनि पा
हनमैं पड़े चाड़ धरेगो। भूखवही भूख प्र
कारत है नर सुंदर तुं कहा भूख मरेगो।

GN

पेटहीके बस जोगी जेगम सन्यासी सेष
पेटहीके बस बनवासी खानन नहै ॥
पेटहीके बसरिषि मुनि तपधारी सबपे
टहीके बस सिद्ध साधक सुध्यानहै। से
दकहत नहीकाहूको गुमान रहे पेट।
बस प्रभु सकल जहांनहै ॥ रागमधुता

रा॰म॰ छूनकूदैंहै ॥ राग मधु ताल चार ॥ नैकन
धीरज धारतहे नर आतर होइ दसौ दि
स धावैं ज्यौं पंछी वनरावन वेधन जा
लगि नीरन आवहि आवै । जानत नाहि
महामति स्वारथ जाचर द्वार धनी पढे।
चावै । सेंदर आपुकियौ गढ भाजन सा

76

GN

राग मधु ताल चार। धीरज धारि विचार
निरंतर तोहि रचो सो तो ग्रापुहि ऐहे॥
जे तक भुवलगी हुट प्राणहि ते तक त
व्रन पासहि पैहे। जो मनमैं रत्नाकरि
धावत तो तिहु लोकानि खोत ग्रचैहे॥
सुंदर तम सोच करे कछु चेच दई सोई।

ग॰म॰

77

रिहैं करिहैं जू॥ राग मधु ताल चार॥ का
हे कौं टेरत है दसहूं दिस जू नर देवा कि
यो हरिजू कौ। बैठि रहे डरि कैं सब मूंद
ऊख्वालि के टोन खिवा इहैं हूकौ। गरभ।
यवै प्रतिपाल करि जीन होइ रहो नव
नूजउ नूकौ। मेदर कैयौं बिललात फि

GN

भरिहै मति सोच उपावै ॥ राग मधु ताल

वार ॥ आगन आपु गढो जिनतो भरिहै

भरिहै भरिहै जू । गावत है जिनके गुन ।

को ढरिहै ढरिहै ढरिहै जू । आदिहू पे

तहू मध्य सदा हरिहै हरिहै हरिहै जू ॥

सेदरदास सदा सहाय सोई करिहैं का ।

रा.स.

78

हेदर कौं विसवास न राषत सो प्रभु विश्व
भरे कबहीको ॥ राग मधु ताल चार। वि
चर भूचर जे जलके चर देत अहार चराच
र पोषे। वे हरिजू सबकों प्रतिपालत
जो जिहि भांति तिसी विधि तोषे। हे प्र
भु कौं विसवास न राषत भूलत हैं कत।

रे अब गावहु दे बिस्राम प्रभुको ।। रागम
धु ताल चार ।। आदिनतें गरभवास त
ज्यो नर आइ अहार लियो तबहीको । सो
तही खात भई इतने दिन जानत नाहि
न भूख कहीको । दोरत धावत पेट दि ।
खावत तृसट कीट मरा अनहीको ।।

रा॰म॰

भाग लिके तितनो कहा पाइहै। कूपमो

क भरि भावे सागरके नीर भरि जितनो

क मोटो नीर तितनो समाइहै। ताहीतें

संतोष करि सुंदर विश्राम यहि जितनो

रच्योहै घट सोइ भ्रमराइहै॥ राग मधु

माल ताल॥ काहेको फिरत नर दीनभ

७९

८५

योविही योषि। तोहि तहो पहेचाइ रहे।
प्रभु संदर वैठिरहै किन वोषि॥ रागम
धु ताल चार मनहर छंद॥ काहेकों व
बुरा भयो फिरत प्रजानि नव तेरी तोरि
नक तेरे घर बैठे ग्राइहै। भावे त स्मेर
नाहि भावे नाहि मात देम जितनोक।

रा॰म॰ कौंन गावे मठ वार वार समझाई कह्यो॰
केती देवेहे ॥ राग मधु ताल चार ॥ तेरेतो
ग्रथीरज तो आगलीहो चिंता करे आज॰
तो मह्योहे पेटकालहू केम होइहे । भु
वोई पुकारे अरु दिन उठि खातो जाइ
अतिही अतानी जोकी मति गइ खोइहे॰

80

यो घर घर देखि घर तेरो तो प्रहार पक
से रहे। जोको देह सागरमें सुन्यो सत
जो जन को ताडूकौं तो देत प्रभु यौं मौन
ही फिर है। भूख्यो कोउ रहत न जानि।
ये जगत मोहि कोरी प्रक ऊंजर सपन।
ही कौ दे रहे। सुंदर कहत तो विश्वास।

रा॰ म॰ देतहे। कीट पशु पंछी अजगर मछ कछ

पुनि उनको न मोक्ष कोउन तो कछु वि

तहे। पेटहीके काज राति दिवस भ्रमत

मठमें तो जान्यो नीकै करित तो कोउ ग्र

तहे। मनुष शरीर पाइ करत है हाय हे

रकहत नर तेरे सिरं रतहे ॥ रागमधु

81

तोकों नहि जानें सठ जोको नाम विषंभर

जहां तहां प्रगट वमन देत सोइहे। स्वद

र महतत्व हि वाको तो भरो सो नाहि ताक

विश्राम विनाही भांति रोइहे ॥ २११ ॥ मधु

ताल चार ॥ दोविधी सकल विष भरतम

रन हार वृचक समान तोनि सबही कों॰

रा॰म॰ कौं वहतहै। काहेकौ अज्ञानी कछु सोच
मनमाहि करै भयो तौ कदे नरहे सुंदर
कहतहै। जगन मैं आइ तै विसारो हे जग
तपति जगन कियो है सोइ जगत भरतहै॰
तेरे चिंता निसिदीन ओरही परी है आ
इ उद्यम अनेक भांति भांति के ।

नाल चार।। ३ तो भयो बाबरो ऊतावरो

फिरत प्रति प्रभुको निस्वास गहि काहे

न रहत है। तेरो तो बिज कहे स आइहे स

हज मोहि यौंही चिंता करी करी देहकौं

दहत है। जिन यह नाव सिव साजि कैं

सवारी ताहि अपने कियेकी वह लाज

रा॰म॰ हि जगव्यापि सब उर वासी है। नट ह्वै

पेट पीर कबहूंक सीसबाह कबहूंक।

आखि कान सबमें व्यथासी है। और अ

नेक रोग नाव लिख पुरि रहे कबहूंक

श्वास चले कबहूंक खांसी है। ऐसो या

शरीर ताहि अपनो कै मानत है सेदर

करतहे। इतउत जाइके कमाइ करि।
लाउं कछु नैंकन ग्रहानीन धीर रजीत
हे। सुंदर कहत एक प्रभुको विश्वास
बिनु बादकों ल्याही मठ पचिकें म
रतहैं॥ राग मथु ताल चार॥ देहतो म
लीन प्रति बहुत विकार भरी ताहि मो

रा॰म॰ केनैंनानकहाथ पोउ सोउ सब हाडहीं॰

की नलीहै। सुंदर कहत याही देखि नि

न भूलि कोउ भीतर भंगार भरि ऊपर तैं

कलिहै॥ राग मधु ताल चार। ईंदवछं

द॥ हाडको पिंजर चाम मढ्यौ सब मो

हि भर्‍यौ मल मूत्र विकारा। थूकफ़लार

83

कहत यामैं कोन स्वाव वासीहै ॥ राग मधु

नाल चार ॥ ना शरीर माहि न अनेक स्व

विमानि रह्यो नाहि न विचार जामैं कोन

बात भलिहै । मेद मज्जा मांस रग रग

माहि रक्त भरि पेटहू पिटारीसी मे ठोर

ठोर मलिहै । हाड निसें भवह्यो हाडहि

रा॰म॰

८५

सो स्वालदीमत उग्रवीमेंगी उहनाक में
मेठे। औरहूं स्वालीन रहें नित हाडके
मासके भीतर बैठे। ऐसे शरीरमें वास
किये तब नाक मेदीमत स्वालन ठेठे।
सेदर गव कल्हाइतने परकोहि कौ तेन
र चालत हठे॥ राग मधु माल चौताल

परे सुबिते पुनि व्याधि बहै सब ओर उ
दारा। मोसकी जीभसौं खोइ सबै कछु
नाही नैन कौहे कौन विचारा। ऐसे सरी
रमै पठिकैं सुंदर कैसेकैं जियै सोच प्र
चारा।। राग मधु ताल चार मनहक्केद।
काहे कौं तनर चालत टेढि यु कहलंभ

रा०म० पनी आदि विज्ञात नोही ॥ राग मध्य ता

ल तीन० नारी निद्रा को रोग० मन हर

छेद ॥ कामिनी को देह मानो कहिये

मदन बन वही कोउ जाइ मे नो भूलि०

के परत है । उजरहै रानि कटिके हरको

भये जामें वेनी काली नागी निफ फन

८५

८५

ग्रपनी ग्रादिविचारत तोही। जादिन ग
रभ संजोग भयो जब तादिन हेद छिपा
इती तोही। द्वादस मांस ग्रधोमख व कुल
त बूडिरहो पुनि बोर समोही। तारजेबी
रजकापरदेह मतो ग्रब चालत देव।
कोही। संदर गावे गुमान कहा मनो ग्रा

GN

रा॰म॰

86

रि बिगबेलि बढी नाव देखिये। बिषही
के जर मूल बिषही के डार पात बिषही के
फल फूल लागे जे बिसे बिये। बिषही
के तेतणा मारी तुरका गए ब्राह्मण मारी स
ब नर हत पर लपटी ही लेबिये। हेद
र कहत कोउ एक नहबचि गए तिनक

GN

क्रोध धरतहै। जबहैपहार नहो कामको
र रहै नहो मानिके कटाक्ष बान प्राण
कों हरतहै। सुंदर कहत एक और डर
युवतिनामैं गलम बदन खोउ खोउही
करतहै ॥ राग मधु नाल चार ॥ विष
हीकी भूमि मांहि विषकें अंकुर भयेना

ग॰म॰ नाव सिव नरक दिवानी है। मेदर कर

न नारी नरक कौ कुंड यह नरक मैं जाइ

परै सोई नरक के पानी है॥ राग मधु ना

ल चार। कामिनी को अंग। अति मलिन

महा अशुद्ध रोम रोम मलिन मलिन स

ब द्वार है। हाड मांस मज्जा मेद चाम सों

87

नो कहे लना लागी नही पेखिये ॥ गगा म
धु ताल चार ॥ उदर मैं नरक नरक ग्रथ
द्वारनिमैं कुचनिमैं नरक नरक भर ब्छाती
है । कंठमैं नरक गाल चिबुक ग्रीव सब
मैं नरक जीवलार झू चुचातीहै । सीस मैं
नरक कांन नैननिमैं नरक वहे हाथ पांउ ।

रा॰म॰ मंजरी युक सिंगारहि जानि। चतुराई क
रि बहुत बिधि बनाई आनि। विषय ब
नाई आनि लगत विषयन कौ प्यारी।
जाके मदन प्रचंड मर है नाहि सिव ना
री। ज्यौं रोगी मिष्टा न खाय रोगहि वि
चारी। केदव यह गति होइ जुनो रसि।

४४

८५

पेट गावै हौर हौर करनके भरे वही मे

आरहै । मूत्र पुरीष आंत एकमेक मि

लि रही औार उट दर मोहि विविधि वि

कारहै । सुंदर कहत नारी नाख सिख

निंदा रूपताहि जमरहै ते तो बडेई गे

वारहै ॥ कुंडलिया ॥ रसिक प्रिया रस

GN

रा॰म॰ सुंदर ऐसी जान सुनत रसिक प्रियाभा

ई ॥ परनिंदाको अंग। आपने न दोष देखे

पवे। राग मधु ताल चार। न पेखे इष्टकौ

स्वभाव उठि निंदाई करत है ॥ जैसे का

हू महल संवारि राख्यो नीकें करि कीरी

तहां नर छिद्र ढूंढत फिरत है । ॐ

क प्रियाधारी। रसिक प्रियाके सन ही उ

पजै विविधि विकार जो यामें चित देत

है। वहै होत नर खार वहै होत नर खार

बार तो कछु बन लागे। सुनत विषय

की बात लहरि विषही के जागि ज्यौं का

उ उंघत डंकै तो लही पुनि मेज बिछाई।

रा.म. मीठी। लोटत पोटत व्याकुल ह्वै ज्यौं नित

नाकत है पुनि ताकी पीठी। ऊपर तै छि

र कै जल आनि सु हेट लगावत जा घि

ठी। यामहि क्रूर कछू मति जानहु

हेदर आपनी ओर बिन दीठी॥ राग म

धु ताल चार॥ उह कैरै नहि कौन बुरा

90

ओरहीतें सों फलागि सोकहीतें ओर ल
गि सुंदर कहत दिन ऐसेही भरतहैं ।
पीउके नेरेकी नौन रूके लागि न्हाव ।
कौं और सों कहत सिर ऊपर बरतहैं ॥
राग मधु ताल चार। इंदवछंद। योतम्र
नेक रहैं उर अंतर ऊह कहे सावते प्रति

रा॰म॰

91

घुताल बार॥ जो नर पोषत है निज देह
हिं यज्ञ विनाश करै तिहिं बार। जो ग्रहि
और मनुषन को टन वाही नहीं कछु।
होइ प्रहार। जो पुनि पावक जारि म
वै कछु आपहु नास भयो निरधार। जो
यह संदर उह स्वभावही जानित जो कि

ई। अपने काज से भारन के हित औरक
काज बिगारत जाई। आपनो कारज हो
इन होउ बुरो करि औरको डारत भाई।
आपहु खोवत औरहु खोवत खोइ उडहू
प्रदेत बडाई। सेदर देखत ही बनि आ
वत उडहु कैरे नही कौन बुराई॥२०२॥ग

रा॰म॰

92

यमति आनौ। सुंदर और भले सो नहीउ
व दुर्जन संग भलो जिन जानौ ॥ रागम
धु माल चार। मन चंचल को अंग। मन
हरखेद॥ हटकि हटकि मन राखत
न छिन छिन सटकि सटकि चहुं ओर
अब जात है। लटकि लटकि ललचाइ

न प्रकारा ॥ राग मधु ताल चार ॥ ऊर्जन

मेरा बलौ जिन जानौ सपेंडसे सनाही।

कछु ताल कबीछू लरौ स्व भलौ करि मा

नौ। सिंघहू स्वाहितौ नोहि कछु डरसो

गज मारे तो नाहिन हानौ। श्रागि जरो ज

ल बूडि मरो गिरि जाइ तिगिरो कछु भ

रा.म. मनकी प्रतीत कोऊ करै सो दिवानो है ॥

९३

पलहीमें मरि जात पलहीमें जीवत है प

लहीमें पर हाथ देखत बिकानो है। प

लहीमें फिरे नवखंड ब्रह्मंड सब देख्यो

अनदेख्यो सो तो यातें नहि छानो है।

जातो नहि जानियत आवत न देखि क

लोल बार बार गटकि गटकि करि बिष

य फल खात है। फटकि फटकि तार-

लोरत करम हीन भटकि भटकि कहूं-

नैं कन ष्रयात है। पटकि पटकि सिर

सेदर कुमानी हर फटकि फटकि जा

इ रहेथें कौन बात है॥ राग मधु तालध

रा॰म॰

९४

मोचिए सु कानन धरत है। नीति न सुनी
ति देखि सु भन सुसभ पावे पलही में हो
ती सुनहोती हूं करत है। गुहकीन साधु
कीन लोक वेदहू को सेक काहू कीन॰
माने नतो काहूते डरत है। सुंदर कहत॰
न ताहि यो जिय मों कौन भांतिलन।

१००

कु प्रेमी सो बलाय ग्रबना मों पर्यो पानो
है। सेदर कहत जाकी गति इन लखि
परे मन की प्रतीत न कोऊ करे सो दिवानो
है॥ राग मधु ताल चार॥ मन को स्व
भाव कछू कह्यो न परत है। ठेरिये तो
ठेरो नहीं आवत है। मेरो हित जोई पर

न साधी है। लोभ जब जागे तब तपतन
कौं ही होइ संदर कहत इन ऐसी विधि
साधी है॥ महामत बारो निसिदिन ही
फिरत रहे। मनमोनहन कोउ देख्यो अ
परायी है। मनमोनहु कोउ जानो दगा
बाज है। टे पिवे कौं टेरे तो अटकि जाइ॥

को स्वभाव कछु कहो न परत है ॥ राग म
धु ताल चार ॥ मन सो न कोउ हम देख्यो
अपराधी है । काम जब जागे तब गनन
कोउ सोक जाने सब जोय करि देखत
माथी है । क्रोध जब जागे बनेकन सेभा
रि सके प्रेमी विधिमूल की अविद्या नि

रा०म०

९६

नीही टेक परे मन मोन कोउ हम जानी द

गाबाज है ॥ राग मधु ताल चार ॥ मन।

मोन कोउ है प्रथम या जगत में देबिन कू

टेर टेर कहत हत है। और और लीन

जाइ होत हाउ मोस उर गत में करत बु

राई मर और मर न जानै कछु थक्का आई

वाही बोर म्हनिवे कौं दौरे तो रसिक सिर

तानहे। हेषवे कौं दौरे तो ग्रहायन म्हरे

थ करि खाइवे कौं दौर तो नथाये म्हारा

नहे। भोगडू कौं दौरे तो स्टपत नहीं कौं

ड़े होइ संदर कहत याही नैं कहोन ला

नातहे। काडूकों कैयोन करी ग्रापरो॰

रा॰म॰

सेकर विधाता इंद्रदेव मानि आपनोउ प्र

थिपति ठयो जिन वेदहे। और जोगी जं

गम सन्यासी सेष कोन गने सबही को ठ

गन ठगावे न सके दहे। तापस रिषी स

र सकल पावे पचि हारि काऊकेन आवे

हाथ ऐसो यामें बेदहे। सेदर कहत व

97

देत रामनाम सौं लगतमे । वाहे सुर असु
र वहाडु सब वेष जिनि सुंदर कहत दि
न वालत भगतमे । ओरउ अनेक अंतराइ
ही करत रहे मनसोन कोउहे अधमया
जगतमें ॥ राग मधु ताल चार ॥ मनसो
न कोउ याजगत मोहि दिंदहे । जिनठगे

रा॰म॰ पशुपंछी कहूं केसैं के बचतहे। राजाहीन

वो सब भूमिही को राजलेव औरउ नबा

वे जोई देह सरबतहे। सेदर कहत काङ

सेतकी कही नजाइ मनके नचाए सब॰

जगत नचतहे॥ राग मधु ताल चार॥

इंदवबेद। केति कटो समर्पस सफाव

98

सकोन विधि कीने नाहि मनसोन कोउ।
याजग माहिविदहे ॥ राग मधु तालचार
मन के नचाए सब जगत नचतहे। रंक
कों नचावे अभिलाष धन पाइवे को नि
सिदिन सोच करि ऐसेंही पचतहे। देव
ता असुर सिद्ध पन्नग सकल लोक कीट

रा॰म॰ दौरतहे दसहूं दिसकों सठवाय लगी त

वतें भयो बैंडा। लाजन कोन कबहूनहि

गावत सील सुभावकी फोवत मेंडा। ला

लच लागि गयो मन विपरीट ग्रठारह

पैंडा। रेदरसीष कहा कहे देइ भिदे

नहि बान छिदे नहि गेंडा॥ राग मयु

९५

वत मानत नाहीं वडो मनमोंढ। मूलि र
हो विषया रूपमें कछु ग्रौरन मानत
है सठ दौंड। ग्रां बिन कानन नाक बिना
सिर हाथन पाँव नही मावपोंड। छेद
र नाही गहे कोउ क्यौं करि निकसी ही
जाइ वडो मनलोंड॥ राग मधु तालचार

ग॰म॰ दीमन ग्रैसौ ॥ राग मधु ताल चार ॥ कैबेर

100

तू मन रंकभयो सठ मोगत भीखद सौरि

मतूल्यो। कैबेरतैं मन्न छत्र धर्यो सिरका

मिनि सेग हिंडोलनि झूल्यो। कैबेर तूम

नक्कीन भयो ग्रति कैबेर तू स्वाव पाइक

झूल्यो। संदर कैबेर तोहि कहो मनकौ

नाल वार ।। स्यानकहे कि शृगालकहे वा
रह वाहे कि विडाल कहे मनकी मतितै
मी । ढेढ कहे किधौं डूमकहे किधौं भाड
कहे कि भेडाइहै जैसी । चोरकहे वटपार
कहे ठगनार कहे उपमा कहे कैसी । वेद
र और कहाकहिय अवया मनकी गति

गा॰म॰ याषत कौंहीं। वाइ वह्नहनि कौंन गहे

कर संदर दौरत है मन त्यौंहीं॥ राग म

धु ताल चार॥ रे मन तूं प्रेम को किनछो

डे। कान सुभाव परो हठि दौरत ग्रम्ह

त छोडि विचोरत होडे। जो मन मकी ह

हनी हग देवत ग्रानर होइ परे गजखो

10

202

नलगी किंहि मा रेग म्हल्यो॥ रा रा मधु

नाल चार॥ इंद्रिनि के स्वाद चाहत है म

न लालच लागि भरम सठयोंही। देखि

मरीच बभयो मन कौन गली जल पूर

ण धावत है मृग मूरख ज्यों ही। प्रीतपि

माच निशाचर डोलत भ्राव मरे नहि।

रा॰म॰ विचारे। जो कछु और विषय मन भावे
छिन सो यह देहि अमोलि कहारे। औ
रि कुवुद्धि भजे भगवंत नहिं आपुन ते पु
नि औरहि तारे। सेवक तोहि कहों कि
तनी वेर हे मन कीनो नहिं आपु मे भारे।
राम भजु ताल चारे॥ जो मन नारी को

102

103

है । सुंदर तोहि सदा समझावत एक
हू सीख लगै नहि तेरे । बादवृथा भ
टकै निसिबासर रे मन तें भ्रम को कि
न छोडे ॥ राग मयु ताल चार ॥ तें पत
कौं नहि आप सँभारे है सब कौ सिर
मोर नतत छिन तो अभि अंतर लान

लाल बार मनहर छंद॥ कबहूंक कहूमि
गुहे कबहूं करोड़ देत कबहूं वकतक
हूं ग्रेत हून लहिये। कबहूंक खाय तौ
ग्रखा यन ही काहू करि कबहूं कहे मेरे
कछु नहिं चहिये। कबहूं प्रकाश जा
इ कबहूं पताल जाइ सेदर कहत ता

वोमनिहारत तो मन होतहै ताही कोरू

प। जो मन काहूसों क्रोध करे तब क्रो

ध मयी के जाइ तत्तरूप। जो मन माया

ही मायारहे नित तो मन हूउत माया

के रूप। सेदर जो मन ब्रह्म विचारत

तो मन होत है ब्रह्म स्वरूप॥ ततमयु

गा॰म॰ कबहूंक गानें पीरे रंग स्याम सेत हैं। क
बहूं तो स्रोव कों उगाइ करि टाढे करे
कबहूं तो सीस धरन देकर देत हैं। बाजी
गर कोसो खेल खेदख करत मन सदा
ई भ्रमत रहे ऐसो कोई हमरी खेत हैं॥
राग मधु माल चार॥ कबहूंक मा ह।

104

हिकैसैंकर गहिये। कबहूंक ग्राइलगै

कबहूं उतरि भागेभुत केसे चिन्हकरे

ग्रैसे मन कहिये।। राग मधु माल चार।

कबहूं तो पांवरी परे वाकैं देखिवै मन

कबहूंक धरिके चोबर कर लेत है। कब

हूं तो गोटि कोउ ग्रागन प्रकाशघोर।

रा॰म॰ रूप ऐसो स्वेत फटक जैसो कबहूंक स्व
होत कबहूं मपेक है ॥ राग मधु ताल चा
र। हाथीको सो कानकी घोपी परको सो
पानकीयें धुजाको उडान कछे थिरन र
हत है। पानीको सो घेरकीयें पौन उरा।
फेरकीयें चक्रको सो फेर कोऊ के सेक

105

होत कबहूंक चोर होत कबहूंक राजा।
होत कबहूंक रंक है। कबहूंक दीन।
होत कबहूं गुमानी होत कबहूं कुत्यो
होत कबहूंक बंक है। कबहूंक कामी
होत कबहूंक जती होत कबहूंक नि
रमल होत कबहूंक पंक है। मनकोसब

ग॰म॰ हरषमानैं सोकमानैं मानैं रंक धनहै। घ
टिमानैं बढिमानैं सुभह ग्रहभमानैं ला
भमानैं हानिमानि याहीनैं कृपनहै। पा
पमानैं पुन्यमानैं उत्तम मध्यम मानैं नी
चमानैं ऊंचमानैं मेरी यह तनहै। स्वरग
नरककमानैं बंधमानैं मोक्षमानै सेदर स

106

गहतहै। अरु हटमाल किधौं बराबिकौ
ख्याल किधौं फेरी खात बालक कछु स
थन लहत है। धूमकौ सोयावताकौ रा
खिवे कौ चाव ऐसो मन कौ सुभाव सो
सो सुंदर कहत है॥ राग मधु ताल चार॰
साबिमानै डाबिमानै संपति बिपतिमानै

रा॰म॰

107

ई त्यागे जोई अनुरागे जहा जहा जाई सो
ई मनहीको भ्रमहै। जोई जोई कहे सोई
सुंदर सकल मन जोई जोई कल्पै भ्रम
नहीको धरमहै। एकही विटप विश्व
ज्यौं कौं त्यौंही देखि यत अतिही सघ
नताके पत्र फल फूलहै। आगिलेक

कलमानैं तानैं नाम मनहै ॥ राग मधु

माल चार ॥ जोई जोई देखि कछु सो

ई सोई मन ग्रहि जोई जोई सुनै सोईम

नही को भवमहै । जोई जोई खेवै जोई

खाई जो स्पर्श होइ जोई जोई करै सोऊ

कनही को करमहै । जोई जोई ग्रहै जो

ग॰म॰ नाल चार ॥ तो सोन कपूत कोउ कत ह्वै
न देखियत तो सोन सपूत कोउ देखिय
न और है। तेही आप भलि महा नीच ह्वै तें
नीच होत तेही आप जानैं ते सकल सिर
मौर है। तेही आप भ्रमै तब भ्रमत ज ग
न देखे तेरे थिर भए सब ठौर ही ठौर है।

करत पात पनरा होत जात ऐसें याही त
न को अनादि काल भूल है। इस चारि।
लोकलौ जहां तहा पसरि रहो अय प्रनि
ऊरध स्तन अक मूल है। कोउ तो कहे
न सत्य कोउ तो कहै असत्य सेदर सक
ल मन नही को भरम भूल है॥ १११ मष्ठ।

रा॰म॰ मातहै। मनहीके भ्रमतें मरीचकाकौ जल

कहै। मनहीके भरम सीप रूपो सो दिखा

वाहै। सुंदर सकल यह दीसै मनहीको भ्र

म गया ब्रह्म होइ जातहै॥ राग मधु ताल

चार॥ मनही जगत रूप होइ करि वि

स्तरै मनही ग्रलाव रूप जग लैत सो

तेही जीवरूप तेही ब्रह्म है प्रकाशवंत
मेहर कहत मन तेरी सब दोर है ॥ राग
मधु माल । ५ । मनही के भ्रमतें जगत य
ह देखियत मनही को भ्रमगयें जगत
विलात है । मनही के भ्रमजेवरीमें उप
जत सांप मनके विचारे सांपजेवरी स

रा०म० मधुताल चार। चानक को श्रेग। जोई
जोई छूटवे को करत उपाय ग्रत सोई
110
सोई दृढ करि बंधन परत है। जोग ज
त जपतप तीरथ व्रतादि ओर केपा
पातलत जाइहि वारे गरत है। कान।
उ फराइ पनिके मउल चाइ श्रेग विभू

न्यारी है। मनही सकल घट व्यापक ह्वे

इ एक मन है सकल यह जगत पियारो

है। मनही आकाश वेत हाथन परतक

छु मनके नरूप रेख वृद्ध हीन बारी है।

सुंदर कहत परमारथ विचारे जब मन

मिटि जाइ एक ब्रह्म निज सारी है॥१९॥

ग.म.

फल पचजलकमतन रमत नर मतत जतन वम
तवन। जरतत मरतत नर गरतत परतत मर
कहतत लहतत हयगयट लव लघन। पव
त पचतत भव भय नट रतत मट घट घट:
घगट रहतत नल खतत जन॥ इत्याभोगः
इतिमधुरागस्यकल्पद्रुमपरिच्छेदः॥ ॐ

ति कंठ लगाइ सिर नटाउ धरत है। बिन
ज्ञान पायानही छूटे हृदय की ग्रंथ है
दर कहत यों ही भ्रम कैं मरत है॥ राम
थ ताल चार। निमान जपन एकरत
धरत व्रत नत सत मन वच करम भ्रम
कष्ट सहत नन। बल कल श्रमन ग्रमन

(८८)

रा०

निशिचर जाय होइहु तुम दोऊ। वैभव विपुल तेज भल हो

रा०म

ऊ॥ भुज बल विश्व जितव तुम जहिंआ। धरिहहिं विस्

नु जतनु तहिंआ॥ समर मरण हरि हाथ तुम्हारा।

177

होइहहु मुकुत न पुनि संसारा॥ चले युगल मुनि पद

शिरनाई। भये निशाचर कालहिं पाई॥ दो०॥ एककल्पयेहिहेतुप्र

अथ विभास रागस्स रामायण परिछेद माह ताल तीन॥२॥

चौपई॥ हर गण मुनि हिं जान पंथ देषी। बिगत मोह
मन हर्ष विशेषी॥ अतिस भीत नारद पहं आये। ग
हि पद आरत बचन सुनाये॥ हरगण हमन विप्र
मुनि राया। बड़ अपराध कीन्ह फल पाया॥ आप अ
नुग्रह करहु कृपाला। बोले नारद दीन दयाला॥

रा॰ कुश केतु कन्या प्रथम जो गुण शील सुख शोभा मयी ॥
रा॰स सबरीति प्रीति समेत करि सो ब्याहि नृप भरत हि दयी ॥
जानकी लघु भगिनि जो सुंदरि शिरो मणि जानिके ॥ सोज
नक दीन्ही ब्याह लषण एहि सकल विधि सन मानिके । जे
हि नाम श्रुति कीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुण आगरी

1778

१८५४

लीन्ह मनुज अवतार । सुररंजन सजन सुखद हरि भं
जन भूभार ॥ चौपई ॥ इहि विधि जन्म कर्म हरि केरे ।
सुंदर सुखद विचित्र घनेरे ॥ कल्प कल्प प्रति प्रभु
अवतरहीं । चारु चरित नाना विधि करहीं ॥ नव नव
कथा मुनी शान गाई । परम विचित्र प्रबंध बनाई ॥

ती॰ ३॥ २म २प २नि ३सं ३रे ३ग ३रे ३सं २नि २प २म २ग २रे
दोहा॥ मुदित अवध पति सकल सुत बधुन समेत निहा

रा॰म
२सं २प २म २ग २रे २ग २म २प २म २ग २रे २सं
रि। जनु पाये महिपाल मणि क्रियन सहित फल चारि॥

ता॰ ३॥ २प २म २ग २रे २ग २रे २ग २रे २सं २म २प २म २ग
चौपई॥ जस रघुवीर ब्याह विधि वरणी। सकल कुंवर

२रे २ग २रे २सं २प २म २प २नि ३सं २नि २प २म २प
ब्याहे तेहि करणी॥ कहिन जाइ कछु दाइज भूरी। रहा

२म २ग २रे २ग २रे २सं २म २प २नि ३सं २नि २प २ध २म
कनक मणि मंडप पूरी॥ कंबल बसन विचित्र पटोरे।

179

१८४

मोरई रिपु सूदन हि भूपति रूप शील उजागरी ॥ श्र

न रूप वरउ लहि निपट स्पार लख सकुवि हिय हर

षहीं। सब सदित सुंदरतास गह हित सम स्वर गण

बरषहीं। सुंदरी सुंदर वरण सब एक मंउ परा जहीं

जन जीव उर चारिउ स्रवस्था विभन सहित विराजहीं

रां

रा॰स

वा सहि आवा । तब कर जोरि जनक मृदु बानी । बोले सब

बरात मनमानी ॥ छंद ॥ सनमानि सकल बरात आदर

दान विनय बड़ाइकै । प्रमुदित महा मुनि वृंद वंदे पूजि

प्रेम लड़ाइकै ॥ सिर नाइ देव मनाइ सब सन कहत कर

संपुट किये । सुर साधु चाहत भाव सिंधु कि तोष जल

180

भाँति भाँति बहु मोलन घोरे ॥ गज रथ तुरग दास अ

रु दासी । धेनु अलंकृत कामदुहा सी ॥ वस्तु अनेक

करिय कि मिलेखा । कहि न जाइ जानहिं जिन देखा ॥

लोक पाल अवलोकि सिहाने । लीन्ह अवध पति सब

सुख माने ॥ दीन्ह याचकन्ह जो जेहि भावा । उबरा सो जन

रा॰
रा॰स

णामयी ॥ अपराध छमिबो बोलि पठये बहुत हौं ढीठ्यो
दयी ॥ इति भानु कुल भूषण सकल सकल सन मा
न विधि समधी किये ॥ कहि जोरि कर हि विनती परस्पर
प्रेम परि पूरण हिये । बृंदारिका गण सुमन बरषहिं राउ जन
वा सहि चले । दुंदुभी जय धुनि वेद धुनि नभ नगर कौतूहल भले

181

अंजलि दियें। करजोरि जनक बहोरि बंधु समेत को

शल रायसें॥ बोले मनोहर बयन सानि सनेह शील

सुभावसें॥ संबध राज जरा वरेहम बड़े अब सब

विधिभये॥ यह राज साज समेत सेवक जानिवे विन

गथलये॥ येदारका परिचारि का करि पालवी करु

न अंग

रां
रा॰म

मनोजल जावन ॥ पावक सुत पद कमल सुहाये । सुनिम
न मधु परहन जहं छाये ॥ पीत पुनीत मनो हरधोती । हर
न बाल रविदा मिनिजोती ॥ कलकिं किणि कटि सूत्र म
नोहर । बाहु विशाल विभूषण सुंदर ॥ पीत जनेउ महा छ
विदेई । कर मुद्रिका चोरि चित लेई ॥ सोहत व्याह साज

18

नव सखिन मंगल गान करति मुनीश आयसु पाइकै।
दुलह दुलहिनि सहित सुंदरि चली कुहू वर त्याइकै।
दोहा॥ पुनि पुनि रामहि चित वसिय सकुचति मन स
कुचयन॥ हरति मनो हर मीन छवि प्रेम पियासेन यन
चौपई॥ श्याम शरीर सुभाय सुहावन। शोभा कोटि

रा.
रा.स.

ता मणिगाथे ॥ छंदः ॥ गांथे महा मणि मौर मंजुल अंग
सव चितचोरहीं । पुर नारि सुर सुंदरि विलोकहिं निर
खि छबि तृण तोरहीं ॥ मणि वसन भूषण वारि आरति
करहिं मंगल गावहीं ॥ सुर सुमन बरषहि सूत मागध वं
दि सुयश सुनावहीं ॥ कुंहु बरहि आने कुंवर कुंवरि सुआ

183

सब साजे। उर आयत उर भूषण राजे॥ पीतउ परना कांखा
सोती। दुहूं आचरण लगे मणिमोती॥ नयन कमलक
ल कुंडल काना। वदन सकल सौंदर्य निधाना॥ सुंद
रि भृकुटि मनोहर नासा। भाल तिलक छवि रुचिर
निवासा॥ सोहत मौर मनोहर माथे। मंगल मय मुक्

रा० लोक निविर ह्वव स भइ जानकी ॥ कौतुक विनोद प्रमोद

रा०स प्रेम न जाइ कहि जानहिं अली ॥ बरकुँ वरि सुंदर सक

ल सखिन लवाइ जनवां सहि चली ॥ तेहि समय सुनि

य असीस जहं तहं नगर नभ आनन्द महा ॥ चिरजियहु

जोरी चारु चारिउ मुदित मन सबही कहा ॥ योगींद्र सि

18४

सखिन्ह सब पाइकैं ॥ अति प्रीति लौकिक रीति लागी

करण मंगल गाइकैं ॥ लह कौरि गौरि सिखावरा महि

सीय सन सारद कहैं ॥ रनिवा सहास विलास रस बस

जनम को फल सवलहैं ॥ निज पाणि मणि महं देखि

प्रति मूरति सरूप निधानकी ॥ चाल तिन भज वल्ली वि

रा॰ नपा बड़े बसन अनूपा। सनन समेत गवन कियभूपा॥
रा॰स सादर सबके पाव पखारे। यथाजोग पीढ़न बैठारे॥धोये
जनक अवधपति चरणा। शील सनेह जाहि नहि बर
णा॥बहुरि राम पद पंकज धोये। जेहर हृदय कमल
महु गोये॥तीनो भाइ राम समजानी।धोये चरणजन

185

मनीशा देव विलोकि प्रभु दुंदुभि हनी ॥ चले हरषि बरषि
प्रसून निज निज लोक जय जय भनी ॥ दोहा ॥ सहित ब
धूटिन कुंवर सब तवआये पित पास ॥ शोभा मंगल
मोद भरि उमगेउ जनु जन वास ॥ चौपई ॥ पुनि जेंव ना
र भयउ बहु भांती । पठये जनक बुलाइ बराती ॥ पर

रा॰ गान सुनि अति अनुरागे॥ भांति अनेक परे पकवाना।सु
धा सरिस नहिं जाहिं बखाना॥ परुसन लगे सुआर सुजा
ना। ब्यंजन बिबिध नाम को जाना॥ चारि भांति भोजन बिधि
गाई। एक एक बिधि बरनि न जाई॥ छरस रुचिर ब्यंजन
बहु जाती। एक एक रस अगणित भांती॥ जेंवत देहिं

186

क निज पानी ॥ आसन उचित सवहिं नृपदीन्हे । वोलि सूप
कारी सवलीन्हे ॥ सादर लगे परन पनवारे । कनक खी
ल मणि परण संवारे ॥ दोहा ॥ सूपोदन सुरभीस रपि
सुंदर स्वाद पुनीत । छण महुंसव के परु सिगे चतुरसु
आर विनीत ॥ चौपई ॥ पंच कोर करि जें वन लागे । गारि

रां
रा॰म

अति प्रसन्न मोहि जानि । मांगहु बर जोइ भाव मन महादा
नि अनुमानि ॥ चौपई ॥ सुनि प्रभु बचन जोरि युग पाणी
धरि धीरज बोले मृदु वानी ॥ नाथ देखि पद कमल तुम्हारे
अब पूजे सब काम हमारे ॥ एक लालसा बड़ि मन माहीं
सगम अगम कहि जात सो नाहीं ॥ तुम हिं देत अति

187

मधुर धुनि गारी। लैलै नाम पुरुष अरु नारी॥ समय सुहा वन गारि विराजा। हसत राउ सुनि सहित समाजा॥ इहि विधि सबही भोजन कीन्हा। आदर सहित आचमन लीन्हा॥ सिर परसे प्रभु निज कर कंजा। सुरत उठाये करुणा पुंजा॥ दोहा॥ बोले कृपा निधान पुनि ६

रा॰
रा॰स

ही ॥ दोहा ॥ दानि शिरोमणि कृपानिधि नाथ कहौ सतभाव
चाहौं तुमहिं समान सुत प्रभु सनक वनउराव ॥ चौपई ॥
देखि प्रीति सुनि वचन अमोले । एवमस्तु करुणा निधि वोले ॥ आप सरि सखो जौं कहँ जाई । न्टप तव तनय होव मैं आई ॥ शत रूप हिं विलोकि कर जोरे । देवि मांगु वरजो रुचि

188

सगम गुसांई। अगम लाग मोहि निज कृपि नांई॥ यथा द
रिद्र बिबुध तरु पाई। बहु संपति मांगत सकुचाई॥ तास
प्रभाव न जानै सोई। तथा हृदय मम संशय होई॥ सो त
म जानहु अंतर जामी। पुर बहु मोर मनो रथ स्वामी॥
सकुच बिहाइ मांगु नृप मोही। मोरे नहि अदेव कछु तो

रा॰
उ॰स

नाथ तव अनुहरई। जो सुख पावहिं सो गति लहई॥ दोहा॥

सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति सोइ निज चरण सनेहु।

सोइ विवेक सोइ रहनि प्रभु मोहि कृपा करि देहु॥ चौपाई

सुनि मृदु गूढ़ रुचिर वचरचना। कृपा सिंधु बोले मृदु बच

ना॥ जो कछु रुचि तुमरे मन मांही। मैं सो दीन्ह सब संश

187

तोरे ॥ जो बर नाथ चतुर नृप मांगा । सोइ कृपाल मोहि
अति प्रिय लागा ॥ प्रभु परंतु सुठि होति ढिठाई । यदपि
भक्ति हित तुमहि सुहाई ॥ तुम ब्रह्मादि जनक जगस्वा
मी । ब्रह्म सकल उर अंतर जामी ॥ अस समुझत मन सं
शय होई । कहा जो प्रभु प्रमाण पुनि सोई ॥ जे निज भक्त

रा॰ रा॰स॰

अधीना॥ अस वर मांगि चरण गहि रहेऊ। एवमस्तु करुणानिधि कहेऊ॥ अब तुम मम अनु शासन मानी। बसहु जाइ सुर पति रजधानी॥ सो॰॥ तहं करि भोग विसाल तात गये कछु काल पुनि। होइहहु अवधभुआल तब मैं होवब सुत॥ चौपई॥ इच्छा मय नर भे

190

१९०

घनांहीं ॥ मति विवेक अलौ किक तोरे । कवउन मिति

हि अनुग्रह मोरे ॥ बंदि चरण मन कहेउ बहोरी । अब

र एक विनती प्रभु मोरी ॥ ज्ञान विषय क नव पद रति

होऊ । मोहि वर मूढ़ कहै किन कोऊ ॥ मणि विनु फ

णि जिमिजल विन मीना । मम जीवनति मित्र महिं

रा
रा.स.

१९

सत्य प्रण सत्य हमारा ॥ पुनि पुनि अस कहि कृपानि
धाना। अंतर्धान भये भगवाना ॥ दंपति उरधरि भक्ति कृ
पाला। तेहि आश्रम निवसे कछु काला ॥ समय पाइ
तन तजि अनयासा। जाइ कीन्ह अमरावति बासा ॥ दो
हा॥ यह इति हास पुनीत अति उमहि कहेउ वृषकेतु।

ष संवारे। होइहौं प्रगट निकेत तुम्हारे॥ अंशन सहित देह धरि ताता। करिहौं चरित भक्त सुखदाता॥ जे सुनि सादर नर बड़भागी। भवतरिहहिं ममता मदत्यागी॥ आदि शक्ति जेहि जग उपजाया। सोउ अवतरहि मोर यह माया॥ पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा। स

रा.
रा.स

192

धाम महा रण धीरा॥ राज धनी जेठ सुत आंही। नाम प्र
ताप भानु अस ताही॥ अपर सुतहिं अरि मर्दन नामा।
भुज बल अतुल अचल संग्रामा॥ भाइहि भाइहि परम
सभीती। सकल दोष छल वर्जित प्रीती॥ जेठे सुत हिं
राज नृप दीन्हा। हरि हित आपु गवन वन कीन्हा॥

16

२५८

भरद्वाज सुनु अपर पुनि रामजन्म कर हेतु ॥ चौपई ॥ सु
नु मुनि कथा पुनीत पुरानी । जो गिरिजा प्रति शंभु बखा
नी ॥ विस्वविदित इक कैकय देसू । सत्यकेतु तहं बसै
नरेसू ॥ धर्म धुरंधर नीति निधाना । तेज प्रताप शील
बल वाना ॥ तेहि के भये युगल सुत बीरा । सब गुण

रा॰ स॰ उरवनमालकाछिनीकाछेकटिकिंकनिछविगोरी। वेनी

२०७

207

सुभगानितेविनीडोलतमंदगामिनीनारी। सूथनिजेयनि

वोयनाएवंथनिरछनिपरछविन्यारी। नवनिरंगजाव

ककीशोभादेषपीयामनमांही। सूरदासपियानजुत्रिभंग

ह्वैजुवतिनमनाहिरिकांही॥ अथहास्यरसः। बैठतिहै

तिनमें हटकै जिनकी तुमसों मति प्रेम पगीहै। जान

ग्रंथप्रकाशसंयोगः। शृंगाररस। नाल । केशवप्र
कासमे हरि राधिका आसन एक लसैं रसभीने। आने
दसौंत्रियाआननकीउनिदेषतदर्पणत्यौंहृगदीने।
बालकेलालमेंबालविलोकतहीभरलालनिलोचनली
ने। श्यामनपायसुवासनसीयज्ञताशनमेंमानोंआन
कीने॥ सूरसागरे। श्यामतनुराजतपीतपिछौरी।

रा॰स॰
२०८

२०४

मेरो जदुराई । येरी हृय ठेटही राख्यो आपही गैये उहाई। ब्रजति ग्वाली यशोदा कों सभनी के हैं जदो राई । सूर पुणाम सुत विरह यशोदा रोवति सुध विसराई ॥ सवैया हृदते ईंडभि रमावतभाट न गावत छाडी विप्रन मंगल मंत्र पढें अरु देषें न बार वधु ढिगढोडी । केशव मातके गातके गात उतारत आरति आरति मानहीं बाडी ॥८॥

तिहीं नलराज दमैंतिकी हूतिकथा रसरंग रंगीही । एजे

गी साथ सभे सखिकी बडभागकी केशव जोत जगीहै ।

भेदकीबात सुनेतें कछू बढ़ मासकतें म्रम कान लगीहै

ग्रथकरुणारस यथाशोकः । प्यारे कुमर उन्होंई म

हरी पुकारति । मोबिन यरयो है तिहारे कारन कहां अ

बेर लगाई । अति कोमल सुबतिहारे लायक जें बड़।

रा॰म॰
२॰५

न्योहै ॥ अथरुद्रयमः। छपै। करिअदित्य अद्दिष्टनष्टज

मकरौं अष्टवस्। रुद्रनवोरि समुद्र करौं गंधर्व सर्वप

सु। बलित अवेर कुवेर बलिहिं गहि देऊं इंद अब।

विद्या धरन अविद्य करौं बिन सिद्ध सिद्ध सब। लैक

रौं अदति की दासिदिति अनिल अनल मिलि जाहि

जब सुन सूरज सूरज उअतहीं करौं असर संसारसब

२०

© Dharmarth Trust. Digitized By eGangotri

अथरूद्रास: । मीडमारयोकलङ्क वियोग मारयो वोविके

मरो रमारयो अभिमान मारयो भयमान्यों है । सभकोस्त ।

हाग अनुरागलूटलीन्होदीनोनाथिकाक्रुअविकङ्कसमस्त

त्व मान्योहै । कपट कपट उारयो निपटके ौरनिसो ।

मेटिपैहचानमन मैहूंपहिचान्योहै । जीत्योरनिरण म

थ्योमनमथहूंको मन केसो रायकोनह कङ्करोसडर आ

रा॰स॰
२२॰

२१०

कनि मारतहै नंदके कुमार कवी मारि हो ॥ अथम-
यानकरसः। भूयमंडिल मंडित कै घन घोर उठी।
दिवि मंडलमंडिगाठी। घर रानि घटा घट वात के से
घट घोष घटे हू घटीनघटी। दस हू दिस केसव दा
मनि देषि लगी पाय कामनि कंठ नटी। जनुपार
थ पाय पुरंदर के वन पावक की लपटैं कपटी ॥

२८

अथवीररसः। अघ जैसैं उधारि हौ कि बक जैसे विदा
र हौजू बछा सुर कौं मारिके सो केशि जू पछारहौ।
हरि हौ कि प्राण नाथ पूतना के प्राणनि जू वनतैं की
वनमाली कारी जू निकारिहौ। करियो विमद जन
वाहन जू जन शाम कांऊ जू सौंन हारे हरि याहि
सों केजु हारिहौ वेहीकाम काम वली ब्रजकी कुमारि

रा. स.
२११

२११

ही नेरी कौन जातहै ॥ ॥ अथअदभतरस: । सिगरे

नर नायक असुर बिना इकरछपती हियहारिगये ।

काहून उठायो अरुन चढायो टरो नटारो भीतभये ।

इन राज कुमारन अति सुकुमारन लै आयेहोपैजक

रे । बत भंग हमारो भयो नलारो रिषिनपतेजन

जानपरि ॥ ॥ अथअदभतरस: । अवकै राष लेहु

२०५

पृथ्वीभस्मरसः। माताहीको मास मोही लागतहै मी
ठे मधु पीवत पिताको लहूनेकुनाघिनाहैं। भैयन
के कंठन को काटन नकसकटि तेरो हियो कैसोहै यो
कहति सिहातहै। जव जव होती भेट मेरी भटू तब
तब ऐसी मोहै दिन उठिघातन घिनातहै। घेतनी।
पिसाचनी निसाचरी की जाईहैं तू केसोराय कैसो क

रा॰स॰
२१२

212

देइगो जीवन वृत्ति वहै प्रभु है सबरे जग को नितदैये । आ
वत ज्यों अन उद्दमतें सुष त्यों दुष पूरब के क्रमपैये । राज
उ रंक खराज करौ अब काहे को केसव काहू डरैये । मारन
हार उबारन हार सतो सबके सिर ऊपर हैये ॥ ॥ इति
नवरसंख्या [illegible] यासमाप्तः ॥ ॥

206

गोपाल। दसहूं दिसा उमहदावनल उपजी हैं इहिकाल।

पटकतबांसकांस त्रण चटकत लटकत ताल तमाल।

धूमधुंद बाढीघर अंबर चमकत उलमुकजाल। हिरनव

राह मोरचातक पिक जरत जीवबेहाल। जिन डरपो अब

आंषन मूंदौ हसि बोले नंद लाल। सूर अगन जब वद

न समानी अभय किये ब्रज बाल॥ ॥ अथ पंगतिरमः।

रा॰म॰
रामा॰

सि एक मोरी ॥ सब सन प्रिय मोहि प्राण कि नाई।
राम देत नहि बनै गोसाई। कह निशाचर अतिघो
र कठोरा। कह सुंदर सुन परम किशोरा ॥ सुनि
नृप गिरा प्रेमरस सानी ॥ हृदय हरष माना अ
ति ज्ञानी ॥ जब वसिष्ठ बहु विधि समझावा।
नृप संदेह नाश कहं पावा ॥ अति आदर दो

२६१

269

अथ राग मधुरामायणपरिछेदमाहताल। ॥

चौपाई॥ सुनि राजा अति अप्रिय बानी॥ हृदय

कंप मुख दुति कुमिलानी॥ चौथे पन पायेउं सु

न चारी। बिप्र बचन नहि कहेहु बिचारी। मोराजु

भूमि धेनु धन कोशा॥ सर्वस देउं आज सहरोशा। दे

ह प्राणते प्रिय कछु नाही। सोउ मुनि देउं निमि

गे
ए.स

सिंधु मति धीर अखिल विस्व कारण करण ॥ चौप
ई ॥ अरुण नयन उर बाहु विशाला । नील जल जत
न श्याम तमाला ॥ कटि पट पीत कसे वर भाथा । रु
चिर चाप शाय कटु हु हाथा ॥ श्याम गौर सुंदर दोउ
भाई । विश्वा मित्र महा निधि पाई ॥ प्रभ ब्रह्मण्य देव

२८

270

उ तनय बुलाये । हृदय लाइ बहु भाँति सिखाये ॥ मेरे
प्राण नाथ सुत दोऊ । तुम मुनि पिता आन नहिं कोऊ ।
दोहा ॥ सौंपे भूपति ऋषिहि सुत बहु विधि देइ असी
स ॥ जननी भवन गये प्रभु चले नाइ पद सीस ॥ पुरु
ष सिंह दोउ बीर हरषि चले मुनि भय हरण । कृपा

रा.
रा·स

पिके प्रभु निज आश्रम आनि । कंद मूल फल भोज
ने दिये भक्त हित जानि ॥ चौपई ॥ प्रात कहा मुनि
सन रघुराई । निर्भय यज्ञ करहु तुम जाई ॥ होम क
रन लागे मुनि झारी । आपु रहे मख की रखवारी ॥
सुनि मारीच निशाचर क्रोही । लै सहाय धावा मुनि

मैं जाना । मोहि नित पिता तजे भगवाना ॥ चले जात
मुनि दीन्ह दिखाई । हनि ताडिका क्रोध करि धाई ॥
एकहि बाण हरि लीन्हा । दीन जानि तेहि निज पद
दीन्हा ॥ जाते लागत तृषा पियासा । अतुलित ब
लतन तेज प्रकासा ॥ दोहा ॥ आयुध सकल सम

रा
रा.स

रहाँगा॥ भक्ति हेतु बहु कथा पुराणा। कहेहुं बिप्र स
विधि प्रभु जाना॥ तब मुनि सादर कहा बुझाई। चरि
त एक देखिय प्रभु जाई॥ धनुष यज्ञ सुनि रघुकुल
नाथा। हरषि चले मुनि बरके साथा॥ आश्रम एक
दीख मग माँही। खग मृग जीव जंतु तहं नाँही॥

272

२८२

४

द्रोही ॥ बिनु फर बाण राम तेहि मारा । सत योजन
गा सागर पारा ॥ पावक सर सुबाहु पुनि मारा ॥
अनुज निशाचर कटक संघारा । मारि असुर द्विज
निर्भय कारी । अस्तुति करहिं देव मुनि झारी ॥ त
हं पुनि कछुक दिवस रघुराया । रहे कीन्ह विप्रन प

रां

रा.म.

न सुख दायक सन्मुख होइकर जोरि रही ॥ अति प्रेम
अधीरा पुलक शरीरा मुख नहि आवै वचन कही ॥
अतिशय बड़ भागी चरण लागी युगल नयन जल
धार बही । धीरज मन कीन्हा प्रभु कहं चीन्हा रघुप
ति कृपा भक्ति पाई ॥ अति निर्मल वाणी अस्तुति १

२७३

पूछा मुनिहि शिला प्रभु देषी। सकल कथा ऋषि के
ही विशेषी॥ दोहा॥ गौतम नारी श्राप बस उपल दे
ह धरि धीर। चरण कमल रज चाहती कृपा करहु
रघु वीर॥ छंदः॥ परसत पद पावन शोकनसाव
न प्रगट भई तप पुञ्ज सही। देखत रघु नायक ज

रां
रा॰स

शंकर जाना ॥ विनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथन ब
र मांगौं आना ॥ पदकमल परागा रस अनुरागा मम
मन मधुप करै पाना ॥ जेहि पद सुर सरिता परम पु
नीता प्रगट भई शिव सीस धरी ॥ सोइ पद पंकज जेहि
पूजत अज मम शिर धरेउ कृपाल हरी ॥ इहि भांति १

274

ठौनी ज्ञान गम्य जय रघु राई ॥ मैं नारि अपावन प्रभु
जग पावन रावण रिपु जन सुख दाई ॥ राजि वलोच
न भव भय मोचन पाहि पाहि शरनहि आई ॥ मुनि
श्राप जो दीन्हा अति भलकीन्हा परम अनुग्रह मैं मा
ना ॥ देखिउं भरि लोचन हरि भव मोचन यहै लाभ

रा॰
रा॰स

पावनि गंगा ॥ अनुज सहित प्रभु कीन्ह प्रणामा । बहु
प्रकार सुख पायउ रामा ॥ गाधिसुवन सब कथा सु
नाई । जेहि प्रकार सुर सरि महि आई ॥ तबप्रभु ऋषि
न समेत अन्हाये । विविध दान महि देवन पाये ॥
हर्षिचले मुनि हृन्द सहाया । वेगिविदेह नगर निय

275

२८४

सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरण परी ॥ जो

अति मन भावा सो बर पावा गै पति लोक अनंद भरी

दोहा ॥ अस प्रभु दीन बंधु हरि कारण रहित कृपाल

तुलसि दास सठ ताहि भज छांडि कपट जंजाल ॥

चौपाई ॥ चले राम लछमण मुनि संगा । गये जहां जग

रा॰ सं॰

ना॥ दोहा॥ सुमन वाटिका बागवन विपुल विहंग नि
वास। फूलत फलत सुफलवित सोहत पुर चहुं पास
चौपई॥ बनै नवरन तन गरनि काई। जहां जाइ मन
तहां लुभाई॥ चारु बजार विचित्र अटारी। मणि मय
विधि जनु स्वकर संवारी॥ धनिक बणिक बरधन

२७६

२६५

राया॥ उपवनता राम जब देषी। हर्षे अनुज समेत
विशेषी॥ बापी कूप सरित सर नाना। सलिल सु
धा सम मणिसो पाना॥ गुंजत मंजु मत्तरस भृंगा
कूजत कल बहु बरण विहंगा॥ बरण बरण
विकसे जलजाता। त्रिविध समीर सदा सुखदा

उ॰ कहिं विबुध बिलोकि बिलासू ॥ होतचकित चित को
रा॰स॰ ट बिलोकी। सकल भुवन शोभा जनु रोकी ॥ दोहा ॥
धवल धाम मणि पुरट पट सुघटित नाना भांति ॥
सिय निवास सुंदर सदन शोभा किमि कहि जाति ॥
चौपई ॥ सुभग द्वार सब कुलि शक पाटा। भूप भीरन

277

दस माना। बैठे सकल वस्तु लै नाना॥ चौहट सुंदर
गली सुहाई। सन्तत रहहिं सुगंध सिंचाई॥ मंगल
मय मंदिर सब केरे। चित्रित जनु रति नाथ चितेरे॥
पुर नर नारि सुभग सुचि सन्ता। धर्म शील ज्ञानी
गुण वंता॥ अति अनूप जहं जनक निवासू। विथ

रा॰
रा॰स

कौशिक कहेउ मोर मन माना। इहांरहिय रघुवीर सुजा

ना॥ भलेहि नाथ कहि कृपा निकेता। उतरे तहं मुनि

वृंद समेता॥ विस्वामित्र महा मुनि आये। समाचार

मिथिला पति पाये॥ दोहा॥ संगसचिव वहुविधि भूरि भ

ट भूसुर वर गुरु ज्ञाति॥ चले मिलन मुनि नाय कहि

278

२८८

ट मागध भाटा॥ बनी विशाल बाजि गज शाला। हय
गय रथ संकुल सबकाला॥ सूर सचिव सेनप बहुते
रे। नृप गृह सरिस सदन सब केरे॥ पुर वाहिर सर स
रित समीपा। उतरे जहं तहं विपुल महीपा॥ देखि
अनूप एक अंबराई। सब सुपास सब भांति सुहाई॥

सं०
रा०स

वाई ॥ श्याम गौर मृदु वय सकिशोरा । लोचन सुखद
विश्व चित चोरा ॥ उठे सकल जब रघुपति आये । विश्वा
मित्र निकट बैठाये ॥ भये सब सुखी देखि दोउ भ्राता
वारि विलोचन पुलकित गाता ॥ मूरति मधुर मनो
हर देखी । भयेउ बिदेह बिदेह विशेषी ॥ दोहा ॥ प्रेम

मुदित राउ इहि भांति ॥ चौपई ॥ कीन्ह प्रणाम चरणि
धर माथा। दीन्ह असीस मुदित मुनि नाथा ॥ विप्र वृ
न्द सब सादर बंदे। जानि भाग्य बड़ राउ अनंदे ॥ कु
शल प्रश्न कहि वारहि बारा। विश्वामित्र नृपहि बैठा
रा ॥ तेहि अव सर आये दोउ भाई। गये रहे देखन फुल

रा॰
रा॰स

कित होत जिमि चंद चकोरा ॥ तातें प्रभु पूछौं सदभा
ऊ। कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ ॥ इनहि बिलोक
त अनुरागा। बरबस ब्रह्म सुखहि मन त्यागा ॥ क
हं मुनि बिहंसि कहेउ नृपनीका। बचन तुम्हार न
होय अलीका ॥ येप्रिय सबहि जहां लगि प्राणी ॥

मगन जाति न्रप करि विवेक धरि धीर । बोलेउ मुनि पद
नाइ सिर गद्गद गिरा गभीर ॥ चौपाई ॥ कहहु नाथ सुं
दर दोउ बालक मुनिकुल तिलक कि न्रप कुल पा
लक ॥ ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा । उभय भेष ध
रि सोइ कि आवा ॥ सहज विराग रूप मन मोरा ॥ थ

बां
रा·म

सुगम प्रभाऊ ॥ सुंदर श्याम गौर दोउ भ्राता । आनंद हूके
आनंद दाता ॥ इनकी प्रीति परस्पर पावनि । कहिन
जाय मन भाव सुहावनि ॥ सुनहु नाथ कहु मुदित
विदेहू । ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू ॥ पुनि पुनि प्रभु
हि चितय नर नाहू । पुलक गात उर अधिक उछाहू ॥

मनमसु काहिं राम सुनि बाणी ॥ रघुकुल मणि दश

रथके जाये। ममहित लागिन रेश पठाये। दोहा ॥

राम लषन दोउ बंधु वर रूप शील बल धाम। मख

राखेउ सबसाखिजग जीति असुर संग्राम ॥ चौपई

मुनितव चरण देखि कहराऊ। कहिन सकौं निज

रा° दिवस रहा भरि याम ॥ चौपई ॥ लक्षण हृदय लालसा

रा°म विशेषी । जाइ जनक पुर आइय देषी । प्रभुभय बहुरि

मुनिहि सकु चाँही । प्रगटन कहहिं मनहिं मुसुका

हीं ॥ राम अनुज मनकी गति जानी । भक्त वछल ता

हि यहुल सानी ॥ परम विनीत सकुचि मुसुकाई । बोले

२८२

282

मुनिहि प्रशंसि नाइ पद सीसा। चलेहि वाइ नगर अवनीसा॥ सुंदर सदन सुखद सब काला। तहां वास लै दीन्ह भुआला॥ करि पूजा सब विधि सेवकाई। गयउ राउ गृह विदा कराई॥ दोहा॥ ऋषय संग रघुवंश मणि करि भोजन विश्राम। वैठे प्रभु भ्राता सहित

रा॰ सं

खदाता ॥ दोहा ॥ जाइ देखिआ वह्न नगर सुख निधा
न दोउ भाइ। करहु सुफल सबके नयन सुंदर वदन
दिखाइ ॥ चौपई ॥ मुनिपद कमल बंदि दोउ भ्राता ।
चले लोक लोचन सुखदाता ॥ बालक वृन्द देखि अ
ति शोभा। लगे संग लोचन मन लोभा ॥ पीत बस

२८३

283

गुरु अनु शासन पाई ॥ नाथ लखन पुर देखन चह
हीं। प्रभु सको चउर प्रगटन कहहीं ॥ जौंरा वर आय
सुमैं पाऊं। नगर देखाइ तुरत लै आऊं ॥ सुनि मुनी
सु कहु बचन सप्रीती। कस न राम राखहु तुमनीती
धर्म सेतु पालक तुम ताता। प्रेम विवस सेवक सु

रा॰ छवि देंही। चितवन चितहिं चोरि जनु लेहीं॥ चितव
रा॰स नि चारु भ्रकुटि बर बांकी। तिलक रेख शोभा जनु
चाकी॥ दोहा॥ रुचिर चौतनी सुभग शिर मेचकके
चितकेश। नख शिख संदर बंधु दोउ शोभा सकल
सुदेश॥ चौपई॥ देखन नगर भूप सुत आये। समा

284 २८५

न परि कर कटि भाथा। चारु चाप शर सोहत हाथा॥
तनु अनु हरन सुचंदन खोरी। श्यामल गौर मनो हर
जोरी॥ केहरि कंधर बाहु विशाला। उर अति रुचिर
नाग मणि माला॥ सुभग श्रवण सरसी रुह लोचन
बदन मयंक तापत्रय मोचन॥ कानन्ह कनक फूल

रां विजीती ॥ सुरनर असुर नाग मुनि माहीं । शोभा
रा.स स कहुं सुनि यतनाहीं ॥ बिसचारि भुज बिधि मुखचा
री । बिकट भेष मुख पंच पुरारी ॥ अपर देव असको
जगमाहीं । इहि छबि सखि पटतरिये जाही ॥ दोहा ।
वयकि शोर सुख मास दन श्याम गौर सुख धाम

285 २८५

चार पुर वासिन पाये ॥ धाय धाम काम सब त्यागे । मन
हु रंक निधि लूटन लागे ॥ निरखि सहज सुंदर दोउ
भाई । होहिं सुखी लोचन फलपाई ॥ जुवती भवन झ
रोख नि लागी । निरखहिं राम रूप अनुरागी ॥ कह
हिं परस्पर वचन सप्रीती । सखि इन कोटिकाम छ

सं
रा॰म

खकेर खबारे जिन रण अजय निशाचर मारे ॥ श्याम
गात कल कंज विलोचन । जो मारीच सुभुज मद मोच
न ॥ कौशल्या सुत सो सुख खानी । राम नाम धनु शा
यक पानी ॥ गौर किशोर भेष बर काछें । कर शर
चाप राम के पाछें ॥ लक्ष्मण नाम राम लघु भ्राता ।

286

२८६०=

अंग अंग परि वारियै कोटि कोटि शत काम ॥ चौप

ई ॥ कहहु सखी अस को तन धारी । जो न मोह यह

रूप निहारी ॥ कोउ स प्रेम बोली मृदु वानी । जो मैं सु

ना सो सुनहु सयानी ॥ ये दोउ नृप दशरथके ढो

टा । बालमराल निके कलजोटा ॥ मुनि कौशिक म

सं
रा॰स

हू ॥ कोउ कह इन्ह भूपति पहिचाने । मुनि समेत सादर सन माने ॥ सखि परंतु पणराउ न तजई । विधिबसहठि अविवेकहि भजई ॥ कोउ कह जौं भल अहै विधाता । सब कह सुनिय उचित फल दाता ॥ तौ जानकिहि मिलिहि बर एहू । नाहिन आली यह

२४

सन सखिला स सुमित्रा माता ॥ दोहा ॥ विप्रकाज करि
बंधु दोउ मग मुनि बधू उधारि । आये देखन चाप म
ख सुनि हरषी सबनारि ॥ चौपई ॥ देखि राम छबि को
उ इक कहई । योग्य जानकी यह बर अहई ॥ जो सखि
इनहिं देखि नरनाहू । पणपरि हरि हठि करै विवा

रा॰ रा॰म

रिविनीका। यह विवाह अति हित सबहीका॥ कोउ क

ह शंकर चाप कठोरा। ये श्यामल मृदु गात किशोरा

सब अस मंजस अहै सयानी। यह सुनि अपर कहै

मृदु वानी॥ सखिइन कहंकोउ कोउ अस कहहीं। ब

ड़ प्रभाव देखत लघु अहहीं॥ परसिजासु पद पंक

288

संदेहू ॥ जौं विधि बस वनै संयोगू । तौ कृत कृत्य हो इ

सब लोगू ॥ सखि हमरे अति आरति ताते । कबहुं क

ये आवहिं इहि नाते ॥ दोहा ॥ नाहित हम कहं सुनहु

सखि इन्ह कर दरशन दूरि । यह संघट तब होइ जब

पुण्य पुरा कृत भूरि ॥ चौपई ॥ बोली अपर कहेउ स

रा॰ सुमन सुमाविवि सुलोचनि वृन्द। जोहिं जहां जहं वं
रा॰स धु दोउ तहं तहं परमानंद॥ चौपई॥ पुर पुर वदि
विगे दोउ भाई। जहां धनुष मख भूमि बनाई॥ अति
विस्तार चारु गच ढारी। विमल वेदि कारु चिर सं
वारी॥ चहुं दिशि कंचन मंच विशाला। रचे जहां वै

789

जधूरी । तरी अहल्या कृत अघभूरी ॥ सोकिरहैं विनु
शिव धनुतोरे यह प्रतीति परि हरि यनमोरे ॥ जेहि
बिरं चि रचि सिये संवारी । तेइ श्यामल वररचेउ वि
चारी ॥ तासु वचन सुनि सब हरषानी । ऐसइ होउ
कहहिं मृदु बानी ॥ दोहा ॥ हिय हरषहिं बरषहिं

रां०
रा०स

री ॥ घर बालक कहहि कहि म्रडु बचना । सादर प्रभु
हि देखा वहिं रचना ॥ दोहा ॥ सब शिषु इहिमिसु प्रे
म बस परसि मनो हरगात । तन पुल कहिं अति ह
र्ष हिय देखि देखि दोउ भ्रात ॥ चौपई ॥ शिषु सब रा
म प्रेम बस जाने । प्रीति समेत निके तवखाने ॥ निज

२९०

२५०

ठहिं महि पाला ॥ तेहि पाछें समी पचहूं पासा । अपर

पंच मंडली बिलासा ॥ कछु कछेंच सब भांति सुहाई

बैठहि नगर लोग सब आई ॥ तिनके निकट बिशा

ल सुहाये । धवल धाम बहु बरण बनाये ॥ जहं बै

ठी देखहिं पुर नारी । यथा योग्य निज कुल अनुहा

रा॰ कदेखि चले गुरु पांही। जानि विलंब त्रास मन मांही
रा॰स जासु त्रास डरकहुं डरहोई। भजन प्रभाव देखावत सो
ई॥ कहि बातैं मृदु मधुर सुहाई। किये विदा बालक
बरि आई॥ दोहा॥ सभय सप्रेम विनीत अति सकुच
सहित दोउ भाइ। गुरु पद पंकज नाइ सिर बैठे आय

29 २९८

निज रुचि सबलेहिं बुलाई। सहित सनेह जाहिं दोउ
भाई॥ राम देखावहिं अनुजहि रचना। कहि मृदु म
धुर मनोहर वचना॥ लव निमेष महं भुवन निका
या। रचै जासु अनुशासन माया॥ भक्त हेतु सोइ दीन
दयाला। चितवत चकित धनुष मख शाला॥ कौतु

रा॰
रा॰स॰

गविरागी ॥ नेदेउ बंधु प्रेम जनु जीते। गुरुपद कमल पलोटत प्रीते ॥ बार बार मुनि आज्ञा दीन्ही। रघुवर जाइ शयन तव कीन्ही ॥ चापत चरण लक्ष्मण उरला ये। सभय सप्रेम परम सुखपाये ॥ पुनि पुनि प्रभु कह सो बहु ताता। पौढे धरिउर पदजल जाता ॥

२९२

खपाइ ॥ चौपई ॥ निशिप्रवेश मुनि आयसु दीन्हा ।
सबही संध्या वंदन कीन्हा ॥ कहत कथा इति हास
पुराणी । रुचिर रजनी युग यामसि रानी ॥ मुनिवर
शयन कीन्ह तब जाई । लगे चरण चापन दोउ भाई ॥
जिनके चरण सरोरुह लागी । करत विविध जपयो

रा.
रा.स

देखेउ जाई। जहं बसंत रितु रही लुभाई॥ लागे विट
प मनोहर नाना। बरण बरण बर बेलि विताना॥
नव पल्लव फल सुमनसु हाये। निज संपति सुरत
रु हिल जाये॥ चातक कोकिल कीर चकोरा। कूज
त विहंग नचत कल मोरा॥ मध्य बाग सरसो हस

293

२९३

दोहा ॥ उठे लषण निशि विगत सुनि अरुण शिखा
धुनि कान। गुरुते पहिले जगत पति जागे रामसु
जान ॥ चौपाई ॥ सकल शौच करि जाइ नहाये। नि
त्य निवाहि गुरुहि सिरनाये ॥ समय जानि गुरुआय
सुपाई। लेन प्रसून चले दोउ भाई ॥ भूप बाग बर ६

रां
रा०स

ल फूल मुदितमन। तेहि अव सर सीता तहं आई॥ गिरिजा पूजन जननि पठाई॥ संगसखी सब सुभग सयानी। गावहिं गीत मनो हर बानी॥ सरसमीप गिरिजा गृह सोहा। बरणिनजाइ देखि मन मोहा॥ मज्जन करि सरसखी समेता। गई मुदित मन गौरि

29

२९४

ह्लावा। मणि सोपान विचित्र बनावा॥ विमल सलि
ल सरसिज बहु रंगा। जल खग कूंजत गुंजत भृंगा
दोहा॥ बाग तड़ाग विलोकि प्रभु हरषे बंधु समेत
परम रम्य आराम यह जो रामहि सुख देत॥ चौप
ई॥ चहुं दिशि चितै पूंछि मालीगन। लगे लेन द

रा॰ हर्ष कर सबहिं सब मृदुवचन ॥ चौपाई ॥ देखन बाग
बा॰का॰ कुंवर दोउ आये । वय किशोर सब भांति सुहाये ॥ श्या
मगौर किमि कहौं बखानी । गिरा अनय नयन बिनु
बानी ॥ सुनि हरषी सब सखी सयानी । सियहियअ
ति उतकंठा जानी ॥ एक कहइ नृप सुतते आली ॥

295

निकेता॥ पूजाकीन्ह अधिक अनुरागा। निज अनु रू
प सुभग बर मांगा॥ एक सखीसिय संग बिहाई।
गईरही देखन फुलवाई॥ तेइदोउ बंधु बिलोके उजाई
प्रेम बिवस सीता पहं आई॥ दोहा॥ तासु देशा देखी
सखिन। पुलक गात जल नयन। कहु कारण निज

रा॰ म॰

षरा तन न लखैन कोई ॥ दोहा ॥ सुमिरि सीय नारद वच

न उपजी प्रीत पुनीत ॥ चकित विलोकति सकल दि

शि जनु शिशु मृगी सभीत ॥ चौपई ॥ कंकण किंकि

ण नूपुर धुनि सुनि । कहत लषण सन राम हृदय

गुनि ॥ मानहु मदन दुंदुभी दीन्ही । मनसा विश्ववि

296

२९६

सुनेजे मुनि संग आए काली ॥ जिन निज रूप मोह
नीआरी । कीन्हेसु वस नगर नरनारी ॥ वरणत छवि
जहं तहं सबलोगू । सवशि देखियै देखन जोगू ॥ ना
सु बचन अति सियहि सुहाने । दरस लागि लोचन
अकुलाने ॥ चली अग्र करि प्रिय सखि साई । प्रीति

रां
रा॰स

बिरचि बिस्व कहुं प्रगट दिखाई ॥ सुंदरता कहुं सुंदर
करई । छबि गृह दीप सिखा जनु बरई ॥ सब उपमा
कबि रहे जुठारी । केहि पटतरिय बिदेह कुमारी ॥
दोहा ॥ सिय शोभा हिय बरणि प्रभु आपनि दशा बि
चारि । बोले सुचि मन अनुज सन बचन समय अनु

विजय करहु कीन्ही ॥ अस कहि फिरि चित पनेहि ओ

रा। सियमुख शशि भये नयन चकोरा ॥ भये विलो

चन चारु अचंचल। मनहु सकुचि निमि तजेउ दृगंच

ल ॥ देखि सीय शोभा सुख पावा। हृदय सराहत

वचनन आवा ॥ जनु विरंचि सब निज नि पुणाई ॥

रा॰स

ग सुन आना ॥ रघुवंसिन कर सहज सुभाऊ । मनकु पंथ पग धरैं न काऊ ॥ मोहि अति शय प्रतीति जिय केरी । जेहि सपनेहु परनारि न हेरी । जिन्ह के लह हिं न रिपु रण पीठी । नहि लावहिं परतिय मन डीठी ॥ मंगन लहहिं न जिन्ह के नाहीं । ते नर बर थो

२९८

हारि ॥ चौपाई ॥ तात जनक तनया यह सोई । धनुष
यग्य जेहि कारण होई ॥ पूजन गौरि सखीं लै आई
करति प्रकास फिरति फुल वाई ॥ जासु बिलोकि
अलौकिक शोभा । सहज पुनीत मोर मन छोभा ॥
सो सब कारण जान बिधाता । फरकहिं सुभग अंग

बं
रा॰म

ल श्रिनसे यनी ॥ लता ओट तब सखिन लखाये । स्या
मल गौर किशोर सुहाये ॥ देखि रूप लोचन ललचा
ने । हरषे जनु निज निधि पहिचाने ॥ थके नयन रघु
पति छबि देखी । पलकन हूं परिहरी निमेषी ॥ अधि
क सनेह देह भइ भोरी । शरद शशिहि जनु चितवच

299

रे जगमाही ॥दोहा॥ करतवत कही अनुज सन मन

सिय रूपल भान मुख सरोज मकरंद छवि करत म

धुप इव पान ॥चौपाई॥ चितवति चकित चहूं दिसि

सीता। कहंगये नृप किशोर मन जीता॥ जहं

विलोकि मृगसावक नयनी। जनुतहं बरष कम

रा० मा०

शोभासींव सुभग दोउ वीरा। नील पीत जल जात शरीरा॥ काक पक्ष शिर सोहत नीके। गुच्छे विच विच कुसुम कलीके॥ भाल तिलक श्रम विंदु सुहाये। श्रवण सुभग भूषण छवि छाये॥ विकट भृकुटि कच घूंघरवारे। नव सरोज लोचन रतनारे॥ चारु चिबुक नासि

30

३०

कोरी ॥ लोचन मग रामहिं उर आनी। दीन्हे पलक कपट सयानी ॥ जब सिय सखिन प्रेम बस जानी। कहि न सकहिं कछु मन सकुचानी ॥ दोहा ॥ लता भवन ते प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ। निकसे जनु युग विमल विधु जलद पटल विलगाइ ॥ चौ॰

रा॰ पट पीत धर सरव माशील निधान। देखि भानु कुल
रा॰स॰ भूषणहिं बिसरास खिन अपान॥ चौपई॥ धरि धीरज
इक सखी सयानी। सीतासन बोली गहि पानी॥ ब
हुरि गौरि कर ध्यान करेहू। भूपकि शोर देखि किनले
हू॥ सकुचि सीयत बनयन उघारे। सन्मुख दोउ रघुवं

301

३०१

का कपोला। हास विलास लेत जनुमोला॥ मुखछ

वि कहि न जाइ मोहि पाहीं। जो विलोकि बहु काम ल

जाहीं॥ उरमणि माल कंबु कल ग्रीवा। काम कलभ

कर भुज बल सींवा॥ सुमन समेत वाम कर दोना।

सांवर कुवर सखी सुठि लोना॥ दोहा॥ केहरि कटि

रा॰ विलंब मात भयमानी ॥ धरि बड़ धीर रामउरआनी
रा॰म॰ फिरि आपन प्रण पित बसजानी ॥ दोहा ॥ देखेन
मि सुमग विहंगनक फिरे बहोरिब होरि । निर
खि निरखि रघुवीर छवि वाढीप्रीतिन थोरि ॥

इति रामायण संपूर्णं समाप्तम्

शुभं भूयात् ॥

३०२

शा निहारे ॥ नख सिख देखि राम की शोभा । सुमिरि
पिता प्रण मन अति छोभा ॥ परबस सखिन लखी
जब सीता । भये गहरु सब कहहिं सभीता ॥ पुनि
आउब इहि बिरिया काली । असकहि मन बिहसी
इक आली ॥ गूढ़ गिरा सुनि सियसकुचानी । भये